नवाँ जतन

उपचारात्मक शिक्षण हेतु संदर्शिका

सेतु पाठ्यक्रम - 02

सत्र 2021-22

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,
छत्तीसगढ़, रायपुर

‘नवाँ जतन’

सत्र 2021-2022

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद छत्तीसगढ़, रायपुर

संरक्षक
राजेश सिंह राणा (आई.ए.एस.)

संचालक
एस.सी.ई.आर.टी.छत्तीसगढ़,रायपुर

मार्गदर्शन
डॉ. योगेश शिवहरे

अतिरिक्त संचालक
एस.सी.ई.आर.टी.छत्तीसगढ़, रायपुर

समन्वय
सुश्री नीलम अरोरा, श्रीमती विद्या डांगे, सुनील मिश्रा

संपादन
डॉ. विद्यावती चंद्राकर

संपादन सहयोग
द्रोण साहू, दीपेश पुरोहित

लेखन-समूह
तारकेश्वर देवांगन, द्रोण साहू, सूर्यकांत वाजपेयी, दीपेश पुरोहित, सत्येन्द्र कुमार बसंत, रीता मण्डल, सुजाता बहल, अशफाक़ उल्ला खान, नीलम चक्रवर्ती, कांति नागे, प्रवीण झा, सुनील मिश्रा

टंकण
सत्येन्द्र कुमार बसंत
इंद्र कुमार गंजीर

आमुख

कोविड-19 महामारी के इस दौर में जहाँ एक ओर पूरी मानव जाति अपनी जिंदगी के सबसे कठिन क्षण से गुजर रही थी, वहीं ऐसी विषम परिस्थिति में भी छत्तीसगढ़ के शिक्षकों ने 'पढ़ई तुंहर दुआर' के अलावा विभिन्न प्रकार के नवाचारी तरीकों जैसे- मुहल्ला क्लास, पढ़ई तुंहर दुआर, बुल्टू के बोल आदि जैसे ऑनलाइन या ऑफलाइन माध्यम से बच्चों को शिक्षा से जोड़े रखा।

इन तमाम प्रयासों के बावजूद महामारी के इस दौर में बच्चों का सीखना-सिखाना जिस तरह से नियमित कक्षाओं में चलता था, उस तरीके से नहीं चल पाया। इसका परिणाम यह हुआ कि हमारे नौनिहालों का शैक्षिक स्तर बहुत नीचे चला गया। परिषद् द्वारा किए गए बेसलाइन आकलन में भी यह बात साफ़ उभरकर आई है। अभी की स्थिति में बच्चे जिस कक्षा में हैं, उनकी दक्षता का स्तर उस कक्षा के अनुरूप नहीं है अथवा बहुत सी दक्षताओं में पीछे हैं।

चूँकि अब सभी स्कूल पुनः नियमित रूप से खुल चुके हैं तथा शत-प्रतिशत बच्चों को स्कूल बुलाया जा रहा है, तो हमारे पास यह एक अच्छा अवसर है कि हम निदानात्मक परीक्षण करके उपचारात्मक शिक्षण के माध्यम से कोरोनाकाल में शैक्षिक क्षति की यथासंभव भरपाई करें। इसी कड़ी में यह 'नवाँ जतन' प्रशिक्षण संदर्शिका आपके हाथ में है। संदर्शिका में हमने कुछ ऐसे तरीके सुझाए हैं, जिनके माध्यम से बच्चे के सीखने में हुई हानि की तेज़ गति से भरपाई की जा सके और हमारे शिक्षक कक्षा शिक्षण के दौरान ही उपचारात्मक शिक्षण कर सकें। 'नवाँ जतन' के विकास में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन का विशेष सहयोग रहा है।

इसके अलावा आपकी सुविधा के लिए हमारे परिषद् के विषय-विशेषज्ञों द्वारा विषयवार कुछ सुझावात्मक गतिविधियाँ भी सुझाई गई हैं, ताकि आप इसके आधार पर कक्षा में काम कर सकें।

हमें आशा ही नहीं वरन पूर्ण विश्वास है कि आप इस संदर्शिका का भरपूर उपयोग कर हमारे नौनिहाल की शैक्षिक स्तर में आई गिरावट को कम करके उन्हें अतिशीघ्र उनके कक्षा के स्तर तक ले आएँगे।

इस संबंध में आपके सभी सुझावों की हमें उत्सुकता से प्रतीक्षा रहेगी।

राजेश सिंह राणा (आई.ए.एस.)
संचालक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
छत्तीसगढ़, रायपुर

अनुक्रमणिका

क्रमांक	विवरण	पृष्ठ
1	कोविड-19 का काल और बच्चों के शैक्षिक स्तर में गिरावट	1-2
2	बुनियादी भाषा साक्षरता और संख्या ज्ञान (FLN)प्राप्त न कर सकने वाले बच्चों का चिह्नांकन	3-5
3	मूल्यांकन, निदानात्मक परीक्षण एवं उपचारात्मक शिक्षण	6-16
4	सामान्य शिक्षण के दौरान ही उपचारात्मक शिक्षण की प्रक्रिया 17-29	
5	चुनौती कैसे दें ?	30-34
6	उपचारात्मक शिक्षण और मॉनिटरिंग	35-39
7	प्रशिक्षण की कार्य योजना	40-41
परिशिष्ट	1. सीखने के प्रतिफल का प्राथमिकीकरण एवं उपचारात्मक शिक्षण के कारगर उपाय	42-124
	2. अवधारणा, समझ और कौशल क्या हैं? ये कैसे विकसित होते हैं?	125-133
	3. ऊर्जा का संरक्षण	134-135
	4. जल संरक्षण	136
	5. पर्यावरण संरक्षण एवं सतत ग्रामीण विकास	137

अध्याय-1
कोविड-19 का काल और बच्चों के शैक्षिक स्तर में गिरावट

पूरा विश्व कोरोना महामारी से प्रभावित हुआ है। शिक्षा व्यवस्था भी इससे अछूती नहीं है। कोरोना संक्रमण के भय से स्कूल बंद थे, जिसके चलते नियमित रूप से कक्षाओं का संचालन नहीं हो पाया। हम सभी जानते हैं कि कक्षा-कक्षीय शिक्षण प्रक्रिया का कोई विकल्प नहीं है। इसी वजह से शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षकों तथा शासन द्वारा किए गए तमाम प्रयासों से भी संतोषजनक परिणाम प्राप्त नहीं हो सके।

कोरोना काल में बच्चों के सीखने में नुकसान मुख्य रूप से दो तरह से हुए हैं:-

- बच्चे जो 2020-21 अकादमिक वर्ष में अपनी कक्षा में सीख सकते थे वह भी नहीं सीख पाएं।
- मार्च 2020 तक जिन बच्चों ने जो कुछ भी सीखा था, उसमें से बहुत कुछ बातें वे भूल गए हैं।

कोरोना काल में किए गए विभिन्न प्रयास

- शासन की योजना 'पढ़ई तुंहर दुआर' द्वारा बच्चों को ऑनलाइन शिक्षा देना cgschool.in में सभी कक्षाओं और विषयों की अध्ययन सामग्री उपलब्ध करवाना।
- 'बुल्टू के बोल' के अंतर्गत शिक्षकों द्वारा हाट बाजार एवं गांव में जाकर ब्लूटूथ के माध्यम से स्पीकर से बच्चों को पढ़ाया गया।
- 'मोबाइल वाले गुरुजी' नवाचार के अंतर्गत शिक्षक साथियों द्वारा गांव में जाकर बच्चों के साथ छोटे समूहों में मोबाइल के माध्यम से पढ़ाया गया।
- मोहल्ला क्लास के माध्यम से बच्चों को उनके परिवेश में जाकर शिक्षकों द्वारा सिखाया गया।
- 'छतरी वाले गुरुजी' व 'सिनेमा वाले गुरुजी' जैसे अनेक शिक्षकों द्वारा नवाचारी तरीके से बच्चों को सुरक्षित रूप से घर पर ही सीखने के अवसर उपलब्ध कराए गए।
- 'अंगना म शिक्षा' कार्यक्रम के माध्यम से छोटे-छोटे बच्चों की माताओं को घर पर ही उपलब्ध घरेलू संसाधनों की मदद से गतिविधियाँ करवाते हुए सिखाया गया।
- 'आमा राईट' प्रोजेक्ट के माध्यम से बच्चों को व्यस्त कर उनके समय का सदुपयोग करते हुए आकलन कराया गया।
- 'प्रिंट रिच' वातावरण के माध्यम से घरों स्कूलों व स्थानीय दीवारों पर अध्ययन सामग्री लिखकर बच्चों को सीखने हेतु प्रेरित किया गया कोरोना काल की इन विपरीत परिस्थितियों में भी शिक्षकों द्वारा बच्चों को सिखाने हेतु अभूतपूर्व सफल प्रयास हुए फिर भी सभी स्तर व परिदृश्य के बच्चे इससे लाभान्वित नहीं हो सके। इसी के अंतर्गत विभिन्न संस्थाओं द्वारा विभिन्न सर्वे किए गए। इसी क्रम में अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन की रिपोर्ट के आधार पर निम्न आंकड़े प्राप्त हुए-

भाषाई दक्षता में कमी –

कक्षा 2 के 92%, कक्षा 3 के 89%, कक्षा 4 के 90%, कक्षा 5 के 95% और कक्षा 6 के 93% बच्चे कम से कम एक भाषा की दक्षता जो उन्होंने पिछले साल सीखी थी, में पीछे रह गए और उनका नुकसान हुआ है।

गणितीय दक्षताओं में कमी-

कक्षा 2 के 67% ,कक्षा 3 के 76%, कक्षा 4 के 85%, कक्षा 5 के 89% और कक्षा 6 के 89% बच्चे कम से कम एक गणितीय दक्षता, जो उन्होंने पिछले साल सीखी थी, का नुकसान हुआ है।

कुछ अन्य आँकड़े

- 90% से अधिक ऑनलाइन कक्षाओं में कोई भी सार्थक आकलन नहीं हो पाया।
- 80% से अधिक शिक्षकों का ऑनलाइन बच्चों के साथ कोई भावनात्मक जुड़ाव नहीं बन पाया।
- 50% शिक्षकों ने यह माना कि ऑनलाइन में दिए गए गृह कार्य करने में बच्चों को समस्या आ रही है।
- 60% बच्चे मोबाइल या अन्य तकनीकी सुविधाओं का ज्ञान न होने के कारण ऑनलाइन कक्षाओं से वंचित रहे।
- 70% पालक मानते थे कि ऑनलाइन माध्यम से बच्चे पर्याप्त सीख नहीं पा रहे हैं।

यह तो निश्चित है कि बच्चों ने कक्षा में जो सीखा था ,वह तो कुछ भूल ही गए हैं, साथ ही इन दोनों वर्षों में जो कुछ भी सीखना था, वह अवसर भी गंवा दिया। सभी नवाचारी उपायों के बावजूद कोविड-19 महामारी के कारण बच्चों का स्तर पहले से कम पाया गया एवं बच्चों का एक बहुत बड़ा तबका शिक्षा से दूर रह गया। साथ ही शासन द्वारा किए गए बेसलाइन परीक्षा की रिपोर्ट देखकर यह पता चल रहा है कि 49% बच्चे अपने वर्तमान कक्षा स्तर से नीचे हैं और उन्हें अपने वर्तमान कक्षा स्तर तक तीव्र गति से वापस लाना अत्यावश्यक है। इन्हीं कारणों से धीमी गति से सीख रहे तथा बिल्कुल नहीं सीख पा रहे बच्चों को विशेष रुप से उपचारात्मक शिक्षा प्रदान करने की आवश्यकता महसूस हो रही है।

अध्याय-2
बुनियादी भाषा साक्षरता और संख्या ज्ञान प्राप्त न कर सकने वाले बच्चों का चिह्नांकन

विगत 2 वर्षों से पूरा मानव समुदाय कोविड-19 की महामारी से अपने आप को सुरक्षित रखने के लिए संघर्ष कर रहा है। इन दोनों वर्षों के दौरान सभी स्कूल प्रत्यक्ष रूप से बंद हैं। बच्चे स्कूल में आकर सामान्य रूप से अध्ययन नहीं कर पा रहे हैं, हाँ, हमारे प्रदेश में बच्चों की पढ़ाई को जारी रखने के लिए 'पढ़ई तुंहर दुआर' एवं 'मोहल्ला क्लास' जैसे सकारात्मक प्रयास जरूर किए जा रहे हैं, फिर भी सामान्य कक्षाओं की तुलना में, यह अपर्याप्त ही कहा जाएगा। कक्षाओं के सामान्य रूप से संचालन के अभाव में अधिकतर बच्चे अपनी पिछली कक्षा में सीखी गई बहुत सी बातों को लगभग भूल चुके हैं।इनमें खासकर वे बच्चे विशेष रूप से शामिल हैं, जो अभी-अभी पढ़ना सीख रहे थे तथा गणित की बुनियादी संक्रियाओं से परिचित हो रहे थे इसलिए हमें इनके लिए उपचारात्मक शिक्षण की आवश्यकता महसूस हो रही है। उपचारात्मक शिक्षण के लिए अब जबकि हमारे प्रदेश में सारे स्कूल खुल चुके हैं तथा सभी बच्चे स्कूल आ रहे हैं तो हमें सबसे पहले यह देखना होगा कि हमारे कितने बच्चों को पढ़ना-लिखना आता है तथा कितने बच्चे गणित की मूलभूत गणनाओं को कर पा रहे हैं। जैसा कि हमारी नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP)-2020 भी प्रारंभिक साक्षरता और संख्याओं के बुनियादी ज्ञान पर बहुत जोर दे रही है। जिसे हम आधारभूत साक्षरता एवं संख्यात्मकता के नाम से जानते हैं।

हम राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP)-2020 के आधारभूत साक्षरता एवं संख्यात्मकता के इस लक्ष्य को तभी प्राप्त कर पाएँगे, जब हम पूरे प्रदेश के बच्चों में भाषा (हिंदी) एवं गणित के स्तर की जाँच कर पाएँगे, तभी हम उनके सीखने की गति और उनके स्तर को जान पाएँगे। उन्हें उनकी आवश्यकता अनुसार सीखने के अवसर दे पाएँगे।आप चिंतन करके देखिए कि जब तक एक शिक्षक को अपनी भाषा की कक्षा के बच्चों के बारे में यह पता नहीं होगा कि कितने बच्चों को वर्ण पहचानना आता है या कितने बच्चों को वर्णों को जोड़कर शब्द बनाना आता है अथवा कितने बच्चे शब्दों को जोड़-जोड़ कर अथवा शुरुआती लिखने -पढ़ने तक सीमित हैं, को लेकर बच्चों के साथ सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को उपचारात्मक शिक्षण के रूप में कहाँ से शुरू करेगा ?

अतः बच्चों को तेज गति से उनके स्तर के आधार पर सीखने के मौके देने तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति(NEP)-2020 के आधारभूत साक्षरता एवं संख्यात्मकता के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए बच्चों के स्तर की जाँच, एक महत्वपूर्ण शर्त है। यदि हमने आधारभूत साक्षरता एवं संख्यात्मकता के लक्ष्य को प्राप्त कर लिया तो समझिए हमने छूटे हुए सीखने के प्रतिफल (लर्निंग आउटकम्स) को अर्जित करने की आधी जंग जीत ली। जब हमें यह जानकारी हो जाएगी कि हमारा अमुक बच्चा अमुक स्तर पर है तो फिर हमें उसके स्तर के अनुसार सीखने-सिखाने के लिए अवसर देने में आसानी होगी।

स्तर पहचान (दक्षता पहचान) –

बेसलाइन आकलन के माध्यम से छत्तीसगढ़ के अधिकतर विद्यालयों में बच्चों के स्तर की जाँच की गई है। हर कक्षा के बेसलाइन प्रश्नपत्र में उस कक्षा के सवाल रखे गए हैं, साथ ही पिछली दो कक्षाओं के भी सवाल दिए गए हैं। उदाहरण के लिए कक्षा 5 के प्रश्नपत्र में कक्षा-3 के 4 प्रश्न एवं कक्षा-1 के 3 प्रश्न रखे गए थे। बेसलाइन मूल्यांकन का उद्देश्य यह था कि इस कोरोना महामारी के दौरान पिछले 17 माह में बच्चों का सीखने में क्या नुकसान हुआ है, इसका पता लगाना। बेसलाइन मूल्यांकन में कक्षावार दिए गए सवालों के आधार पर बच्चों का आकलन किया गया है। इस आकलन के आधार पर यह पता लगाया गया कि बच्चों का स्तर क्या है? परिणाम

के निष्कर्षों के अनुसार बच्चों को उनकी दक्षताओं के स्तर के आधार पर 3 श्रेणियों (कक्षा स्तर, पिछली कक्षा के स्तर,शुरुआती स्तर) में विभाजित करना होगा। आगे यह तय करने में मदद करेगा कि मिडलाइन मूल्यांकन तक क्या कार्य किया जा सकता है।

बेसलाइन के आधार पर बच्चों का समूह निर्माण कैसे किया जा सकता है?

यह एक आवश्यक प्रश्न है। इसके लिए बेसलाइन मूल्यांकन के बाद शिक्षकों को अपनी शाला के बच्चों के सीखने के स्तर का एक अंदाजा तो हो गया है।अब आगे समूह सीखने के प्रतिफल के आधार पर बना सकते हैं, क्योंकि कक्षा में शिक्षकों को सीखने के प्रतिफल के आधार पर ही कार्य करना है। इसमें हम कक्षा 1 से 8 के बच्चों का तीन समूह बना सकते हैं – कक्षा 1 से 2, कक्षा 3 से 5 और कक्षा 6 से 8 तक।

उदाहरण के लिए कक्षा 5 में अगर 20 बच्चे हैं और उनमें से गणित विषय को लेकर बच्चों की स्थिति इस प्रकार है -2 बच्चे कक्षा स्तर के हैं, 12 बच्चे कक्षा 3 के स्तर के हैं और 6 बच्चे शुरुआती स्तर के हैं, तो इसे सारणी में इस प्रकार भरा जा सकता है।

कक्षा-समूह	विषय	कक्षा-स्तर	कक्षा-स्तर के नीचे	शुरूआती स्तर
कक्षा 1 -2	भाषा - हिंदी			
	गणित			
	अंग्रेजी			
कक्षा 3-5	भाषा -हिंदी			
	गणित	2	12	6
	अंग्रेजी			
	पर्यावरण			
कक्षा 6-8	भाषा -हिंदी			
	गणित			
	अंग्रेजी			
	विज्ञान			
	सामाजिक-विज्ञान			

इसे और स्पष्ट रूप में समझने के लिए नीचे कक्षा 4 गणित की दक्षताओं के आधार पर विद्यार्थियों के स्तर को देख सकते हैं -

कक्षा स्तर	कक्षा स्तर के पीछे	शुरुआती स्तर
M401 संख्याओं की संक्रियाओं का उपयोग दैनिक जीवन में कर सकता है। 2 तथा 3 अंकों की संख्याओं का गुणा कर सकता है। **M402** एक संख्या से दूसरी संख्या को विभिन्न विधियों से भाग दे सकता है। जैसे चित्रालेख द्वारा (बिन्दुओं का आलेखन कर), बराबर बांटकर, बारंबार घटाकर, भाग तथा गुणन के अंतर्संबंधों का उपयोग करके।	**M301** तीन अंकों की संख्या के साथ कार्य कर सकता है। स्थानीयमान की मदद से 999 तक की संख्याओं को पढ़ तथा लिख सकता है। **M302** स्थानीयमान के आधार पर 999 तक की संख्याओं के मानों की तुलना कर सकता है। **M 3 0 3** दैनिक जीवन की समस्याओं को हल करने में 3 अंकों की संख्याओं के योग तथा अंतर का प्रयोग करता है, योग का मान 999 से अधिक न हो।	**M 1 0 2** 1 से 20 तक की संख्याओं पर कार्य कर सकता है। 1 से 9 तक की संख्याओं का उपयोग करते हुए वस्तुओं को गिन सकता है। **M103** मूर्त रूप से 20 तक की संख्याएं, चित्रों और प्रतीकों से गिन सकता है। **M104** 20 तक की संख्याओं की तुलना कर सकता है, जैसे यह बता पाता है कि कक्षा में लड़कियों की संख्या या लड़कों की संख्या ज्यादा है। **M201** दो अंकों की संख्याओं के साथ कार्य करते हैं। 99 तक की संख्याओं को पढ़ते व लिखते हैं। **M202** दो अंकों की संख्याओं को लिखने एवं तुलना करने में स्थानीयमान का उपयोग करते हैं। **M203** अंकों की पुनरावृत्ति के साथ और उसके बिना दो अंकों की सबसे बड़ी तथा सबसे छोटी संख्या को बनाते हैं। **M204** दो अंकों की संख्याओं के जोड़ पर आधारित दैनिक जीवन की समस्याओं को हल करते हैं। **M205** दो अंकों की संख्याओं के घटाने पर आधारित दैनिक जीवन की समस्याओं को हल करते हैं।

यह केवल उदाहरण है। ऐसे ही अन्य कक्षाओं में विभिन्न विषयों के बच्चों के अधिगम स्तर को पहचान कर चिह्नांकित किया जा सकता है और उसके आधार पर विभिन्न समूह के साथ कक्षा की कार्य योजना बनाकर काम किया जा सकता है।

अध्याय-3
मूल्यांकन, निदानात्मक परीक्षण एवं उपचारात्मक शिक्षण

सामान्यतः हम बच्चों के सीखने की स्थिति को जाँचने के लिए मूल्यांकन करते आए हैं लेकिन यहीं बच्चों के सीखने में मदद की बात की जाएं तो हमें विद्यार्थियों की प्रगति तथा अपनी प्रक्रियाओं को समझने के लिए आकलन करने की जरूरत महसूस होती है जो कुछ समय अंतराल में एकमुश्त न होकर बल्कि लगातार उनकी स्थिति को समझना और उन्हें मदद करना शामिल होता है।

वर्तमान परिस्थिति में आकलन और भी महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि अभी की स्थिति में बच्चे कक्षावार दक्षताओं में तो पीछे हैं ही साथ ही साथ पिछली कक्षा की दक्षताओं में भी पिछड़ गए हैं इसलिए बच्चे के साथ कार्य करने से पहले यह समझना आवश्यक हो गया है कि वह किस स्तर पर है ताकि उन दक्षताओं पर फोकस होकर काम किया जा सके और उन्हे पिछड़ गयी दक्षताओं को प्राप्त करने में जरूरत के अनुसार मदद की जा सके।

विभिन्न गतिविधि और कार्य पत्रक के माध्यम से आकलन किया जा सकता है जिसे शिक्षक स्वयं भी विकसित कर सकते हैं।

उदाहरण के तौर पर

कक्षा	कक्षा स्तर	कक्षा स्तर से पीछे	शुरुआती स्तर
3	• चित्र देखकर उसका वर्णन कर पाएं/अपने अनुभव लिख पाएं • पाठ्य सामग्री को पढ़कर अपने स्तर पर समझ सकें • स्वतंत्र रूप से अपने विचारों को लिख पाएं	• चित्रों को देखकर उसके बारे में शब्द और वाक्यों में बता पाते हों • अपने परिवेश और दैनिक जीवन के बारे में बता पाते हों • चित्रों के बारे में सरल शब्द और वाक्यों में लिख और पढ़ पाते हो • चित्र को देखकर स्वतंत्र लेखन कर पाते हों	• चित्र देखकर शब्द बोलते हों और उससे जुड़े अनुभव स्थानीय भाषा में टूटे–फूटे वाक्यों में देते हों। • चित्र को पढ़कर स्वतंत्र लेखन (अर्थात चित्र बना) कर पाते हों।

यद्यपि शिक्षक योजना बनाकर स्तरानुसार छोटे-छोटे समूहों में पढ़ाते हैं तथा प्रत्येक बच्चे की प्रगति का आकलन करते हैं, फिर भी यह आवश्यक हो जाता है कि बच्चे द्वारा पढ़ने के एक माह बाद या 3 माह बाद या आधी पुस्तक समाप्त होने के बाद सभी विषयों का मूल्यांकन किया जाए। इस प्रकार के मूल्यांकन से बच्चे के पढ़ने-लिखने, गणित हल करने तथा विचारों को अभिव्यक्त करने में आई कठिनाई का पता चल जाता है। बच्चों की उपलब्धि का मूल्यांकन कई प्रकार से किया जा सकता है।

उदाहरण के लिए-

1. मूल्यांकन अलग-अलग बच्चों का या सामूहिक रूप से किया जा सकता है।
2. मूल्यांकन मौखिक गतिविधि करवाकर, गतिविधियों का अवलोकन करके या फिर लिखित रूप से किया जा सकता है।
3. मूल्यांकन इस प्रकार का भी हो सकता है, जो बच्चों को अपरिचित विषय वस्तु पढ़ने तथा पाठ्यवस्तु से हटकर प्रश्न हल करने के लिए प्रेरित करे।
4. मूल्यांकन दिन प्रतिदिन के कार्य पर, एक निश्चित अवधि बाद, कुछ निश्चित पाठ पढ़ने के बाद, वर्ष के अंत में या पूरी पुस्तक समाप्त होने के बाद किया जा सकता है।

हम मूल्यांकन कैसे करते हैं?

मोटे तौर पर मूल्यांकन के लिए नीचे लिखी प्रक्रिया अपनाई जाती है-

1. मौखिक प्रश्न पूछकर- इससे बच्चे की सुनने, दोहराने, निर्देशों को समझने तथा उनके अनुसार कार्य करने की क्षमता जानी जा सकती है। बच्चों ने पाठ्यवस्तु को कितना सीख लिया? किस गहराई से सीख लिया है? तथा उसे कितना याद रख सकते हैं? इसका मूल्यांकन मौखिक प्रश्न पूछकर किया जा सकता है।

2. पुस्तक पढ़वाकर- यह देखा जा सकता है कि बच्चे पुस्तक या किसी अन्य लिखी हुई बातों को सही- सही शुद्ध उच्चारण एवं प्रवाह के साथ पढ़ पाते हैं अथवा नहीं। पढ़ने के साथ ही उस विषय वस्तु के विषय में अपनी समझ बना पाते हैं अथवा नहीं। पुस्तक के पठन की प्रक्रिया उचित विराम चिह्नों के आधार पर करते हैं या नहीं।

3. लिखवाकर- लिखित मूल्यांकन से बच्चों के शुद्ध लेखन अपने विचारों को व्यक्त करने, प्रश्नों के उत्तर देने, गणित के प्रश्न हल करने, चित्र बनाने, रचनात्मक कार्य करवाने, किसी स्थान, चित्र अथवा वस्तु का वर्णन करने इत्यादि की क्षमता को देखा जा सकता है।

4. हाथ से काम करवाकर- हाथ से काम करवाकर बच्चों को कागज से, मिट्टी से, लकड़ी कपड़े आदि से शिक्षण सहायक सामग्री अथवा अन्य खेल सामग्री बनाने की क्षमता का मूल्यांकन किया जा सकता है। बच्चों के द्वारा स्वतंत्र रूप से किए गए कार्यों से उनकी रचनात्मक क्षमता का भी मूल्यांकन संभव होता है।

5.अवलोकन करके- बच्चों के खेलने-कूदने के तरीके, उठने बैठने के तरीके, व्यायाम करने के तरीके, भ्रमण के समय किसी वस्तु को बारीकी से देखने के तरीके, उनके व्यवहार के तरीके आदि से बच्चों का सूक्ष्म अवलोकन से मूल्यांकन किया जा सकता है।

6. समझ का स्तर - मूल्यांकन का यह बहुत ही महत्वपूर्ण पहलू है। बच्चों की विषयवस्तु के प्रति उसकी गहराई तथा व्यापकता के प्रति चिंतन मनन। मूल्यांकन चाहे किसी भी चीज का हो, यह प्रयास करना आवश्यक है कि बच्चे शब्दों का अर्थ समझ लेते हैं, शब्दों को वाक्य में प्रयोग कर लेते हैं, कहानी-कविता का सार या भाव बता सकते हैं। प्राप्त ज्ञान को अपरिचित परिस्थितियों में प्रयोग कर लेते हैं। गणित में भाषायी प्रश्न हल कर सकते हैं।इस प्रकार के मूल्यांकन से बच्चे विषयवस्तु को केवल पढ़ेंगे नहीं बल्कि संपूर्ण विषयवस्तु को गहराई से समझ कर अपने कार्य व्यवहार में परिवर्तन के लिए प्रशस्त होंगे।

मूल्यांकन प्रक्रिया-

- मूल्यांकन प्रतिदिन योजना के अनुसार किया जाए तथा बच्चों के द्वारा पुस्तकों पर किए गए कार्य का अवलोकन कर उसमें बच्चों से सुधार कार्य करवाया जाए।
- मासिक आकलन प्रत्येक बच्चों का पूरे माह में सीखे गए कार्यों का माह के अन्तिम 2 या 3 दिनों में किया जाए। सतत मूल्यांकन का एक महत्वपूर्ण पहलू है, बच्चों को पढ़ाते समय बीच-बीच में प्रश्न पूछना, भाषा में कहानी का सार पूछना व लिखवाना, गणित में प्रश्न हल करवाना, बच्चों के लिखे हुए को जाँचना और जब पूरा पाठ या अभ्यास समाप्त हो जाए तो पूरे पाठ के बारे में बच्चों से प्रश्न और यह जाँचना कि बच्चों में उक्त पाठ के बारे में समझ विकसित हुई है या नहीं यह कार्य प्रत्येक बच्चे के लिए करना है तथा बच्चों की उपलब्धि का किसी न किसी रूप में रिकार्ड रखना है।
- मासिक प्रगति पत्रक में पाठों/अभ्यासों/गतिविधि क्रमांक का अंकन करने से पूर्व शिक्षक यह सुनिश्चित कर लें कि बच्चा सीख गया है।

वर्तमान मूल्यांकन

कोविड-19 परिस्थितियों के प्रभाव से शिक्षा भी अछूती नहीं रही। बच्चों के लम्बे समय बाद स्कूल आने से उनका स्तर परीक्षण आवश्यक हो गया। अलग अलग स्थानों में इस समय शिक्षा के लिए नवाचार के विभिन्न प्रयास किए गए। राज्य की ओर से पढ़ई तुंहर दुआर, मोहल्ला क्लास, बुल्टू के बोल आदि विविध नवाचारी कार्यक्रमों के द्वारा शिक्षण की स्थिति का अवलोकन भी आवश्यक है। स्कूल खुलने के साथ बच्चों के लिए 10 मूल्यांकन के बिंदु निर्धारित किए गए। जिसमें मासिक मूल्यांकन के अलावा राज्य स्तर से 3 मूल्यांकन की रूपरेखा तय की गई। वर्ष के शुरु में बेसलाइन आकलन, मध्य में मिडलाइन आकलन एवं अंतिम में एण्ड लाइन आकलन की व्यवस्था की गई। जिसमें से बेसलाइन आकलन, सेतु पाठ्यक्रम (पिछली कक्षा) पर आधारित, मिडलाइन आकलन कक्षा के 60% पाठ्यक्रम पर आधारित एवं एण्ड लाइन आकलन पाठ्यक्रम के शेष 40% हिस्से पर आधारित होगा।

प्रत्येक प्रश्नपत्र में 3 खंड होंगे। जिसका प्रथम 'अ' खण्ड उसी कक्षा के सीखने के प्रतिफल पर आधारित होगा, खंड 'ब' उससे नीचे के कक्षा के सीखने के प्रतिफल पर आधारित होगा। पुनः खंड 'स' नीचे कक्षा के सीखने के प्रतिफल पर आधारित होगा।

इन आकलन में उपस्थित छात्र/छात्राओं के मूल्यांकन के आधार पर उनके स्तर निर्धारण कर कक्षा से नीचे स्तर के बच्चों का उपचारात्मक शिक्षण इस प्रकार से करना होगा कि कम समय में वे उनके पिछले स्तर से ऊपर आ सकें। निश्चित तौर पर इसके लिए उनके सीखने की गति को तेज करना आवश्यक है।

मूल्यांकन के बाद क्या करें?

मूल्यांकन के उपरांत बच्चों के द्वारा लिखे गए उत्तरों का विश्लेषण एवं निदानात्मक परीक्षण भी आवश्यक है। बच्चों की उपलब्धियों और कमियों को जानने के लिए मूल्यांकन का विश्लेषण किया जाना अत्यंत आवश्यक है। यह जानने की कोशिश करें कि बच्चे में किस प्रकार की कमजोरी है। उसे कहाँ कठिनाई आ रही है? इसे जानने के लिए नीचे बनी तालिका पूरी करें।

मूल्यांकन विश्लेषण

बेसलाइन/मिडलाइन/एंडलाइन

क्र.	विद्यार्थी का नाम	प्रश्न क्रमांक/प्राप्तांक										योग
		1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	
1												
2												
3												
4												
प्रश्नवार प्राप्तांकों का योग												

उपरोक्त तालिका नमूने के तौर पर दी गई है। इसे विषय में पूछे गए सभी प्रश्नों की संख्या एवं खंड के आधार पर बनाया जाएं। उत्तर पुस्तिका में प्रत्येक प्रश्न पर प्राप्तांकों को इसमें दर्शाने के साथ ही उसका विश्लेषण भी निम्नानुसार करना होगा।

मूल्यांकन विश्लेषण

किसी बच्चे के द्वारा प्राप्त अंकों को देखकर ज्ञात करें कि-

- किस प्रश्न को पूरी तरह से हल किया है?
- किस प्रश्न को आधा-अधूरा हल किया है?
- किस प्रश्न को बिलकुल भी हल नहीं किया है?

अब यह देखेंगे कि सभी बच्चों के द्वारा अंकों को प्रश्नवार देखने पर ज्ञात होता है कि-

- किस प्रश्न को सभी बच्चों ने हल किया है?
- किस प्रश्न को कुछ बच्चों ने हल किया है?
- किस प्रश्न को किसी ने हल नहीं किया है?

उपरोक्त विश्लेषण से ही बच्चे के कमजोर क्षेत्र का पता चलेगा। कमजोरी के क्षेत्र का पता चलने के बाद उस बिंदु पर निदानात्मक परीक्षण हेतु बिंदु निर्धारित कर उपचारात्मक शिक्षण की प्रक्रिया प्रारम्भ करनी होगी।

मूल्यांकन के आधार पर अब बच्चे के कमजोर क्षेत्र का पता लगाने के बाद उसके निवारण के लिए नीचे दी गई तालिका की मदद ले सकते हैं –

भाषा

सुनना-बोलना	
कठिनाई	**निवारण**
सुनकर दोहरा नहीं पाता।	शिक्षक स्वयं बच्चे से बातचीत करें उससे घर परिवार की बात करें।
सुनी हुई बात के अनुसार काम नहीं कर पाता।	बच्चे को बोलने के लिए प्रोत्साहित करें।
सुनी हुई बात से संबंधित उत्तर नहीं दे पाता।	कुछ भी कैसा भी बोलने के लिए कहें।

बोलने में हिचक या संकोच करता है।	शुरू में बच्चे बड़ी हड़बड़ाहट में बोलते हैं। ऐसी स्थिति में प्यार से कंधे थपथपाकर धीरे-धीरे बोलने के लिए कहें। बोले गए शब्द स्पष्ट सुनाई दे।
शब्दों में स्पष्टता एवं आवाज में उतार-चढ़ाव नहीं होना।	स्पष्टता के बाद प्रवाह पर ध्यान दें। इससे बोलना प्रभावशाली बनता है। शिक्षक स्वयं लय-प्रवाह के साथ गाएँ। कविता को बच्चे से समूह में गाने को कहें। पहेली चुटकुले सुनाने को कहें। बच्चों के शुद्ध उच्चारण पर ध्यान दें।
बोलने में विनम्रता शिष्टाचार नहीं है।	बच्चे से शिष्टाचार से बात करें। बच्चों को आपस में शिष्टाचार से बात करवाएँ।
भाषा का स्तर ठीक नहीं है।	पुस्तक पढवाएँ, कविता, गीत सुनें।
विचारों में तारतम्यता नहीं है।	किसी बिंदु पर बातचीत करें।
बोलने की गति ठीक नहीं है।	बच्चों से बुलवाएँ तथा उसमें यथा स्थान पर सुधार करें।

पढ़ना	
कठिनाई	**निवारण**
क्या बच्चा शब्द चित्र कार्ड नहीं पहचान पाता?	शब्द चित्र कार्ड को बार-बार पढ़वाएं तथा कार्ड पर चर्चा करें।
क्या चित्रों पर बातचीत नहीं कर पाता?	पढ़ने की मूल इकाई वर्ण अवश्य है लेकिन व्यावहारिक सार्थक इकाई शब्द है। अतः बच्चे को सरल सार्थक व परिचित शब्दों को पहले पढ़वाएँ।
क्या शब्द नहीं पढ़ पाता।	स्थानीय बोली के शब्द चुनकर उनके शब्द चित्र कार्ड बना ले तथा बच्चे से अभ्यास करवाएं।
क्या शब्द का एक-एक वर्ण पढ़कर पूरे शब्द को पढ़ता है।	शुरू से सरल वर्ण पढ़वाते जाएं और जब सरल वर्ण पढ़ने लगे तो कठिन वर्णों का अभ्यास करवाएं।
क्या अ. आ. ड. ण. श.प. स.क्ष. वर्णों को नहीं पढ़ पाता।	मात्रा लगे शब्दों को पूरा पढ़वायें तथा बार-बार पढ़वाएँ और पहचानने दें।
क्या संयुक्त शब्दों को पढ़ने में परेशानी आती है?	संयुक्त शब्दों के वर्णों को अलग-अलग कर पढ़ाएँ एवं उनका ध्वनि सह-संबंध भी बताएँ।
क्या बच्चा हाथ का लिखा हुआ, नहीं पढ़ पाता?	दूसरे बच्चों के हाथ से लिखे हुए शब्दों को पढ़वाएँ।

क्या अखबार नहीं पढ़ पाता?	पत्र-पत्रिका को पढ़वायें।
क्या कविता या गद्य लय व प्रवाह के साथ पढ़ नहीं पाता?	प्रवाह के साथ पढ़ने के लिए शिक्षक प्रोत्साहन दें व स्वयं भी पढ़कर सुनाएँ।

लिखना	
कठिनाई	**निवारण**
क्या बच्चा वर्ण का सही आकार नहीं बना पाता।	बच्चें को पहले रेत स्लेट पर खड़ी-आडी, तिरछी, आधी, पूरी आकृतियां बनवाएं तथा प्रोत्साहित करें।
क्या वर्ण बनाते समय ढाल नहीं है ?	बच्चें को चित्र बनाने रंगोली बनाने के लिए प्रोत्साहित करें।
क्या शब्दों के बीच दूरी समान नहीं रहती है?	बच्चे को पहले सरल सरल वर्ण बिंदुओं को मिलाकर लिखवायें हाथ पर अलग से लिखवाएँ।
क्या बच्चा संयुक्त वर्ण तथा शब्द नहीं लिख पाता?	देखकर लिखने का खूब अभ्यास करवाएँ।
क्या बच्चा बोले गए शब्द नहीं लिख पाता?	धीरे-धीरे सही अनुपात में सही दूरी पर रखकर लिखवाएँ।
क्या बच्चा प्रश्नों के उत्तर लिखित रूप में नहीं दे पाता?	स्वयं लेखन को प्रोत्साहन दें। सुनकर लेखन करवाएँ।
क्या बच्चा पुस्तकों पर कार्य नहीं करता?	सुनकर लिखने का अभ्यास करवाएँ।
क्या बच्चा चित्र नहीं बना पाता?	बच्चों से सरल आकृतियां बनवाएँ। चित्रों पर पेंसिल से अभ्यास करवाएँ।
क्या बच्चा अपने विचारों को लिख पाता है ?	बच्चा एक या दो वाक्य कई बार पढ़ नहीं पाता? पढने को कहें तथा उस पाठ से प्रश्नों को पूछकर लिखवाएँ।
क्या बच्चे को निबन्ध लिखने में कठिनाई होती है?	बच्चे जो कुछ लिखें उसे उनसे स्वयं पढ़वाएँ। कहानी या कविता का सार लिखने को दें व बच्चों से पढ़वाएँ। इससे उन्हें मूल्यांकन तथा सहभागिता में परेशानी आती है। मूल्यांकन के बाद शिक्षक सहायता जरूरी नहीं होगी तथा अशुद्धि स्वयं दूर होने लगेगी।
क्या बच्चा अशुद्ध लिखता है?	बच्चे के सुलेख व चित्र बोर्ड पर प्रदर्शित करें। मात्रा लगाना तथा संयुक्त अक्षर लिखना। इससे बच्चों को प्रेरणा मिलती है। उत्साह बढ़ता है।

गणित	
कठिनाई	**निवारण**
बच्चे को गिनने में कठिनाई आ रही है।	बच्चों के साथ संख्या पूर्व अवधारणाओं (क्रम से जमाना, वर्गीकरण, एक-एक की संगतता) पर काम किया जाना चाहिए, उसके बाद ठोस वस्तुओं को गिनने का कार्य किया जाना चाहिए।
ठोस वस्तुओं या चित्रों को गिनने में।	पहले विभिन्न प्रकार की मूर्त सामग्री जैसे कंकड़, पत्ते, मोती, गिनमाला आदि गिनने का अभ्यास एवं इसके बाद चित्रों को गिनने का कार्य करना चाहिये।
गिनती को क्रमागत रूप से बोलने में।	संख्या नाम आधारित गीत/ कविता बच्चों के साथ करवाई जा सकती है, पहले ठोस वस्तुओं, उसके उपरान्त चित्रों और फिर अमूर्त रूप में बढ़ते क्रम में गिनना सिखाना चाहिए।
19, 29, 39, 49 जैसी संख्याओं में भेद करने में तथा उनको लिखने में।	बच्चों के साथ मूर्त रूप में तीली बंडल की मदद से कार्य किया जाना चाहिए, जिससे बच्चे की अवधारणात्मक समझ बन सके।
बोली गई संख्याओं को सही लिखने में।	गिनती को बोलकर लिखें जिनसे शब्दों और अंको में तालमेल बैठे।
संख्याओं के स्थानीय मान में।	बच्चों के साथ मूर्त रूप में तीली बंडल की मदद से दस-दस के बंडल एवं खुली तीलियों के माध्यम से स्थानीय मान की अवधारणा पर कार्य किया जाना चाहिए, इसके स्थानीय मान निकालने में बच्चों की मदद करें।
संख्याओं के छोटे से बड़े या बड़े से छोटे के क्रम में व्यवस्थित करने में।	संख्याओं के अनुसार ठोस वस्तुओं को छोटे से बड़े या बड़े से छोटे के क्रम में व्यवस्थित करवाएँ।
संख्याओं को जोड़ने में।	ठोस वस्तुओं की सहायता से जोड़ की अवधारणा पर कार्य करना चाहिए(कंकड़ के माध्यम से, गिनमाला के माध्यम से, तीली बंडल के माध्यम से साथ ही आंकिक रूप से)
नापने, तौलने, धारिता, समय मुद्रा संबंधी प्रश्न हल करने में।	पहले अमानक इकाइयों जैसे- हाथ, बित्ता आदि फिर समान लम्बाइयों वाली सामग्री जैसे पेंसिल/डस्टर के माध्यम से मापन पर काम करें, इसके बाद स्केल के माध्यम से काम करने के अवसर दें एवं साथ ही संख्यात्मक रूप से लिखना सिखाएं। इसी प्रकार भार और धारिता पर काम करना है तो पहले अमानक इकाइयों से शुरू करेंगे फिर मानक इकाइयों की ओर बढेंगे जैसे- पहले हल्का-भारी फिर वजन करना, धारिता के लिए पहले कम-ज्यादा फिर लीटर(मानक इकाइयों) के उपयोग पर कार्य करें।

जोड़-घटाव संबंधी भाषायी प्रश्न हल करने में।	बच्चों को भाषायी प्रश्न का अर्थ समझने में मदद करें, प्रश्न को सरल भाषा में या नाटकीय रूपांतरण करके समझाएं। बच्चों को सीधे ये न बताएं कि प्रश्न में कौन सी संक्रिया की जानी है। उन्हें विभिन्न सन्दर्भों से सम्बंधित प्रश्नों पर कार्य करने के अवसर प्रदान करें।
उधार लेकर घटाने में।	तीली-बंडल के माध्यम से साथ ही आंकिक रूप से घटाव की अवधारणा पर कार्य किया जाना चाहिए।
संख्याओं का विस्तारित रूप लिखने में।	पहले तीली बंडल के माध्यम से संख्याओं के विस्तारित रूप की अवधारणा को समझाएं उदाहरण- 324 में 3 सौ, 2 दहाई एवं 4 इकाई हैं, इसके उपरान्त सैकडे, दहाई व इकाई के ऐरो कार्डों से गतिविधियाँ करवाएँ।

बच्चों की कठिनाई जानने के लिए परीक्षण

प्राय: देखा जाता है कि यदि कक्षा के सभी बच्चों को कोई गतिविधि करवाई जाए या पाठ पढ़ाया जाए, चर्चा की जाए, किसी अवधारणा को प्राप्त करने के लिए क्रियाकलाप करवाए जाएं तो कक्षा के कुछ बच्चे क्रियाकलाप कर लेते हैं, पाठ सीख लेते हैं जिससे अवधारणा समझ में आ जाती है लेकिन कुछ बच्चे इन चीजों को प्राप्त नहीं कर पाते। इसीलिए हम कहते हैं कि बच्चों के सीखने की गति अलग-अलग होती है।

सीखने में कठिनाई प्रत्येक बच्चे के लिए, प्रत्येक विषय के लिए, प्रत्येक कक्षा के लिए तथा प्रत्येक शाला के लिए अलग-अलग तरह की हो सकती है।

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया कक्षा में निर्बाध रूप से चलती रहे, उसके लिए यह जानना आवश्यक हो जाता है कि-

1 कठिनाई किस तरह की है?

2 कठिनाई का क्या कारण है?

3 कठिनाई का निवारण किस प्रकार हो सकता है?

यह जानने के लिए शिक्षा शास्त्रियों ने निदानात्मक परीक्षण को विकसित किया है। निदान शब्द का अर्थ है किसी कठिनाई परेशानी अथवा बीमारी चाहे वह मानसिक हो, शारीरिक हो या सामाजिक हो, को जानने की विधि। शिक्षा के क्षेत्र में व बच्चों के संदर्भ में यह कठिनाई भाषा, गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, संगीत, नृत्य आदि के किसी भी क्षेत्र में हो सकती है।

निदानात्मक परीक्षण के कुछ निम्नलिखित सिद्धांत बतलाए गए हैं-

1 परीक्षण के समय बच्चे से आत्मीयता से बात की जाएं इससे बच्चा भयमुक्त व तनाव मुक्त होगा तथा वह जो कुछ भी जानता है, जो कुछ भी बतलाना चाहता है उसे अच्छी तरह से बतला सकेगा।

2 बच्चों से अलग-अलग पूछा जाए, बात की जाए, पढ़वाया जाए, लिखवाया जाए, प्रश्न हल करवाए जाएं तथा प्रयास किया जाए कि जो कुछ बच्चे के अंदर है वह बाहर आ जाए।

3 परीक्षण के समय बच्चे से पूछा जाए, उसे पढ़ाया न जाए जिससे उसकी वस्तु स्थिति का पता चल सके।

कभी- कभी शाबाश भी कहने की ज़रूरत होती है जिससे बात बन जाए ।

4 बच्चे की जाँच पूरी तरह से की जाए। जाँच तब भी जारी रहनी चाहिए जब बच्चे का उपचार चल रहा हो जाँच से किसी न किसी निष्कर्ष पर अवश्य पहुँचना चाहिए।

निदानात्मक परीक्षण कैसे किया जाए ?

1. पहले उन बच्चों की पहचान की जाए, जिनको सीखने में कठिनाई है या जो नहीं सीख पाते हैं।
   - इसका एक तरीका है कि बच्चों का मौखिक या लिखित परीक्षण किया जाए, जिन बच्चों की उपलब्धि अन्य बच्चों की तुलना में कम है, तो एक मोटे तौर पर कह सकते हैं कि उन बच्चों को सीखने में कठिनाई है। कठिनाई जानने के लिए प्रत्येक प्रश्न का विश्लेषण करना होगा।
   - कुछ ऐसी भी कठिनाई हो सकती है जो सभी बच्चों की हो जो प्रश्न कोई भी बच्चा नहीं कर पाया है।
   - मौखिक तथा लिखित परीक्षण के अलावा अनौपचारिक रूप से भी कठिनाइयाँ जानी जा सकती हैं।
   - कठिनाइयाँ केवल पढ़ने, लिखने गणित के प्रश्न हल करने तक ही सीमित नहीं रहनी चाहिए बल्कि बच्चे की मानसिक, संवेदनात्मक, सामाजिक कठिनाइयों को भी पहचानना चाहिए। ये बातचीत करके व बच्चों का अवलोकन करके ज्ञात की जा सकती हैं।

2. विशेष बिंदुओं को जानना जिनसे सीखने में परेशानी होती है। किन-किन में पहले कठिनाई है यह जानना हो जाता है कि कठिनाई क्या है? किस विषय में है। विषय में किस बिंदु पर है। उदाहरण के लिए कक्षा 3 के बच्चे भाषा विषय में मात्रा लगाने की गलती करते हैं। कठिनाई जानने के लिए टेस्ट बनाये गए हैं। इन निदानात्मक परीक्षण की विशेषता है कि एक ही बिंदु के लिए बहुत से प्रश्न पूछते हैं। उस कठिनाई की बारीकियों को जानने का प्रयास करते हैं। उदाहरण के लिए मात्रा संबधी कठिनाई बच्चे में बहुवचन की है, स्त्रीलिंग पुर्लिंग है, अनुस्वार की है, लघु या दीर्घ मात्रा की है।

जैसा कि ऊपर बतलाया गया है बच्चे में कठिनाइयाँ एक ही विषय में कई प्रकार की हो सकती हैं तथा कई विषयों में हो सकती हैं। परीक्षण द्वारा उन सभी बिंदुओं को बारीकी से जानने की आवश्यकता है।

कठिनाइयों का कारण ढूँढना

किन-किन बच्चों को कठिनाई आ रही है, किस-किस प्रकार की कठिनाई आ रही है, किस जगह पर कठिनाई आ रही है? कठिनाईयों के कई कारण हो सकते हैं? इस पर चिंतन करना आवश्यक हो जाता है। इसके कई कारण हो सकते हैं।

जैसे-

1. बच्चे का शाला में नियमित रूप से न आना।
2. विषयवस्तु की पढ़ाई ठीक न होना।
3. बच्चे पर व्यक्तिगत रूप से ध्यान न देना।
4. बच्चे की उपेक्षा करना।
5. बच्चे के किए गए कार्य को न देखना, उसकी गलतियों को न सुधारना।
6. सुनने, बोलने देखने में कठिनाई होना।
7. संसाधनों की कमी होता।

8. घर का वातावरण पढ़ाई के प्रति अनुकूल न होना
9. पाठ्यक्रम कठिन हो सकता है।
10. जिस भाषा में बच्चों को पढ़ाया जाता है उस भाषा का बच्चे की समझ में न आना।
11. कई बार बहुत से कारण मिलकर कठिनाई पैदा करते हैं ऐसी स्थिति में केस स्टडी करने की आवश्यकता होती है, जिसमें परिवार स्वास्थ, मानसिकता, आदतों के अतिरिक्त पढ़ने, लिखने, खेलने या अन्य कार्यों को शामिल करना होता है।

निदानात्मक परीक्षण के लिए टूल बनाने के चरण

एक बार मोटे तौर पर यह पता चल जाए कि बच्चे को कठिनाई किस बिंदु पर आ रही है, तो फिर उस कमजोरी की बारीकी से गहन जाँच करने की आवश्यकता पड़ती है, जिससे उपचार की सही दिशा तय की जा सके।

1. विषय वस्तु के उस बिंदु का चिह्नांकन करते हैं। उन बिंदुओं को कठिनाईयों के बढ़ते क्रम में रखते हैं जिससे कि सीखने के क्रमबद्ध तरीके से चिह्नांकन हो सके। ऐसा करने में सीखने का कोई बिंदु छूटना नहीं चाहिए।
2. प्रत्येक सीखने के बिंदु पर 4 से 5 छोटे-छोटे प्रश्न बनाये जाएं जिससे बच्चे की वास्तविक कठिनाई पकड़ में आ सके। प्रश्न व्यापक तथा कठिनाई के बढ़ते क्रम में होने चाहिए। बच्चों का मानसिक भटकाव न हो।
3. प्रश्नों के उत्तर छोटे होने चाहिए तथा समय सीमा में बंधे नहीं होने चाहिए। छात्रों के उत्तर देने के लिए स्पष्ट दिशा निर्देश होने चाहिए।
4. प्रश्नों के उत्तर की एक सूची भी तैयार करनी चाहिए।

कठिनाइयों को दूर करने के लिए शिक्षण

उपचारात्मक शिक्षण के प्रमुख बिंदु निम्नानुसार हैं-

1. बच्चे की कठिनाई दूर करने के लिए शिक्षण करते समय बच्चे की अभिरूचियों को ध्यान में रखना आवश्यक है अतः पहले वह कार्य किया जाए जिसमें बच्चे की रूचि हो
2. शिक्षण इस प्रकार किया जाए कि बच्चे को उसकी उपलब्धि उसकी सफलता पता चले। बच्चा यह अनुभव करते चले कि वह सीख रहा है।
3. प्रयास यह होना चाहिए कि उसकी असफलतायें सफलताओं में बदल जाएं।
4. उपचारात्मक शिक्षण बच्चे के सफल पक्ष से शुरू होना चाहिए। शिक्षक 50 प्रतिशत समय इस बात पर दे, जिसको बच्चा अब सरलता से कर सकता है।
5. सीखते समय बच्चों ने सफलता प्राप्त की है बच्चे को उसे स्पष्ट रूप से बतलाया जाए।
6. आवश्यकता अनुसार बच्चे को अकेले कार्य करने दिया जाए, उदाहरण के लिए चित्र बनाना।
7. उपचारात्मक शिक्षण में लचीलापन होना चाहिए। बच्चे की आवश्यकतानुसार उसमें परिवर्तन करते रहना चाहिए।
8. उपचारात्मक शिक्षण सदैव लक्ष्य प्राप्ति की ओर बढ़ते क्रम में होना चाहिए। उपचारात्मक शिक्षण इस प्रकार होना चाहिए कि बच्चे अपने कार्य के लिए भविष्य में समुदाय पर निर्भर न रहे।
9. उपचारात्मक शिक्षण में बच्चे को यह नहीं कहा जाए कि तुम्हें यह नहीं आता, तुम यह भी नहीं कर सकते आदि।

10. उपचारात्मक कार्य गतिविधियों से शुरू हो तथा अंत भी गतिविधि से हो। इससे बच्चे में कार्य करने के प्रति रूचि बनी रहेगी।
11. योजना बनाते समय बच्चे को भी शामिल किया जाए जिस कमी को पूरा करना चाहें उस पर चर्चा हो, गतिविधियाँ की जाएं।
12. बच्चे को सदैव प्रोत्साहन देते रहने चाहिए। उसकी सफलता पर इनाम देना चाहिए।
13. समूह में कार्य करते समय बच्चे से वह कार्य करवाएँ जिसे वह कर सकता है।

बच्चे के उपचारात्मक शिक्षण में यह आवश्यक है कि उसे चुनौती दी जाए। चुनौतीपूर्ण कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया जाए। उपचारात्मक शिक्षण में लचीलापन हो। बीच-बीच में टेक्नोलॉजी का उपयोग करके बच्चों के समक्ष मूर्त शिक्षण प्रस्तुत किया जाना जरूरी है। बच्चों की जिज्ञासा का सदैव सम्मान करना आवश्यक है ताकि उपचारात्मक शिक्षण में बच्चे अपने कार्य के लिए स्वयं तैयार हो सकें, यह भी सुनिश्चित किया जाए कि अध्यापक गतिविधियों के साथ कार्य शुरू करें और अंत भी गतिविधियों के साथ करें। बच्चों में कार्य करने के प्रति रुचि बनी रहे। समूह में कार्य करते समय बच्चों से वह कार्य करवाएं जिसे वे सरलता से कर सकें।

अध्याय-4
सामान्य शिक्षण के दौरान ही उपचारात्मक शिक्षण की प्रक्रिया

शत-प्रतिशत बच्चों को सिखाना हमारा लक्ष्य है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए विद्यालय और कक्षा कक्ष की कार्यप्रणाली पर एक दृष्टि डालने की आवश्यकता है। यदि हम चिंतन करें,तो हम जान पाएँगे कि कक्षाएँ कैसे एक ही धुरी पर टिकी होती हैं। सीखने के लिए विद्यार्थी हमेशा शिक्षक पर आश्रित होते हैं, और शिक्षक भी यह मानते हैं कि जब तक मैं बच्चों को नहीं सिखाऊंगा, तब तक वे नहीं सीख पाएँगे।

आइए, एक परिस्थिति पर विचार करें कि एक शिक्षक अगस्त के महीने तक हिंदी के पाँचवें पाठ को पढ़ा चुके हैं। किसी कारणवश उन्हें छुट्टी लेने की आवश्यकता पड़ गई या गैर शिक्षकीय कार्य जैसे- जनगणना, चुनावी कार्य आदि के लिए जाना पड़ गया। तो वे विद्यार्थी जो पढ़ना जानते हैं, वे भी छठवां पाठ नहीं पढ़ते। विद्यार्थियों को लगता है ,जब तक शिक्षक नहीं पढ़ाएंगे, तब तक हम इस पाठ को नहीं पढ़ पाएँगे? और यदि शिक्षक 10 दिनों तक अन्यत्र कार्यों में लगा रहा तो 10 दिनों तक बच्चों की शिक्षा बाधित होती हैं। 10 दिनों तक बच्चे उस विषय पर किसी भी तरह का कोई काम नहीं करते हैं। उनको लगता है, जब शिक्षक आएँगे, पढ़ाएंगे तब हम पढ़ेंगे। शिक्षक भी 10 दिन बाद आने पर पाठ 6 से ही शुरू करते हैं। धीरे-धीरे यह एक आदत बन जाती है कि बच्चों को शिक्षक के पीछे-पीछे ही चलना है, न केवल बच्चों में वरन शिक्षको में भी। यदि शिक्षक बच्चों को स्वयं सीखने की स्वतंत्रता देने लगें, तो बच्चे तेजी के साथ स्वयं और चुनौती के आधार पर आगे बढ़ते जाएंगे। शिक्षक उनके कार्यों को देख भी सकेंगे और धीमी गति से सीखने वाले बच्चों के लिए समय का प्रबंधन कर पाएँगे। सीखने की गतिविधियों का प्रबंधन कर, उनका आकलन , मूल्यांकन कर कमियों को जानने और उन्हें दूर करने का कार्य कर पाएँगे। बच्चे स्वयं आगे बढ़ेंगे तो शिक्षक पर उनका भार भी कम हो जाएगा। इस प्रकार यदि हम एक अन्य परिस्थिति पर विचार करें कि बच्चे सीखने में या पढ़ने में आत्मनिर्भर हो गए हैं। उन बच्चों को थोड़ी-सी प्रेरणा देकर, हम कहें कि आप अगला पाठ पढ़िए और समझिए, उनके उत्तर स्वयं लिखने का प्रयास कीजिए या गणित के अभ्यास कीजिए, तो हो सकता है कि आपकी कक्षा के 40 में से 8 बच्चे पुस्तक को पढ़ें और पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिख लें। उस पाठ पर उनकी समझ पक्की हो जाती है, तो फिर हम उन बच्चों की सहायता से उस पाठ को बाकी बच्चों को सिखा सकते हैं। तो इस तरह से यदि शिक्षक कक्षा में नहीं भी होंगे, तो भी आत्मनिर्भर बच्चों की सहायता से सीखने-सिखाने की प्रक्रिया जारी रह सकती है। जो बच्चे स्वयं से सीख गए हैं निश्चित रूप से उन बच्चों की पाठ्यवस्तु की अवधारणा मजबूत होगी ,क्योंकि उन्होंने स्वयं से सीखा है।

इस तरह की जो सीखने की बाधाएँ हैं या परंपराएँ हैं जिसके कारण से शिक्षक और बच्चों में अनायास आदतें विकसित हो जाती हैं कि शिक्षक के पढ़ाये बिना बच्चे नहीं सीख सकते। शिक्षकों को लगता है कि जब तक वे नहीं सिखाएंगे, तब तक बच्चे आगे बढ़ नहीं सकते। शिक्षक की भूमिका, बच्चों को सीखने के लिए प्रेरित करना है। बच्चों को भविष्य के लिए तैयार करना है। लेकिन भविष्य कैसा होगा, यह शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों को ही नहीं पता है। ऐसे समय में बच्चों के लिए खुद से सीखना, अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। इसलिए सीखने का मतलब learning to learn है।

अपने विद्यालय के बच्चों का स्तर चिन्हांकन कर निम्नलिखित सिद्धांतों से सीखने की गति को तेज़ किया जा सकता है-

1. बच्चों को खुद सीखने के लिए प्रेरित करें

बच्चे को खुद से सीखने के लिए प्रेरित करने की कुंजी इस सिद्धांत पर विश्वास करना है कि बच्चा खुद

सीख सकता है। एक बच्चा बिना शिक्षक के सिखाये सीख सकता है; यह शिक्षकों और समुदाय के लिए वर्तमान में विश्वास करना कठिन होता जा रहा है। बच्चे ने स्कूल आने से पहले कई बातें सीखी हैं। बच्चों को कई ऐसी चीजें आती हैं जो स्कूल में नहीं सिखाई जाती हैं। इसका मतलब यह है बच्चा खुद से सीखता है, शिक्षक की भूमिका बच्चे को सीखने के लिए प्रेरित करना है। बच्चों को भविष्य के लिए तैयार होना है, लेकिन भविष्य कैसा होगा यह शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों को नहीं पता है। ऐसे समय में, बच्चों के लिए खुद सीखना अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है इसीलिए सीखने का मतलब सीखना, सीख रहे हैं ।

यह स्वीकार करने के बाद कि बच्चा खुद से सीखता है, सीखना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है यह समझ में आता है, न केवल बच्चे के लिए बल्कि दूसरों के लिए भी।

बच्चों की सीखने की प्राकृतिक प्रक्रियाओं में हस्तक्षेप न होने दें, एक मार्गदर्शक के रूप में यह हमारी जिम्मेदारी है। यदि आप अपने बच्चों से पूछते हैं कि आप खुद से कब सीखना चाहते हैं? इन सवालों के जवाब से बच्चों को जानने की कोशिश करने के साथ-साथ उन्हें खुद को सीखने के लिए प्रेरित करने में मदद करने में भी उपयोगी होगा। बच्चों से बात करने से पता चलता है, उनको जो बातें अच्छी लगती हैं, जिन बच्चों को सीखने की आवश्यकता निर्माण होती है, उसमें एक उद्देश्य होता है, इसमें नवीनता होती है, एक प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण और बच्चे के लिए इसकी उपयोगिता होती है, तो ये बच्चे इसे स्वतः तीव्र गति से सीखते हैं।

हालांकि, शिक्षक के सामने असली चुनौती बच्चे की प्रेरणा को जगाना होता है। जीवन में अंतःप्रेरणा बाहरी प्रेरणा से बहुत अधिक मूल्यवान साबित होती है। इस संबंध में हम हमेशा, भीतर की आवाज, मन की बात इत्यादि शब्द अक्सर सुनते हैं। इसलिए, छात्रों का सीखना केवल पाठ्यपुस्तक और दी जाने वाली परीक्षाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि उनके व्यवहार, आचरण और संवाद द्वारा सीखने के परिणाम में भी दिखता है। यहाँ पर पाठ्यपुस्तक की सीमाओं से परे जाकर सीखने और सिखाने की प्रक्रिया होने की उम्मीद है।

जैसा कि शिक्षा शास्त्री वायगोट्स्की द्वारा ZPD(Zone of Proximal Development) में उल्लेख किया गया है कि बच्चा जो जानता है और जो नहीं जानता है उसके बीच का क्षेत्र बच्चे के शिक्षण के लिए उपयुक्त होता है। इस क्षेत्र में मार्गदर्शक की भूमिका MKO (More Knowledgeable Other) की होती है। अतः शिक्षक की भूमिका अधिक जानकार के रूप में होती है। बच्चे को जो ज्ञात नहीं है उसे सीखने के लिए राह दिखाकर आवश्यक सुविधा मुहैया करवाना और मदद करवाना ही मार्गदर्शक की जवाबदारी होती है।

2. बच्चों को स्वयं से अधिक सीखने के लिए चुनौती दें

यदि मानव मस्तिष्क को लगातार एक चुनौती पूर्ण कार्य सौंपा गया तो वह लगातार प्रवाह की स्थिति में रहता है। बच्चे स्वाभाविक रूप से विभिन्न चुनौतियों की तलाश में रहते हैं क्योंकि उन्हें लगातार सीखते रहना पसंद होता है। उन्हें लगातार कुछ नया चाहिए होता है। हमेशा नए की तलाश करना और उसे पूरा करना यही उनके जीवन की गति होती है। इसलिए, बच्चों को चुनौती देने का अधिक संबंध उनके मस्तिष्क के कार्य से होता है। मस्तिष्क, लगातार जागते हुए अपने कार्यों को सजगता से पूर्ण करने वाला अंग है। जिस प्रकार मस्तिष्क को आराम की आवश्यकता होती है, उसी तरह इसे प्रवाह में रखने के लिए कार्य की भी आवश्यकता होती है। इसके लिए हमें मस्तिष्क को पूरक क्रिया देने की आवश्यकता होती है। आधुनिक मस्तिष्क अनुसंधान से पता चला है कि मस्तिष्क के विभिन्न भागों के विशिष्ट कार्य होते हैं। भाषा, गणित, रचनात्मक कार्य, नए विचारों के लिए मस्तिष्क के विभिन्न क्षेत्र कार्य करते हैं।

मस्तिष्क के जो क्षेत्र पूरे दिन काम करते हैं, नींद के बाद भी वही क्षेत्र उत्तेजित होते हैं। इसका मतलब यह है कि मस्तिष्क के सभी क्षेत्रों को हावर्ड गार्डनर के बहु-बुद्धिमत्ता के सिद्धांत के अनुसार काम में लाया जाना चाहिए। मस्तिष्क को काम देने का अर्थ है मस्तिष्क को वह भोजन देना जिसकी उसे आवश्यकता है।

बच्चों को चुनौती देते समय आपको निम्नलिखित बातों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है:

- **चुनौती स्वीकार करने के लिए तैयारी और रवैया**

  पहले बच्चों के व्यवहार और उनकी आदतों का विश्लेषण करना महत्वपूर्ण है, साथ ही चुनौती को स्वीकार करने के लिए बच्चों की आदत और दृष्टिकोण को विकसित करना है।

- **स्वयं-प्रयास की खुशी**

  सीखने की प्रक्रिया में बच्चे का स्वयं प्रेरणा से सीखना उन्हें सबसे ज्यादा आनंद प्रदान करता है। वे विभिन्न चुनौतियों में आनंद खोजने लगते हैं। वे समय के साथ छोटी-छोटी चुनौतियों का आनंद लेते हुए बड़ी से बड़ी चुनौतियों को भी आसानी से पूरा कर सकते हैं।

  सीखने की प्रक्रिया में भावनात्मक पक्षों को अधिक महत्व दिए जाने पर भावनात्मक बुद्धिमत्ता विकसित होती है।

- **खेल और व्यायाम**

  हमारे शरीर में ऑक्सीजन की मात्रा का लगभग 20 प्रतिशत अकेले मस्तिष्क में जाता है इसलिए, बच्चों को खेलों से सीखने के साथ-साथ व्यायाम का भी अवसर देना जरूरी है। खेल और व्यायाम को चुनौती में बदलना और उसे पूरा करने के लिए लगातार मदद करना शिक्षा का कार्य है।

- **नई चीजें**

  बच्चों को लगातार नया करना पसंद होता है। यही वजह है कि छोटे बच्चे इस तरह की चीजें जल्दी सीखते हैं इसलिए नई नई चुनौतियाँ देते रहना महत्वपूर्ण है।

- **विविधता**

  चुनौतियों में विविधता लाकर मस्तिष्क के विभिन्न क्षेत्रों को क्रियाशील करने से बच्चों का समग्र विकास होता है। न केवल अध्ययन बल्कि कला, खेल, संगीत का आनंद, साहित्य में रूचि और पढ़ना, पठन आदि कई रुचियों का पालन किया जा सकता है।

- **रोजमर्रा के ढर्रे को तोड़ना**

  बच्चों को रोज-रोज एक जैसी बातें, एक जैसा काम अच्छा नहीं लगता। नतीजतन, उनकी नकारात्मकता बढ़ती है। उदाहरण के लिए, पाठ्यपुस्तक से कॉपी करना, बार-बार परीक्षा देना, पाठ को दोहराना उन्हें पसंद नहीं है क्योंकि इनमें चुनौती शून्य है।

- **अध्ययन को चुनौती से जोड़ें**

  बच्चों के दैनिक अध्ययन को चुनौतियों के साथ-साथ विभिन्न गतिविधियों, परियोजनाओं, बच्चों की रुचियों, जोश और जुनून से जोड़ा जाए और उनसे मिलने वाले आनंद को लेने दिया जाए तो चुनौतियों का परिणाम दुगुना हो जाता है।

- **आनंददायी वातावरण और बच्चों की सुरक्षा**

  चुनौतियाँ देते समय आनंददायी वातावरण और बच्चों की सुरक्षा को ध्यान में रखना चाहिए। वास्तव में, ऐसी चुनौतियाँ जो बच्चों को आनंद देती हैं; का एक बार माहौल बन जाने के बाद बच्चे स्वयं इसकी मांग करेंगे।

- **बच्चों की माँग पर ध्यान दें**

  अधिकांश समय, हम बच्चों की मांगों पर ध्यान नहीं देते हैं और उन्हें वे चुनौतियाँ देते हैं जो हम चाहते हैं। हालाँकि, बच्चों को क्या चाहिए? इसे देखते हुए, उनकी पसंद के अनुसार चुनौती दें तो उसके पूरा होने या उसके पीछे की सफलता के प्रति 100 प्रतिशत आश्वस्त हो सकते हैं इसलिए अगर बच्चों की माँगों के अनुसार चुनौती दी जाती है, तो परिणाम अधिक मिलेगा।

- **विभिन्न चुनौतियों की सूची बनाना**

  शिक्षक और पालक दोनों ही, बच्चों या विद्यार्थियों को कौन सी चुनौतियाँ देना उचित रहेगा, उसे क्या चाहिए? इत्यादि को सोच समझकर पहले सरल, फिर मध्यम और अंत में कठिन चुनौतियाँ देते हैं तो बच्चों में चुनौतियों को सामना करने की क्षमता बढ़ती है और सीखने की गति भी तेज हो जाती है।

- **इक्कीसवीं सदी के कौशल :**

  इक्कीसवीं सदी के कौशल विकास के लिए चुनौतियाँ दी जानी चाहिए जैसे रचनात्मक सोच (Creative Thinking), तार्किक सोच (Critical Thinking), संवाद कौशल (Communication Skills), सहयोगात्मक सोच (Colaborative Thinking), संवेदनशीलता, (Compassion), विश्वास (Confidence) आदि।

  यदि आप छात्रों की उम्र, विषय, रुचि और वर्ग के आधार पर चुनौतियों की सूची बनाते हैं तो उन्हें कई तरह की चुनौतियाँ दी जा सकती हैं। वास्तव में चुनौती देना ही, अब एक बड़ी चुनौती है इसलिए चुनौतियाँ देते समय सभी को सतर्क रहना चाहिए। इसके लिए हमें भी चुनौतियों का सामना करने में सक्षम होने की ज़रूरत है।

- **चुनौती देने में ध्यान रखने योग्य बातें-**
  - चुनौती बच्चों के स्तर एवं रुचि के अनुरूप हो।
  - ऐसे वातावरण का निर्माण करें जिसमें बच्चे स्वयं एवं स्वेच्छा से चुनौती स्वीकार करें।
  - चुनौती की न्यूनतम सीमा तय हो परंतु अधिकतम सीमा का निर्धारण न हो।
  - उदा- किसी पाठ से न्यूनतम 25 पूर्ण वाक्य लिखना है। अधिकतम की सीमा नहीं।
  - चुनौतियों को स्वीकार करें, ताकि आप जीत के आनंद को महसूस कर सकें।

'' शांत समुद्र एक कुशल नाविक नहीं बना सकता ''

3. पियर लर्निंग, ग्रुप लर्निंग के लिए विषय-मित्र, गली मित्र बनाना

सक्रिय अधिगम के विषय में प्राचीन काल में भी बहुत चिंतन हुए है। भारतीय परंपरा में उपनिषद काल में ऐसे बहुत से कथानक मिलते हैं जिनमें यह दर्शाया गया है कि सीखने की पहल और उसके द्वारा किए गए

प्रयासों के बाद ही उसे ज्ञान की प्राप्ति होती है। छांदोग्य उपनिषद में वर्णित उद्दालक-श्वेतकेतु का आख्यान, कठोपनिषद में वर्णित यम-नचिकेता का आख्यान इनमें से मुख्य है।

भारतीय परंपरा का निम्नलिखित सुभाषित भी इसकी पुष्टि करता है :-

आचार्यात पादमादत्ते

पादं शिष्य स्वमेधया।

सब्रहमंचारिभ्यः पादं

पादं कालक्रमेण च।।

अर्थात सीखने का कार्य एक चौथाई आचार्य से, एक चौथाई अपनी मेधा और प्रयासों से, एक चौथाई सहपाठियों के सहयोग से तथा एक चौथाई परिस्थिति आने पर समय के साथ होता है।

उपर्युक्त सुभाषित सीखने वाले के द्वारा अपनी मेधा और अपने प्रयासों से सक्रिय अधिगम की ओर ही संकेत कर रहा है। आइए, देखते हैं कि यह कक्षा में कैसे संभव है :-

एक-दूसरे से सीखना (पीयर लर्निंग)-

बच्चे एक-दूसरे की मदद से बहुत अच्छे से सीखते हैं। स्वाभाविक रूप से सोचें तो बच्चों को यह आसान लगता है। पीयर लर्निंग से बच्चों को अपनी गति से और अपने वांछित समय पर सीखने के अवसर प्राप्त होते हैं। पियर लर्निंग में अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप जोड़ियाँ बनायी जा सकती हैं। उदाहरण के लिए कक्षा में बच्चों की जोड़ी, स्कूल के बच्चों की जोड़ी, आवश्यकतानुसार जोड़ी आदि।

पियर का अर्थ है कि सीखने की प्रक्रिया में दोनों की समान हिस्सेदारी होनी चाहिए अर्थात कभी पहला जोड़ीदार दूसरे को सिखा रहा है तो कभी दूसरा जोड़ीदार पहले को सिखा रहा है।

कक्षा के बच्चों की जोड़ी –

इसमें एक ही कक्षा के दो लड़के-लड़कियों के जोड़ी की अपेक्षा की जाती है। कक्षा में बच्चों को विभिन्न स्तरों में विभाजित किया गया है। उनकी अलग-अलग आकलन की क्षमताएं एक-दूसरे के अध्ययन के लिए पूरक होती हैं। जिन बच्चों की कक्षा में अच्छी अध्ययन गति है, उनका उपयोग उनकी तुलना में पिछड़ने वाले बच्चों के लिए किया जा सकता है। कक्षा में होने वाले दैनिक अभ्यास में इन बच्चों की हमेशा एक-दूसरे को मदद होती है।

स्कूली बच्चों की जोड़ी –

बड़ी कक्षा वाले के साथ छोटी कक्षा वाले छात्र की जोड़ी। बहु कक्षा शिक्षण वाले स्कूलों में इसका उपयोग अधिक व्यापक रूप से किया जा सकता है। जब छात्र घर पर होते हैं तो कक्षा का सहपाठी पड़ोसी बच्चा हो सकता है। इसलिए स्कूल की जोड़ी बनाते समय पड़ोसियों की जोड़ी बनाना भी अच्छा विचार हो सकता है। पड़ोसियों की जोड़ी गली मित्र के रूप में भी काम करती है। जब कक्षा के बच्चों में उच्च-वर्ग की क्षमताओं या बड़े बच्चों की आदतों और रीति-रिवाजों को विकसित करना चाहते हैं तो इस तरह की जोड़ी मदद करती है।

आवश्यकता अनुसार जोड़ी-

आपसी चर्चा, दो लोग मिलकर की जाने वाली परियोजना या कोई लक्ष्य बातें पूरी करनी हो तो ऐसी जोड़ी बनाई जा सकती है।

ऐसे विभिन्न प्रकार के जोड़ियों का उपयोग करने से, बच्चों का अन्य बच्चों के साथ अधिकतम संपर्क होता है। साथ ही एक ही जोड़ी के भरोसे रहे बिना विविधता समझ में आती है। उसी प्रकार, किसी बच्चे को एक साथी से सीखने में कठिनाई हो रही हो तो अन्य संभावनाएं तलाश सकते हैं। इससे सीखने के अवसर बढ़ते हैं।

पियर लर्निंग योजना लागू करते समय आने वाली चुनौतियाँ -

- बच्चा सहयोग नहीं करता, समझाने पर भी उसे नहीं समझता है।
  (छात्र एक-दूसरे की शिकायत करते हैं)
- बच्चों का विचलन, ज्यादा समय तक उनका ध्यान केंद्रित नहीं रहना।
- दो साथियों में से एक साथी की अनुपस्थिति आदि।

पियर लर्निंग की चुनौतियों को दूर करना -

पीयर लर्निंग की आदत नहीं है इसलिए चुनौतियाँ हैं। एक बार आदत बन जाने के बाद सभी चुनौतियाँ दूर हो जाएंगी।

- धैर्य और निरन्तरता बनाये रखें
- आवश्यकतानुसार विभिन्न जोड़ियाँ बनाना।
  (कभी-कभी जोड़ी में परिवर्तन करने से अध्ययन की गति बढ़ सकती है।)
- बच्चे के रूचि की चुनौती के साथ कार्य करना शुरू करें।
  (पाठ्यपुस्तकों के अलावा कार्य देना।)
- जोड़ी के रूप में कार्य की शुरुआत के समय ध्यान केंद्रित करें। लगातार प्रेरित करते रहना।
- बच्चों को पियर में उनकी भूमिका व जिम्मेदारी समझने में मदद करना।
- पियर लर्निंग से मिलने वाली खुशी का अनुभव करने दें। मिलने वाली सफलता दिखाकर और आनंद लेना सिखाएँ।
- जोड़ी में हमेशा सीखने की ही भूमिका न होकर, सिखाने की भी भूमिका हो, ऐसी व्यवस्था करना।

समूह में लिखना –

अध्ययन-अध्यापन की जरूरतों के अनुसार एक ही कक्षा के या विभिन्न कक्षाओं के छात्रों का समूह बनाना। समूह में तीन से चार छात्र होते हैं। मिश्रित अध्ययन गति वाले बच्चों का समूह होने से छात्रों को एक दूसरे का लाभ होता है। छात्रों को शिक्षक की मदद के बिना अंतहीन सीखने के अवसर प्राप्त होते हैं।

(यहां भी पियर लर्निंग की तरह समूह बनाए जा सकते हैं। चुनौतियाँ भी पियर लर्निंग की तरह ही आ सकतीं हैं और उन्हें उसी प्रकार सुलझाया भी जा सकता है।)

विषय मित्र –

एक छात्र की, दूसरे छात्र से सीखने की गति व पद्धति अध्यापक से सीखने की तुलना में बेहतर होती है। पढ़ाई करते समय आने वाली शंकाओं एवं समस्याओं का हल छात्र अध्यापक से डर या अपमानित होने की आशंका से नहीं पूछते। फिर मन में शंकाएं लेकर अध्ययन का सफर शुरू होता है, जिस रास्ते में एक पड़ाव

आता है जिसका नाम है पिछड़ने की स्थिति। आवश्यकता होना या रूचि होना इन दो स्थितियों में ही शिक्षा प्राप्त की जा सकती है। तनावमुक्त मानसिक स्थिति शिक्षा के लिए मूल आवश्यकता होती है। सभी बच्चों के सीखने की गति एक जैसी कभी भी नहीं हो सकती कुछ छात्रों को एक बार कह दो तो वे समझ जाते हैं कुछ को वही बात दो बार, तीन बार, लगातार समझनी पड़ती है, हर बच्चे की अपनी एक प्राकृतिक गति होती है। अधिक दर्ज संख्या या अध्यापक की संख्या कम होने की स्थिति में अध्यापक छात्रों के साथ न्याय नहीं कर सकता। बहु या द्विअध्यापकीय स्कूलों को देखा जाए तो साधारणतया 80 प्रतिशत सरकारी स्कूलों में यही स्थिति है। ऐसे स्कूलों में विषय मित्र की अवधारणा एक वरदान साबित हो सकती है।

इसके लिए बड़ी कक्षाओं के होशियार और उत्साही छात्रों से मदद लेनी पड़ती है। साधारण तौर पर 6 से 12 छात्रों का चुनाव करके उनके पसंद के विषय की जिम्मेदारी उस छात्र या समूह को दी जाती है। दर्ज संख्या के अनुसार एक, दो या फिर तीन छात्रों को जिम्मेदारी दी जाए तो वे अपनी पढ़ाई के साथ-साथ जिस विषय की जिम्मेदारी दी गई है उसकी भी पढाई पूरी कर लेते हैं और अपने सहपाठी विद्यार्थियों की शंकाओं का समाधान आवश्यकतानुसार कहीं भी और कभी भी करते हैं। किसी भी कक्षा के छात्र को किसी भी विषय में समस्या आती है तो वे संबंधित विषय मित्र से पूछकर शंका का समाधान कर लेते हैं। छात्र बिना किसी डर या हिचकिचाहट के पूछते हैं। विषय मित्रों को भी सिखाने में बहुत खुशी होती है। छात्र शंका का समाधान होने तक बारबार सवाल पूछ सकते हैं। यह बात अध्यापक के साथ बच्चे नहीं कर सकते।

अध्यापक की अनुपस्थिति या जब वे किसी अन्य कार्य मे व्यस्त हों या फिर ऐसा कुछ न भी हो तब भी केवल अलग अनुभव के लिए विषय मित्र छात्रों को आधारभूत संकल्पनाएँ भी सिखा सकते हैं। इस तरीके से अगर छात्रों को अवसर दिये जाएं तो अच्छे परिणाम आते हैं। अध्यापन का अनुभव छात्रों में शिक्षा के साथ-साथ आत्मविश्वास प्रदान करता है तथा छात्र सहजता से सीख भी जाते है।

विषय मित्र योजना से स्कूल में एक सामानांतर व्यवस्था तैयार होती है, जिससे अध्यापक के बिना पढ़ना-पढ़ाना, शंका निवारण, सृजनशीलता आदि सहज ही शुरू रहता है। सुबह एक घंटा या स्कूल के बाद एक घंटा समूह में बैठकर बच्चे कार्य करते हैं, इसमे हिंदी ,इंग्लिश या गणित की तैयारी आदि के बहुत अच्छे परिणाम आ सकते हैं। स्कूल के अलावा गृह अभ्यास करते समय यदि कोई शंका उत्पन्न हो जाएंतो छात्रों के अधिकार की एक सामानांतर व्यवस्था गाँव में उपलब्ध रहती है इससे शिक्षा के बारे में डर का वातावरण निश्चित रूप से कम होता है और एक बाल केन्द्रित वातावरण का निर्माण होता है।

विषय मित्रों के चुनाव करने के बाद छात्रों को उनसे विषयानुसार अवगत करवाना पड़ता है, स्कूल की समय सारणी में हर कक्षा में कम से कम एक पीरियड विषय मित्र के लिए उपलब्ध कराना पड़ता है। केवल बौद्धिक और शैक्षिक ही नहीं अपितु सामाजिक, मानसिक, भावनात्मक स्तर पर भी विषय मित्र योजना लाभदायी होती है। विषय मित्र योजना हमें जनतान्त्रिक मूल्य सिखाती है और ये मूल्य छात्रों की नस-नस में भर जाता है जिसके भरोसे उन्हें जीवन जीना होता है।

प्रमुख विषयों के साथ साथ उपविषय के लिए भी विषय मित्र की नियुक्ति की जा सकती है। स्कूल में बच्चों के भविष्य से जुडने वाली ऐसी सामानांतर व्यवस्था निर्माण करने से स्कूल का अपना उद्देश्य पूर्ण करने में मदद होती ही है साथ ही हम छात्रों को आनंद भी दे सकते हैं।

विषय मित्र योजना लागू करते समय चुनौतियाँ -

- विषय मित्र योजना तैयार करने के लिए समय आवश्यक है।
- छात्रों को शिक्षकों से ही सीखने की आदत में कमी लानी होगी।
- प्रारंभ में, विषय मित्र द्वारा पारंपरिक तरीके से विषय को पढ़ाना।

- विषय मित्र के बारे में दूसरे छात्रों से आने वाली शिकायतें। (अधिकारी जैसा व्यवहार, दण्डित करने की आदत)
- विषय मित्र द्वारा दूसरे छात्रों के विरुद्ध की जाने वाली शिकायतें। (मेरी बात नहीं सुनता, प्रश्नों का जवाब नहीं देता, बार-बार सिखाने पर भी नहीं सीखता, आदि)

चुनौतियों का सामना ऐसे करें -

कुछ भी नया और सकारात्मक करने में समय लगता है, लेकिन अपने कौशल का उपयोग करके लगने वाली अवधि को छोटा किया जा सकता है। छात्र शिक्षक से ही सीखते हैं इस सोच को बदलना; तभी बच्चों की शिक्षक पर निर्भरता कम होगी और यही स्वअध्ययन की शुरुआत होगी।

- विषय मित्र योजना शिक्षकों की मदद के लिए नहीं बल्कि बच्चों को सहज सीखने के लिए, बच्चों को सीखने में मदद हो इस उद्देश्य से लागू की गई है। जब अन्य बच्चों को पता चलता है कि विषय मित्र उनकी मदद के लिए है, तो एक-दूसरे के बारे में आने वाली शिकायतें बंद हो जाती हैं।
- विषय-मित्र शुरु में उनके शिक्षक ने उन्हें जैसे पढ़ाया वैसा ही पढ़ाता है क्योंकि शिक्षक के रूप में या उनकी अध्यापन की समझ शिक्षक के अनुकरण से ही बनी है। विषय मित्र की भूमिका, जिम्मेदारी और अन्य विद्यार्थियों की उनसे अपेक्षाएं समझने में मदद की, शिकायतें कम हो जाएंगी।

विषय मित्र योजना लागू करने में शिक्षक की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका है। धैर्य रखें। (यह समझना कि चर्चा, साझेदारी, मौज-मस्ती, खेलना एक सीखने की प्रक्रिया है।)

निरंतरता बनाए रखना

शुरुआत में बच्चों के साथ ज्यादा समय बिताएं। उन्हें आदत पड़ गई तो अपनी भागीदारी कम करते जाना।

- विषय मित्रों और छात्रों को प्रोत्साहित करें।
- प्रत्येक चरण में सूक्ष्म रूप से निरीक्षण करें।

उपरोक्त चुनौतियाँ आपकी और छात्र की इस प्रकार की आदत नहीं होने के कारण है। जैसे-जैसे काम आगे बढ़ता है, ये चुनौतियाँ गायब हो जाती हैं और खुशी, संतुष्टि मिलना शुरू हो जाती है। पीयर लर्निंग, ग्रुप स्टडीज और विषय मित्र इन तीनों के उपयोग से छात्रों के स्वयं अध्ययन की गति को तेज किया जा सकता है।

उदाहरण के लिए अगला पाठ बच्चों को घर से पढ़ कर आने के लिए कहना। जब बच्चे सुबह स्कूल पहुंचते हैं, तो अपने पियर के साथ पाठ पर चर्चा करें। कक्षा शुरू होने के बाद समूह में बैठें और पाठ के अज्ञात भागों को समझें। वास्तविक कक्षा शुरू हो जाने के बाद, पूरी कक्षा एक समूह के रूप में कार्य करेगी, उसमें शेष प्रश्नों और अनसुलझे क्षेत्रों पर चर्चा करें। इस स्तर पर शिक्षक भी सहभागी हों। इन तीनों स्तरों की चर्चाओं के बाद बचे हुए प्रश्न और समझ में न आए क्षेत्रों पर विषय मित्र की मदद लें। इस प्रकार एक पाठ हो जाने पर पाठ्यपुस्तक में आगे के पाठों के अध्ययन के लिए अवसर प्रदान करें। इसका मतलब है कि छात्रों को स्वयं अध्ययन, पियर लर्निंग, ग्रुप लर्निंग और विषय मित्र इस क्रम में सीखना अपेक्षित है

- विषय मित्र योजना के परिणाम (एक उदाहरण)

रविनारायण त्रिपाठी, शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला महली, कबीरधाम

स्वयं अध्ययन संकल्पना, चुनौती देना और विषय मित्र योजना के कक्षा में क्रियान्वयन करने से **सामने आए हुए परिणाम निम्न हैं -**

इस संकल्पना से पहले अध्यापकों द्वारा पढ़ाए जाने के बाद ही छात्र, शेष पाठों का अध्ययन करते थे। लेकिन अब वे खूब गति से अपने कक्षा का शेष पाठ्यांश पूरा करते हैं। विषय मित्रों से परस्पर सीखकर जितना गति से हो सके अध्ययन कर रहे हैं। इसमें मेरा एक निरीक्षण रहा है कि बच्चों छात्रों की अपनी एक अलग भाषा होती है उस भाषा का योगदान इस स्व-अध्ययन प्रक्रिया में महत्वपूर्ण होता है। मेरी कक्षा में दो साल पहले नम्रता नाम की एक छात्रा थी उसे पठन में कठिनाई थी। मैंने भरपूर प्रयास किया लेकिन जब-जब मैं उसे पढाना चाहता था तब वो रो पड़ती थी। अतः मैंने हताश होकर कक्षा के विषय मित्र, विकास नामक छात्र, जिसे मैं दलनायक कहता हूँ, से कहा कि अब तुम ही उसे पढ़ाओ। तब आश्चर्य की बात है कि वह केवल एक महीने में ही गति पूर्ण पठन करने लगी। इससे एक बात ध्यान में आती है कि जब हम किसी बच्चे की ओर विशेष ध्यान देना शुरू करते हैं तो उनमें हीन भावना आने लगती है। विषय मित्र संकल्पना में इस बात की कोई जगह नहीं रह जाती।

अध्यापन के बाद अगर छात्रों से अध्यापक ने पूछा- आपको समझ में आया क्या? तब छात्र अध्यापक के डर से बोलते थे कि आ गया। लेकिन टेस्ट या परीक्षा के समय परिणाम बहुत कम दिखाई देते थे। अब परिणाम दुगुने दिखाई दे रहे हैं। इससे यह समझ में आया कि छात्र पढ़ाने से ही सीखते हैं यह सोच गलत है। वे अपने आप भी गति से सीख सकते हैं।

4. छात्रों की जिज्ञासा का सम्मान करें

वास्तव में प्रत्येक बच्चे में एक जन्मजात जिज्ञासा होती है। हर बच्चा जन्म के साथ ही जिज्ञासा लाता है। उन्हें जानना होता है कि दुनिया कैसे चलती है? दुनिया कैसे काम करती है? लेकिन इस प्राकृतिक जिज्ञासा को अक्सर हम नजर अंदाज कर देते हैं। पालक, शिक्षक, मित्र और परिवार बच्चों में जिज्ञासा पैदा करने के लिए संघर्षरत रहते हैं। हालांकि बाहरी प्रेरणा भी जिज्ञासु रवैया बनाती है लेकिन वह ज्यादा टिकती नहीं है। इसके विपरीत बच्चे की आंतरिक इच्छा ही जिज्ञासा का सही रूप है। इसी के चलते हर बच्चा दुनिया में और उसके आसपास होने के विभिन्न अनुभवों को ग्रहण करने के लिए संघर्ष करता है।

उदाहरण के लिए प्रत्येक बच्चा अपनी पंचेंद्रियों से विभिन्न ध्वनियों, आकृतियों, रुचि की वस्तुओं को देखता-सुनता, स्पर्श करता है और अपनी जिज्ञासा को संतुष्ट करता है। इन विभिन्न अनुभवों के माध्यम से छात्र का आत्मविश्वास मजबूत होता है तो हम सभी को समझना होगा कि Every Child is Curious हर बच्चे में जिज्ञासु प्रवृत्ति होती ही है केवल उसे जागृत करने के लिए अलग-अलग अनुभव और वातावरण देना पड़ता है।

जिज्ञासा एक विशेष दृष्टिकोण है जो बच्चे को कोई भी नयी बात को ढूँढने में सहायता करती है। जिससे वह बच्चा विभिन्न नवाचारों की खोज, उत्सुकता निर्माण करने तथा आश्चर्यचकित करने वाली बातों की खोज हमेशा करते रहता है।

हालांकि यह जिज्ञासा उम्र और स्तर के अनुसार अलग होती है और पूरी तरह से इच्छा पर आधारित होती है।

इच्छाएँ जैसे भिन्न होतीं हैं वैसे ही जिज्ञासा भी भिन्न होती है। इसलिए अगर हर बच्चे के बारे में सोचें तो पहले पता लगाना होगा कि उनकी दिलचस्पी किसमें है। इससे जिज्ञासा जगाने की ओर आगे बढ़ सकते हैं। शिक्षण प्रक्रिया में जिज्ञासा एक महत्वपूर्ण कारक है। इस जिज्ञासा को क्रियाकलाप में लाने के लिए शिक्षा क्षेत्र में कई तरह के प्रयोग और चिंता-मुक्त, भय-मुक्त वातावरण बनाने की आवश्यकता है।

इस जिज्ञासु रवैये को जगाने के लिए निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना होगा:

रूचि पैदा करना

रुचि जिज्ञासा की कुंजी है। इसलिए छात्र अपनी इच्छा और अभिरुचि का पीछा करें। इसलिए प्रत्येक छात्र की पसंद उत्सुकता को जानते हुए बच्चे को स्कूल में सभी प्रकार के काम करने की स्वतंत्रता दी जानी जरूरी है।

रूचि निर्माण करना और मूल रूप से रूचि होना ये दो अलग-अलग बातें हैं। बच्चे की प्राकृतिक रुचि उसे तेजी से आगे बढ़ाती है। निर्माण की गई रूचि भी सही वातावरण देने पर उतनी ही प्रभावी हो सकती है। हमें प्राकृतिक रुचि को बरकरार रखते हुए विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से पैदा की गई रुचि को क्रियान्वित करना होता है।

हर बच्चे की पृष्ठभूमि का विचार करें

बच्चों की पृष्ठभूमि ज्ञात होने से बच्चा किन परिस्थितियों से आया है? उनकी पृष्ठभूमि क्या है? इससे बच्चे की रुचि और जिज्ञासा का अनुमान लगाया जा सकता है?

मुक्त या खुले प्रश्नों का उपयोग

गीत, कहानी, कथा-संवाद पाठ, कविता, खेल इत्यादि पर खुले प्रश्न पूछना प्रश्न बनाना और उत्तर देना, उत्तर खोजना आदि गतिविधि क्रियान्वित कर सकते हैं।

दिनचर्या बदलें

छात्रों और शिक्षकों की दैनिक गतिविधियाँ उबाऊ हो जाती हैं। उसमें बदलाव लाकर बच्चों की रुचि और उत्सुकता पैदा करने वाली बातें कर सकते हैं। "कार्य में परिवर्तन ही विश्राम है" के रूप में विविधता ला सकते हैं।

स्वतंत्र रूप से सोचने के लिए पर्याप्त समय दें।

छात्रों को स्वतंत्र रूप से काम करने के लिए पर्याप्त समय देना आवश्यक है।

लाइब्रेरी का अधिकतम उपयोग

बिना पुस्तकालय वाले स्कूल को बिना इंजन का जहाज़ कहा जाता है। इसलिए स्कूल में पुस्तकालय, पुस्तकों, पत्रिकाओं, पुरानी पुस्तकों के लगातार प्रदर्शन और पठन-लेखन से जिज्ञासा पैदा हो सकती है।

आश्चर्यचकित करने वाली बातें करना

आश्चर्य नई चीजों में अंतर्निहित होता है यह समझकर अभिनव प्रयोग सृजनशीलता के साथ छात्रों को आश्चर्यचकित करने वाली बातें कक्षा और स्कूल के वातावरण में घटित होना चाहिए।

मन में आने वाले प्रश्नों के उत्तर खोजना

यहां तक कि अगर आपके पास उन सभी प्रश्नों के जवाब हैं तब भी बच्चों को अपने स्वयं के प्रश्नों के उत्तर खोजने के लिए प्रेरित करें। ज्यादातर प्रश्नों के जवाब बच्चों को ही खोजने के लिए कहें। ऐसा अवसर बार बार प्रदान करें।

बच्चों को पूछने के लिए प्रेरित करें

छात्रों को सतर्क रहने के अलावा उनमें स्वतंत्र सोचने की क्षमता विकसित हो इसके लिए उन्हें लगातार प्रश्न पूछने के लिए उकसायें। क्यों? कैसे? किस लिए? क्या? कौन-सा? समय आने पर इस तरह के सवाल आसानी से पूछना आना चाहिए।

यात्रा करने और नए स्थानों को देखने भ्रमण के लिए प्रोत्साहन (विजिट)

बच्चों को नई जगहों पर ले जाना, यात्रा करवाना, कक्षा एवं स्कूल में होते रहना चाहिए।

छात्रों की रूचि का अवलोकन

यह मामला हमारे लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है और यदि उनकी पसंद समझ में आए तो उस प्रकार की विभिन्न गतिविधियों, कार्यक्रमों, परियोजनाओं, अनुसंधान आदि को अंजाम दे सकते हैं। ये सभी बातें कक्षा में, स्कूल में, हर बच्चे के साथ होते रहने के लिए हममें भी उत्सुकता का निर्माण करने की आवश्यकता है।

"मन में नया विचार आ गया तो वह कभी भी अपने मूल आकार में नहीं लौटता है"

- अल्बर्ट आइंस्टीन

5.सीखने की प्रक्रिया में प्रौद्योगिकी का उपयोग

शिक्षा प्रक्रिया में प्रौद्योगिकी के उपयोग के बारे में सोचते ही वाई-फाई से जुड़ी डिजिटल क्लास दिमाग में आती है। लेकिन प्रौद्योगिकी में तेजी से विकास बच्चों के सीखने में प्रौद्योगिकी के उपयोग के लिए पूरक साबित हो रहा है। उदाहरण के तौर पर मोबाइल ने सीखने को बहुत आसान बना दिया है। साथ ही, यह कहा जाता है कि पाठ्यक्रम सीमित होता है तथा वे बच्चों को भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार नहीं करते। भविष्य में क्या या किन बातों को करने की आवश्यकता होगी आज कोई नहीं बता सकता। ऐसी स्थिति में एक चीज अवश्य की जा सकती है और वह यह है कि बच्चों को तकनीक की मदद से कैसे सीखते हैं यह सिखाना। एक बार जब बच्चा 'सीखना कैसे है' यह सीख जाता है, तब बच्चे खुद से बहुत कुछ सीख सकते हैं। प्रौद्योगिकी खुद से सीखने का एक प्रभावी तरीका है।

Google बोलो ऐप पढ़ना सीखने में मदद करता है। इस ऐप में दीया नाम की सहयोगी बच्चों को पढ़ना सिखाती है। मोबाइल तकनीक के कारण बच्चे इसे पसंद करते हैं। कहने का मतलब यह कि बच्चों के पढ़ने के लिए बहुत सारी किताबें उसमें उपलब्ध हैं। बाजार से खरीदकर इतनी पुस्तकें बच्चों को उपलब्ध करवाना आसान नहीं है। अतः मोबाइल एक खजाना है। इसलिए बहुत सारी चीजें उपलब्ध हो सकती हैं यह हमें समझने की जरूरत है।

बोलो ऐप का उदाहरण लें तो उस पर बच्चे स्कोर करते हैं और वह स्कोर शिक्षक के माध्यम से पालकों के व्हाट्सएप ग्रुप पर साझा किया जाता है। परिणामस्वरूप, पूर्व में माता-पिता अपने बच्चों को मोबाइल नहीं देते थे, लेकिन जब उन्होंने आसपास के बच्चों के स्कोर देखे और समझ आया कि गूगल स्कोर होता है, तो पालकों ने अपने बच्चों को google bolo app का उपयोग करने के लिए मोबाइल देना शुरू कर दिया। नतीजतन, कुछ पालक जिनके पास एंड्रॉइड मोबाइल नहीं थे, उन्होंने एंड्रॉइड मोबाइल खरीदा और उसे अपने बच्चों को उपयोग करने के लिए दिया।

आपको समझना होगा कि एंड्रॉइड मोबाइल केवल एक मोबाइल नहीं है अपितु वह सीखने का एक खजाना है। कुछ ऐप को डाउनलोड करने के बाद इंटरनेट की आवश्यकता नहीं होती है। वह ऑफलाइन चलते हैं। ये सभी लाभ हमें मोबाइल के माध्यम से मिल रहे हैं और इसलिए हमें सीखने की प्रक्रिया में इनका उपयोग करना चाहिए। बहुत सारी अन्य चीजें मीडिया में उपलब्ध हैं इसलिए जब बच्चे मोबाइल का उपयोग करते हैं तो उन्हें तार्किक सोच की आदत में पड़ जाती है। साथ ही जिन विषयों के बारे में शिक्षक को पता नहीं है, जो विषय शिक्षक नहीं कर सकते हैं वे प्रौद्योगिकी के माध्यम से की जा सकती हैं। शिक्षक को सब कुछ पता हो यह संभव नहीं। Youtube Google सर्च, या शिक्षा के लिए अलग-अलग ऐप उपलब्ध हैं। इन सभी की मदद से बच्चों के सीखने की गति बढ़ने सकती है और हमें इसे बढ़ाने की आवश्यकता है। इसलिए शिक्षा में प्रौद्योगिकी का उपयोग आवश्यक है।

6. सेल्फ़ी विथ सक्सेस

प्रशिक्षण के बाद उसी दिन प्रशिक्षित शिक्षकों का व्हाटसअप/टेलीग्राम ग्रुप जरूर बनाया जाना चाहिए। क्योंकि दूसरे दिन से शिक्षक अपनी कक्षा की गतिविधियों, सफलताओं को ग्रुप में शेयर कर सकें।

व्हाटसअप/टेलीग्राम ग्रुप में क्या क्या शेयर करें ?

- अपनी सफलता को शेयर करें।
- कठिनाई और समस्याओं को शेयर करें तथा उन कठिनाईयों/समस्याओं का समाधान भी शेयर करें।
- बच्चों को दी जाने वाली चुनौतियाँ भी शेयर करें।
- चुनौतियों की सूची शेयर करें।
- किसी भी पाठ को पढ़ाने के पहले उस पाठ में दी जाने वाली चुनौतियाँ एवं पाठ से बाहर की चुनौतियाँ भी शेयर करें।
- इन 5 बिंदुओं पर कार्य करने के पश्चात अपने अनुभव भी लिख कर शेयर करें।
- सेल्फ़ी विथ सक्सेस शेयर करें।
- जब आप उपरोक्त चीजें शेयर करेंगे तो हम सभी शिक्षक एक दूसरे से सीखने सिखाने का काम कर अपनी कक्षा को समृद्ध करेंगे और धीरे-धीरे हमारा व्हाटसअप ग्रुप एक दूसरे से सीखने सिखाने वाले समाज और संस्कृति के रूप् में परिवर्तित होता चला जाएगा।

शिक्षा प्रणाली को देखते हुए एक शिक्षक के रूप में, यह महसूस किया जा सकता है कि शिक्षा क्षेत्र या शिक्षक के बारे में नकारात्मक पहलू बहुत तेजी से फैलते रहते हैं। समाज में इसकी चर्चा होती है। लेकिन जिस हद तक नकारात्मक मामलों पर चर्चा होती है, उतनी शिक्षा के सकारात्मक पहलुओं पर नहीं होती है। जब इसके कारणों की तलाश करते हैं, तो पता चलता है कि शिक्षा प्रणाली एक महत्वपूर्ण कारक के रूप में है। अतः एक शिक्षक खुद को प्रचार से दूर रखता है। यही कारण है कि उनके द्वारा की जाने वाली सकारात्मक बातें अन्य लोगों तक पहुंचती ही नहीं है। परिणामतः, अच्छी बातों का प्रचार प्रसार नहीं होता और बुरी बातें फैलते रहती है। सेल्फी विद सक्सेस को इन सभी चीजों के समाधान के रूप में देखा जा सकता है। सफलता आने पर सेल्फी सिर्फ एक पब्लिसिटी नहीं है, बल्कि शिक्षा प्रणाली के एक घटक के रूप में मेरा कर्तव्य है। मैं अच्छा करूं और उसमें सफलता आए तो वह मुझे दूसरों तक पहुंचानी चाहिए। इससे अन्य लोगों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरणा मिलती है। सेल्फ़ी विथ सक्सेस के शानदार परिणाम आ रहे हैं। इसका उपयोग आपके सहयोगियों के सीखने के लिए हो रहा है।

शिक्षा प्रणाली में कितना भी प्रशिक्षण दें और कितने ही समय के लिए दें, इसकी सीमा अवश्य है. फिर भी प्रशिक्षण की आवश्यकता समाप्त नहीं होगी। उस आवश्यकता को रोज पूरा करने काम सेल्फ़ी विथ सक्सेस करता है। आप व्हाट्सएप के माध्यम से सेल्फी लेकर अपनी कक्षा की सफलता, अपनी कक्षा में आने वाले अनुभव सेल्फ़ी विथ सक्सेस से साझा करते हैं। अन्य दोस्त आपकी सफलता और प्रक्रिया को समझते हैं और वे उसे अपनी कक्षा में भी क्रियान्वित करते हैं। अपनी कक्षा में क्या किया जाना चाहिए? आपको कौन सी गतिविधि करनी चाहिए? और क्या करने से सफलता प्राप्त होती है? ये सभी बातें को सेल्फी विद सक्सेस से पता चलते रहता है। इस लिहाज से सेल्फ़ी विथ सक्सेस एक मजेदार गतिविधि है।

एक और स्कूल का उदाहरण लेते हैं। कक्षा पहली की एक लड़की देख रही थी। शिक्षक ने कई बच्चों के साथ सेल्फी ली। जब उसकी सेल्फी नहीं ली जा रही थी, तो लड़की ने कहा, मेरी सेल्फी लो। उसे बताया गया कि यदि वह अध्ययन करती है, तो उसकी भी सेल्फी ली जाएगी। वह उस रात दस बजे तक पढ़ती रही। अगली सुबह, वह आई और बोली, ''आपने जो कुछ भी कहा वह मैंने पूरा किया है। अब अपने साथ मेरी सेल्फी लीजिये। खास बात है कि, यह लड़की पहली कक्षा की छात्रा थी। बच्चों को शिक्षकों के साथ सेल्फी लेना अच्छा लगता है। शिक्षकों को यह समझने की आवश्यकता है कि नकारात्मक चीजों का प्रचार करने की आवश्यकता नहीं पड़ती। लेकिन सकारात्मक चीजों का जान बूझकर प्रचार किया जाना चाहिए। इसके लिए व्हाट्स ऐप ग्रुप एक प्रभावी साधन है। शिक्षकों को शैक्षणिक उपलब्धि पर समूहों में सेल्फी साझा करना चाहिए। इससे अन्य शिक्षकों को काम करने की दिशा मिलती है। कक्षा के बच्चों को प्रेरणा मिलेगी और साथ ही साथ शिक्षा में हो रही अच्छी

बातों का समाज में प्रचार-प्रसार होगा। सब मिलाकर, सकारात्मक माहौल बनाने के लिए सेल्फ़ी विथ सक्सेस बहुत उपयोगी हो सकती है।

एक रोचक उदाहरण- दैनिक अभ्यास के बाद रोज बच्चों की सेल्फी लेते हुए देखकर पहली कक्षा की एक छात्रा पायल ने एक पूरा पेज लिखा और मुझे दिखाया। मैंने कहा कि ठीक है और वह बैठ गई। एक बार फिर उसने मुझे एक से सौ तक की संख्याएँ लिखकर दिखाईं। मैंने उसे बहुत अच्छा कहा। वह मुस्कुराई और बैठ गई। थोड़ी देर बाद उसने एक पट्टी पर फूल बनाया और मुझे दिखाया। मैंने उससे कहा, ओह, आज पायल बहुत अध्ययन कर रही है। वह मुस्कुराई और फिर से बैठ गई। बाद में भोजन की छुट्टी हुई। उस छुट्टी में भी उसने बाहर बोर्ड पर नंबर लिखकर दिखाया। मैंने उसे बहुत बढिया very good कहा। वह हंसी और अपनी जगह पर जाकर बैठ गई। 4 बजे वह मेरे पास आई और कहा, 'मैम, मैंने आज खूब पढ़ाई की है। मेरे साथ सेल्फी कब लेंगीं। मुझे बहुत आश्चर्य हुआ। फिर मैंने उसके साथ सेल्फी ली। वह बहुत खुश हुई। मुझे भी खुशी हुई।

व्हाट्स ऐप ग्रुप में शिक्षक की भूमिका -

शिक्षकों का whatsapp/telegram ग्रुप बनाना।

ग्रुप की हर पोस्ट को ध्यान से पढ़ें। व्हाट्स ऐप ग्रुप के लिए कम से कम एक से डेढ़ घंटा समय रोज दें।

अपनी उपलब्धियों को समूह में साझा करना।

कक्षा के दैनिक अध्यापन या कक्षा के क्रियाकलाप समूह में साझा करना।

whatsapp/telegram में होने वाली चर्चा में भाग लें।

पोस्ट लिखना कभी कभी बड़ा काम लगता है। इस काम को सरल करने के लिए speech note जैसे ऐप का उपयोग करें।

अध्याय-5
चुनौती कैसे दें ?

वास्तव में, चुनौती देना ही एक बड़ी चुनौती है। यदि ध्यान से देखा जाए तो यह कहा जा सकता है कि जिस शिक्षक को सही तरीके से बच्चों को चुनौती देना आ गया तो समझिए कि उसने बच्चे को स्वयं से अधिक सीखने के लिए उसके अंतर्मन को जगा दिया। इसलिए चुनौतियाँ देते समय शिक्षक को सतर्क रहना चाहिए। बच्चों को दी जाने वाली चुनौतियाँ जितनी अधिक सटीक और मजबूत होगी, बच्चों का दिमाग उतना ही अधिक उद्वेलित होगा और वे उतना ही अधिक चुनौतियों को पूरा करेंगे। चुनौतियाँ जितनी अधिक पूरी होती जायेंगी, बच्चे उतनी ही अधिक तेज गति से सीखते चले जायेंगे।

नीचे विषयवार एवं कक्षावार कुछ अच्छी चुनौतियों के उदाहरण दिए गए हैं, आप इसी तरह से और अन्य चुनौतियाँ बनाकर बच्चों के साथ काम करें।

चुनौतियों की सूची

कक्षा - दूसरी

विषय - हिन्दी

पाठ - आई एक खबर

पाठय पुस्तक से दी जाने वाली चुनौती	पाठय पुस्तक से बाहर की चुनौती
1. दिल्ली' से मिलते-जुलते शब्दों की सूची कौन-कौन बना सकते हैं? जैसे- बिल्ली, खिल्ली। 2. दिए गए शब्दों के अर्थ अपनी भाषा में कौन -कौन बता सकते हैं? बताओ। शब्द-समंदर, खारा,लात। 3. दिए गए अक्षर ग्रिड से कौन कितने नए शब्द बना सकता है? 4. पाठ को हाव -भाव के साथ पढ़कर कक्षा में कितने लोग सुना सकते हैं? 5. पूरी पुस्तक में आए संयुक्त अक्षरों वाले सबसे अधिक शब्दों को कौन छाँट सकता है? जैसे-मक्खी। 6. शब्दों की रेल बनाओ। कौन कितने डिब्बे बना सकता है? जैसे-मटका-कागज-जग 7. बंदरों को मटके के अंदर देखकर हाथी क्यों रोया होगा? अपने समूह में चर्चा करो। 8. बिंदी वाले शब्दों(जैसे- अंदर) के रूप बदलकर अन्दर (इस तरह) लिखो। कौन कितने शब्दों को बदल सकता है?	1. टिड्डे ने हाथी को क्यों मारा होगा? क्या ऐसा सम्भव है? अपने समूह में चर्चा करके अपनी बात सबको कौन बता सकते हैं? 2. हाथी अपनी सूँड़ का उपयोग किन- किन कामों में कर सकता है? कौन कितने काम पता करके आ सकता है? 3. खबर पहुँचाने के लिए आजकल कौन-कौन सी टेक्नोलॉजी या एप्स का उपयोग किया जाता है और कैसे? कक्षा में सबको कौन कौन बता सकते हैं? बताओ। 4. तुम्हारे अनुमान से सबसे छोटा और सबसे बड़ा जीव क्या हो सकता है? कौन सबसे छोटे और सबसे बड़े जीव के बारे में बता सकता है?सोचकर उसके बारे में बताओ। 5. इस कविता को कहानी बनाकर कक्षा में कौन सुना सकता है? 6. इस कविता को नाटक के रूप में बदल कर अपनी कक्षा में कौन-कौन खेल सकते हैं? 7. इस कविता में हाथी को रोना आया था। तुम्हें कब-कब रोना आया है? कक्षा में अपनी बात कौन शेयर कर सकता है? 8. इस पाठ में कई जानवरों के नाम आए हैं। तुमने कौन-कौन से जानवर देखे हैं (वास्तव में या टीवी में भी), तुम्हें अगर लगता है कि इनमें से किसी जानवर को तुम्हारे साथियों को बताना चाहिए तो उसके बारे में पूरी कक्षा को बताने वाला कौन है? 9. इस पाठ में तुम्हें कौन-कौन से शब्द नए लगे, जिनके अर्थ तुम्हें नहीं मालूम, उनकी सूची बनाकर उनके अर्थ अपने शिक्षक से पूछो। सबसे अधिक नए शब्द कौन पूछता है? देखते हैं। 10.इस पाठ को अपने हिसाब से किसी अलग लय-ताल में स्वतंत्र मनमर्जी धुन में पढ़कर कितने लोग सुना सकते हैं?

कक्षा - तीसरी

विषय - हिन्दी

पाठ - जंगल में स्कूल

पाठ्य पुस्तक से दी जाने वाली चुनौती	पाठ्य पुस्तक से बाहर की चुनौती
1. कौन-कौन जानवरों के नाम बताकर उनकी आवाजें निकाल सकता है ? 2. खुशी-खुशी, गाते-गाते, इधर-उधर जैसे मिलते जुलते शब्द बनाकर उनके वाक्यों में प्रयोग कौन-कौन कर सकता है ? 3. कौन, क्यों, कैसे, कब वाले सबसे अधिक प्रश्न कौन बना सकता है ? 4. बब्बन स्कूल क्यों नहीं जाना चाहता था? 5. ''दार'' प्रत्यय लगाकर सबसे अधिक शब्द कौन बना सकता है ? 6. इस पाठ के पात्रों का अभिनय कौन-कौन कर सकता है?	1. जंगल में स्कूल हो सकता है ? यदि हाँ तो किसे टीचर रखते और क्यों ? 2. बब्बन स्कूल से न भागे, इसके लिए आप क्या करते ? 3. जब आपको शाबासी मिलती है, तब आप सबसे पहले किसे बताते हैं और कैसे बताते हैं?

कक्षा - तीसरी

विषय - पर्यावरण

पाठ - आओ नक्शा बनायें

पाठ्य पुस्तक से दी जाने वाली चुनौती	पाठ्य पुस्तक से बाहर की चुनौती
1. इस पाठ को स्वयं से पढ़कर कौन समझ सकता है ? 2. पाठ के दिये प्रश्नों के अलावा और सबसे अधिक प्रश्न कौन बना कर ला सकता है ? 3. नक्शा क्या होता है, यह कौन बता सकता है ? 4. पाठ में दिये संकेत चिन्हों के जैसे ही आप अपने आस-पास की वस्तुओं के लिए कौन-कौन से संकेत चिन्ह बनाकर दिखा सकते हैं ? 5. कौन-कौन अपने गांव का नक्शा बना सकते हैं ?	1. इस नक्शे में कौन-कौन अपना जिला, ब्लॉक और गांव खोजकर दिखा सकता है ? 2. घर से स्कूल तक आने में रास्ते में आने वाले भवनों को कौन सबसे पहले लिखकर दिखा सकता है ? 3. नक्शे में नदी, नहर, अस्पताल, मंदिर, ग्राम पंचायत, विद्यालय के संकेत चिन्ह कौन-कौन दर्शा सकता है ? 4. किसी राहगीर द्वारा पता पूछने पर उसे मौखिक रुप से कौन रास्ता बता सकता है ?

कक्षा - तीसरी

विषय - गणित

पाठ - मुद्रा

पाठ्य पुस्तक से दी जाने वाली चुनौती	पाठ्य पुस्तक से बाहर की चुनौती
1. कौन इस सिक्के या नोट को पहचान कर बता सकता है ? 2. सिक्कों और नोटों के प्रकारों की सूची कौन-कौन बना कर ला सकता है ? 3. पैसे किस-किस काम आते हैं, इसे कौन-कौन बता सकता है? 4. कौन-कौन नोटो का आकार बना कर लायेंगें ?	1. नोटों और सिक्कों में क्या-क्या अंकित है, इसे कौन-कौन बता सकता है ? 2. 200 रु. में 1रु., 2रु, 5रु.,10रु. के कितने सिक्के प्राप्त होगें, कौन-कौन बता सकते हैं ? 3. 10 रु. के 5 नोट व 5 रु. के 10 नोट मिलकर कितने रु. प्राप्त होगें? कौन-कौन बता सकते हैं ?

कक्षा - चौथी

विषय - गणित

पाठ - भिन्न

पाठ्य पुस्तक से दी जाने वाली चुनौती	पाठ्य पुस्तक से बाहर की चुनौती
1. इस पाठ को कौन-कौन स्वयं से पढ़कर समझ सकता है ? 2. इसे दो बराबर, तीन बराबर और चार बराबर भागों में कौन-कौन बांट सकता है ? 3. छायांकित भाग का हिस्सा कितना है, कौन-कौन बता सकता है ? 4. एक छोटा भिन्न एवं एक बड़ा भिन्न चित्र रुप में कौन-कौन बनाकर दिखा सकता है ?	1. 100 पन्ने की किताब का तीन चौथाई पन्ना कौन गिनकर बता सकता है ? 2. इस बाल्टी में आधा, एक तिहाई, एक चौथाई हिस्से में पानी भरकर कितने बच्चे बता सकते हैं ?

कक्षा - पांचवी

विषय - हिन्दी

पाठ - राष्ट्र प्रहरी

पाठ्य पुस्तक से दी जाने वाली चुनौती	पाठ्य पुस्तक से बाहर की चुनौती
1. 26 जनवरी क्यों मनाते हैं ? कौन-कौन बता सकता है? 2. भारत के पड़ोसी देशों के नाम कौन-कौन बता सकता है? 3. प्रत्येक मौसम की विशेषता कौन-कौन बता सकता है? 4. ''र्'' एवं ''र्र'' चिन्हों से युक्त शब्दों का निर्माण कौन-कौन कर सकता है ?	1. हमारे देश में और कौन-कौन से राष्ट्रीय पर्व मनाये जाते हैं? लिखकर लाईये। 2. थल सेना के जवान मटमैले हरा रंग की वर्दी ही क्यों पहनते हैं? कौन बता सकता है? 3. सेना देश की सीमाओं की सुरक्षा करती है, तो राज्यों की सुरक्षा कौन करता है? कौन बता सकता है ?

5. सबसे अधिक वैकल्पिक प्रश्न कौन बना सकता है?	4. क्या आपके गाँव में या आसपास सेना में कोई नौकरी करता है? यदि हां तो उसका विवरण कौन बता सकता है? 5. क्या सेना के जवान देश की सुरक्षा के अतिरिक्त प्राकृतिक आपदाओं में भी मदद करते हैं ? यदि हां तो पिछले वर्षों में कौन-कौन सी प्राकृतिक आपदाओं में सेना ने मदद की? इसे लिखकर कौन-कौन ला सकता है?

कक्षा - पांचवी

विषय - अंग्रेजी

पाठ - Haldi's Advanture

पाठ्य पुस्तक से दी जाने वाली चुनौती	पाठ्य पुस्तक से बाहर की चुनौती
1. कठिन शब्दों के अर्थ कौन-कौन लिख सकते हैं? 2. Past Action Words को Present Action Words में बदलकर कौन-कौन लिख सकते है ? 3. आप सब घर से विद्यालय आते समय जो वस्तुयें देखते हैं, उनके नाम अंग्रेजी में लिखकर कौन-कौन दिखा सकते हैं ? 4. इस पाठ में जिराफ के बारे में कौन-कौन सी बातें बताई गई हैं ? उन्हें लिखकर कौन दिखा सकता है ? 5. इस पाठ को सबसे पहले कौन पढ़ सकता है ? 6. पाठ को पढ़ने के बाद प्रश्नोत्तर कौन-कौन ढूंढकर लिख सकते हैं ?	1. जिराफ कहाँ रहता है? वहाँ और कौन-कौन से जानवर पाये जाते हैं? उनका नाम लिखकर कौन-कौन दिखा सकते है ? 2. कौन-कौन सबसे अधिक विशेषण बना सकते हैं? 3. जानवरों पर सबसे अच्छी कविता कौन-कौन कक्षा में सुना सकते है ? 4) I must eat food, इस प्रकार के वाक्य कौन सबसे अधिक बना कर ला सकते हैं? 5) I would like to talk you. I would like to read story book इस प्रकार के वाक्य कौन सबसे अधिक बना कर ला सकते है ?

कक्षा - छठवीं

विषय - गणित

पाठ - वृत्त

पाठ्य पुस्तक से दी जाने वाली चुनौती	पाठ्य पुस्तक से बाहर की चुनौती
1. कक्षा-कक्ष में वृत्त के आकार की कितनी वस्तुयें दिखाई दे रही हैं ? कौन-कौन बता सकते हैं ? 2. प्रकार की सहायता से अलग-अलग माप के सबसे ज्यादा वृत्त कौन-कौन बना सकता है ? 3. वृत्ताकार कागज की आकृति के माध्यम से कौन-कौन त्रिज्या और व्यास निकाल सकते हैं ? 4. अलग-अलग माप के सर्वाधिक वृत्त कौन-कौन बना सकते हैं ? 5. कौन-कौन परिमाप और व्यास का अनुपात निकाल सकते हैं ?	1. अपने आसपास की वृत्ताकार वस्तुओं की सर्वाधिक सूची कौन-कौन लिखकर ला सकता है? 2. कितने लोग सायकल के पहिये की लंबाई, परिमाप माप कर ला सकते है?

कक्षा - सातवीं

विषय - गणित

पाठ - बीजीय व्यंजक पर संक्रियायें

पाठ्य पुस्तक से दी जाने वाली चुनौती	पाठ्य पुस्तक से बाहर की चुनौती
1. प्रस्तावना को पढ़कर व समझकर स्वयं से उसी प्रकार के उदाहरण सबसे अधिक कौन-कौन बनाकर बतायेंगें ? 2. प्रस्तावना को पढ़कर कौन सबसे अधिक बीजीय व्यंजक के उदाहण बना सकता है ? 3. सजातीय व्यंजको के योग कौन-कौन करके बता सकता है ?	1. स्वयं के द्वारा उपयोग की जाने वाली वस्तुओं को बीजीय व्यंजकों के रुप में लिखकर कौन-कौन ला सकते हैं ? जैसे- पेंट-शर्ट, पुस्तक-कापी आदि 2. आपके घर के कुल बैलों एवं भैसों की संख्या को बीजीय व्यंजक के रुप में कौन-कौन बता सकते हैं? 3. घर की महिलायें एवं पुरुषों की संख्या को बीजीय व्यंजक के रुप में कौन-कौन दर्शा सकते हैं ? 4. कितने लोग दो परिवार के महिला एवं पुरुषों की संख्या बीजीय व्यंजक के माध्यम से कुल महिला एवं पुरुषों की संख्या निकाल कर दिखा सकते हैं?

कक्षा - आठवीं

विषय - गणित

पाठ - समीकरण

पाठ्य पुस्तक से दी जाने वाली चुनौती	पाठ्य पुस्तक से बाहर की चुनौती
1. कौन सबसे ज्यादा समीकरण के प्रश्न बना कर दिखा सकते हैं ? 2. सबसे अधिक भाषायी समस्या कथनों का उपयोग करके कौन-कौन प्रश्न बना सकते हैं ? 3. भाषायी समस्या के कथनों को गणितीय कथन में रुपांतरित कर सकते है ?	1. आपके जन्मदिन की पार्टी में सम्मिलित लोगों के सिर एवं पैरों की कुल संख्या 300 थी तो कुल कितने लोग पार्टी में थे ? कौन-कौन बता सकता है? 2. आपके मोहल्ले में खरगोश और मुर्गियों के पैरों की संख्या 120 है और सिर की संख्या 48 है, तो बतलाईये कितने खरगोश और कितनी मुर्गियां हैं?

कक्षा - आठवीं

विषय - गणित

पाठ - सांख्यिकी (समांतर माध्य)

पाठ्य पुस्तक से दी जाने वाली चुनौती	पाठ्य पुस्तक से बाहर की चुनौती
1. प्रस्तावना को पढ़कर कितने लोग बतायेंगे कि समांतर माध्य क्या है? 2. अर्धवार्षिक परीक्षा में सभी विषयों के प्राप्तांको का औसत कौन-कौन निकाल कर दिखा सकते हैं ? 3. आपकी कक्षा में पढ़ने वाले बच्चों की औसत आयु कौन-कौन बता सकते है ?	1. पाठ में दिये गए उदाहरण के अतिरिक्त औसत संबंधी सबसे अधिक अन्य उदाहरण कौन-कौन लिखकर ला सकता है ? 2. क्रियाकलाप एक के अनुसार अपने परिवार के सदस्यों के औसत आयु कौन-कौन बनाकर ला सकता है ? 3. माह जुलाई से नवंबर तक अपनी स्वयं की औसत मासिक उपस्थिति कौन-कौन निकाल सकता है? 4. इस सप्ताह में रात में सोने का औसत समय निकाल कर कौन-कौन बता सकता है?

अध्याय-6
उपचारात्मक शिक्षण और मॉनिटरिंग

मॉनिटरिंग का कार्य संकुल शैक्षिक समन्वयक करेंगे। शैक्षिक समन्वय का उद्देश्य शिक्षकों को निरंतर प्रोत्साहन एवं प्रशिक्षण देना है। मॉनिटरिंग को एक सतत प्रशिक्षण के रूप में देखा जा सकता है। यदि हम शैक्षिक समन्वय के अर्थ को समझने की कोशिश करें तो क्षेत्र से निरंतर फीडबैक प्राप्त करके सुधार करते जाना है और यह सुधार हर स्तर पर होगा। जैसे-शिक्षक अपनी शिक्षण प्रणाली सुधारेंगे। संकुल, ब्लॉक एवं डाइट स्तर पर बेहतर ढंग से शिक्षकों के प्रशिक्षण की व्यवस्था होगी। इस तरह से इस पूरी प्रक्रिया में सुधार सभी स्तरों पर किया जाएगा। संकुल शैक्षिक समन्वयक कक्षा पहली से आठवीं तक की गतिविधियों पर ध्यान देंगे। शैक्षिक समन्वय प्रणाली में संकुल शैक्षणिक समन्वयक का मुख्य कार्य यह है कि वे इस बात की समीक्षा करें कि क्या उसके संकुल की सभी प्राथमिक एवं पूर्व माध्यमिक शालाओं में सुचारू रूप से शैक्षिक गतिविधियाँ चल रही हैं।

इसके लिए मुख्य रूप से निम्न बिंदुओं को देखा जाना चाहिए-

1. संकुल की सभी शालाओं में कक्षा पहली से आठवीं तक गतिविधियों का अवलोकन करना।
2. पुस्तकों में दिए पाठों तथा सीखने के प्रतिफल के आधार पर कक्षा में प्रस्तुतीकरण के ढंग पर बच्चों,पालकों एवं शिक्षकों के अनुभवों को जानना।
3. शिक्षण सामग्री के उपयोग करने के ढंग को जानना और समझना।
4. शिक्षकों के प्रशिक्षण की स्थिति और प्रशिक्षण की आवश्यकता को समझना।
5. शिक्षकों को कक्षा में गतिविधि करवाने में आने वाली समस्याओं को पहचानना।
6. संकुल शैक्षिक समन्वयक जब जाएंगे तो वे कक्षा पहली से आठवीं तक की गतिविधियों का अवलोकन करेंगे।
7. अवलोकन के आधार पर शालाओं में स्वयं गतिविधियों का प्रदर्शन करके शिक्षकों को कर्तव्य स्थल पर ही प्रशिक्षण देंगे।
8. शिक्षकों से चर्चा करना और पुस्तकों, पाठ्यक्रम, शिक्षण सामग्री, पुस्तकालय की पुस्तकों की उपयोगिता पर उनकी राय लेना।
9. बच्चों के लर्निंग आउटकम्स, आकलन के तरीकों और गतिविधियों को करवाने में आने वाली समस्याओं को जानना।
10. उन समस्याओं को दूर करना जो समस्याएँ दूर न हो पाएं तो उन्हें संकुल केंद्र की मासिक बैठक में रखा जाएगा।

मासिक बैठक में संकुल प्राचार्य प्रमुख भूमिका निभाएंगे। संकुल समन्वयक द्वारा किए गए मॉनिटरिंग की समीक्षा करेंगे। समीक्षा में शालाओं की उपलब्धियों व कठिनाइयों पर चर्चा होगी। समस्याग्रस्त शालाओं की मॉनिटरिंग संकुल प्राचार्य स्वयं करेंगे। उन शालाओं की समस्या का समाधान संकुल प्राचार्य अपने स्तर पर उचित तरीके से करवाएंगे।

11. स्थानीय रूप से प्रचलित खेल, कहानी, कविता आदि को एकत्रित करना और इन्हें कक्षा की गतिविधियों में उपयोग करना।
12. शिक्षकों द्वारा की जा रही नवीन गतिविधियों एवं नवाचार को जानना एवं शिक्षकों को प्रोत्साहित करना।
13. शाला अवलोकन के दिन संकुल शैक्षिक समन्वयक, एस.एम.सी. के सदस्यों, पंचायती राज संस्थाओं के

प्रतिनिधियों से संपर्क करें तथा इन्हें शाला की गतिविधियों एवं शिक्षण प्रणाली से अवगत करवाएंगे।

अवलोकन कैसे करेंगे?

गतिविधियों का अवलोकन चेक लिस्ट के आधार पर किया जाएगा। चेक लिस्ट से अवलोकन करने के तरीके नीचे सुझाए जा रहे हैं-

1. शाला का अवलोकन करने के लिए शाला खुलने के समय से कुछ पहले पहुँचें।
2. बच्चों एवं शिक्षकों के लिए एक अजनबी की तरह न रहें। उनके साथ घुलने-मिलने की कोशिश करें।
3. अवलोकन सहज रूप से करें शिक्षक को ऐसा न लगे कि आप निरीक्षण कर रहे हैं।
4. दी गई चेक लिस्ट में अवलोकन के दिन जो भी गतिविधि हो रही है, उसके विभिन्न पक्षों का अवलोकन कर अवलोकन प्रपत्र पर अभिमत लिखें।
5. अवलोकन के द्वारा शिक्षकों को दिए जाने वाले सुझावों को प्रपत्र में तो लिखें ही साथ ही शिक्षकों को लिखकर दें। अगली बार अवलोकन के पूर्व इन सुझावों को देख लें।
6. अवलोकन के बाद कुछ गतिविधियों का स्वयं प्रदर्शन करें।
7. इस प्रदर्शन के माध्यम से शिक्षक की शंकाओं का समाधान करने का प्रयास करें।
8. कक्षा में जाने से पहले शिक्षक से बातचीत अवश्य करें। यथासंभव शिक्षक की समस्याओं का समाधान करें।
9. यदि समस्याओं का समाधान करना संभव न हो तो उन्हें संकुल व ब्लॉक स्तरीय बैठक में रखें।
10. कक्षा अवलोकन के पश्चात एस.एम.सी के सदस्यों से संपर्क करने का प्रयास करें।

सामान्य चेक लिस्ट

1. क्या बच्चों की गतिविधियों को प्रोत्साहित किया जा रहा है?
2. क्या सभी बच्चों पर या कुछ बच्चों पर ध्यान नहीं दिया जा रहा है। वे बच्चे कौन से हैं?
3. क्या बच्चों को पूछने व बात करने के अवसर दिए जा रहे हैं?
4. क्या बच्चे आपस में तथा शिक्षक के साथ निर्भय होकर बातचीत करते हैं?
5. क्या शिक्षक भी बच्चों की गतिविधियों में भाग लेने के इच्छुक रहते हैं या लेते हैं?
6. क्या बच्चों की बैठक व्यवस्था नई प्रणाली के अनुरूप की जा रही है?
7. क्या बच्चों को स्वयं तथा आपस में सीखने के अवसर दिए जा रहे हैं?

आकलन की गतिविधियों का चेक लिस्ट

1. क्या शिक्षक बच्चों का आकलन कर रहे हैं?
2. क्या आकलन के लिए क्या पुस्तक में दी गई गतिविधियाँ की जा रही हैं? अथवा कुछ अन्य गतिविधियाँ भी की जा रही हैं?
3. क्या आकलन करके शिक्षक द्वारा बच्चों के लिए टिप्पणी लिखी जा रही है?
4. क्या इस टिप्पणी में कठिनाई और उपलब्धियों का उल्लेख है?
5. क्या आकलन के आधार पर शिक्षक सुधारात्मक उपाय कर रहे हैं?
6. कुछ बच्चों का आकलन करके देखें कि शिक्षक द्वारा लिखित टिप्पणी की पुष्टि होती है या नहीं?
7. बच्चों की उपलब्धि स्तर में पिछले आकलन के समय अब तक होने वाली प्रगति का स्तर देख लें। यदि वह संतोषजनक नहीं है तो कारण का पता लगाएँ।

विषयवस्तु का चेक लिस्ट

1. क्या बच्चों को पाठ स्वयं पढ़ने या गणित विषय में भूमिका या प्रस्तावना को स्वयं पढ़कर गणित बनाने के लिए प्रेरित करते हैं?
2. क्या स्वयं सीखने के लिए प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण निर्माण का प्रयोग करते हैं?
3. क्या शिक्षक अलग-अलग स्तर के बच्चों को अलग-अलग चुनौती देते हैं?
4. क्या शिक्षक चुनौती या गृह कार्य/ अभ्यास कार्य के अंतर को समझते हैं?
5. क्या चुनौती में विविधता होती है?
6. क्या शिक्षक व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से कक्षा के अंदर और बाहर दोनों तरह की चुनौती देते हैं?
7. क्या शत-प्रतिशत बच्चों को सिखाने के लिए विषय मित्र बनाए गए हैं?
8. पियरग्रुप, ग्रुप लर्निंग, गली मित्र का उपयोग बच्चे को सिखाने में करते हैं?
9. क्या शिक्षक विषय मित्रों का अलग से मार्गदर्शन और प्रगति की समीक्षा करते हैं?
10. क्या शिक्षक जिज्ञासा बढ़ाने के नए-नए तरीके अपनाते हैं?
11. क्या शिक्षक मुक्त और खुले प्रश्न देते हैं?
12. क्या प्रतिदिन शिक्षक किसी एक विषय वस्तु को मोबाइल में देखने हेतु प्रेरित करते हैं?
13. क्या मोबाइल पर देखी हुई विषय वस्तु पर चर्चा करते हैं?
14. क्या संकुल स्तर पर शिक्षकों का व्हाट्सएप ग्रुप बना है?
15. क्या व्हाट्सएप ग्रुप में शिक्षक बच्चों की उपलब्धियों को शेयर करते हैं?
16. क्या शिक्षक बच्चों के साथ किए जा रहे काम का अनुभव शेयर करते हैं?

प्रतिवेदन प्रपत्र

(यह प्रतिवेदन संकुल शैक्षणिक समन्वयक शाला अवलोकन के आधार पर प्रत्येक माह तैयार करेंगे)

1. संकुल की शाला में पढ़ने, लिखने /गणित की स्थिति

कक्षा	दर्ज	वर्ण	मात्रा स्तर	शब्द स्तर	अनुच्छेद स्तर	कहानी स्तर	क्या बच्चों के स्तर में प्रतिमाह प्रगति हो रही है। प्रगति का कारण भी लिखें।
1							
2							
3							
4							
5							
6							
7							
8							

संकुल की शाला में गणित की स्थिति

कक्षा	दर्ज	संख्याओं की समझ	जोड़ना	घटाना	2 से 10 तक पहाड़ा	गुणा	भाग	क्या बच्चों के स्तर में प्रतिमाह प्रगति हो रही है। प्रगति का कारण भी लिखें।
1								
2								
3								
4								
5								
6								
7								

2. संकुल की अच्छी शालाओं के नाम तथा उसके कारण (उसमें आप गैर शिक्षकीय कारण भी लिख सकते हैं)।

अच्छी शालाओं के नाम	अच्छे होने के कारण

संकुल के उन ग्रामों का नाम जहाँ प्राथमिक शिक्षा की स्थिति अच्छी नहीं है(समस्याग्रस्त शालाओं का नाम और समस्या का उल्लेख करें)।

शालाओं/ग्राम का नाम	संतोषप्रद नहीं होने/समस्याग्रस्त होने के कारण

1. संकुल की सभी शालाओं में की जा रही गतिविधियों तथा उससे संबंधित लर्निंग आउटकम/ कौशलों पर शिक्षकों की समझ पर अभिमत
2. संकुल के शिक्षकों के लिए भी किसी विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता महसूस की गई हो, तो उल्लेख करें।
3. संकुल की अन्य समस्याएँ / विशेषताएँ।

संकुल शैक्षिक समन्वयक का हस्ताक्षर
नाम-
संकुल केंद्र का नाम-
कुल शालाओं की संख्या-
माह में अवलोकित शाला की संख्या-
विकासखंड-
जिला-

अध्याय-7
प्रशिक्षण की कार्य योजना

इस संदर्शिका में कोविड-19 के दौरान हुए शैक्षिक क्षति को पूर्ण करने हेतु उपचारात्मक शिक्षण के अनेक तरीके प्रस्तुत किए गए हैं, जिनको मैदानी स्तर पर संचालित करना अत्यावश्यक है। जिसके लिए एक सुव्यवस्थित प्रशिक्षण की अनिवार्यता है।

प्रशिक्षण की कार्य योजना का स्वरूप नीचे दिया जा रहा है:

राज्य स्तरीय प्रशिक्षण- राज्य स्तरीय प्रशिक्षण में प्रत्येक जिले से 01 डाईट प्रतिनिधि, 01 सहायक जिला मिशन समन्वयक एवं 02 शिक्षक शामिल होंगे।

जिला स्तरीय प्रशिक्षण- प्रत्येक ब्लॉक से विकासखंड स्त्रोत समन्वयक, जिला पेशेवर शिक्षण समुदाय(पीएलसी) के सदस्य तथा प्रत्येक संकुल के शैक्षिक समन्वयक।

संकुल स्तरीय प्रशिक्षण- संकुल स्तरीय प्रशिक्षण में प्रत्येक संकुल के सभी प्राथमिक एवं माध्यमिक शालाओं के शिक्षक शामिल होंगे।

(जिला स्तरीय से लेकर शाला स्तरीय प्रशिक्षण ऑनलाइन प्लेटफार्म पर होगा। यदि प्रतिभागियों की संख्या ऑनलाइन प्लेटफार्म की क्षमता से अधिक होती है तो प्रशिक्षण एक से अधिक चरणों में आयोजित करवाएं।)

विभिन्न स्तरों पर व्हाट्सएप ग्रुप के निर्माण का स्वरूप:-

1. राज्य स्तर पर 'नवाँ जतन छत्तीसगढ़' नामक व्हाट्सएप ग्रुप की रचना करें, जिसमें राज्य स्त्रोत व्यक्ति तथा राज्य अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् के सभी विषय विशेषज्ञ जुड़ेंगे।
2. जिला स्तर पर नवाँ जतन (जिला का नाम) जैसे नवाँ जतन रायपुर रचना जिसमें डी.एम.सी, ए.पी.सी. तथा जिला स्तर के पी.एल.सी. सदस्य जुड़ेंगे इस समूह में वीडियो बी.आर.सी.सी., सी.एल.जी. के सदस्य सेल्फी विद सक्सेस से संबंधित चुनिंदा फोटो डालेंगे और रिपोर्ट देंगे।
3. विकासखंड स्तर पर 'नवाँ जतन (विकासखंड का नाम), (जिला का नाम)' जैसे 'नवाँ जतन तिल्दा, रायपुर' व्हाट्सएप समूह का निर्माण किया जाएगा जिसमें बी.ई.ओ., बी.आर.सी.सी., विकासखंड स्तरीय पी.एल.सी सदस्य जोड़ेंगे तथा सभी सी.एस.सी. व संकुल स्तरीय सदस्य सेल्फी विद सक्सेस से संबंधित फोटो एवं रिपोर्ट भेजेंगे।
4. संकुल स्तर पर 'नवाँ जतन (संकुल का नाम),(विकासखंड का नाम)' जैसे 'नवाँ-जतन, शांति नगर, धरसीवाँ शहरी' व्हाट्सएप समूह का निर्माण किया जाएगा, जिसमें सभी संकुल समन्वयक एवं संकुल के सभी प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर के शिक्षक जुड़ेंगे। शिक्षक प्रतिदिन कक्षा में चुनौती देकर 'सेल्फी विथ सक्सेस' संबंधित फोटो प्रतिदिन अपलोड करेंगे।

फॉलो-अप गतिविधियाँ

फॉलो-अप गतिविधियों के अंतर्गत अनुभव शेयरिंग वेबीनार का आयोजन व्हाट्सएप के माध्यम से निम्न प्रकार से किया जाएं:

जिला स्तरीय वेबीनार- प्रत्येक माह में दो बार जिला स्तरीय वेबीनार में प्रत्येक ब्लॉक से चयनित शिक्षकों को अपनी 'सेल्फी विद सक्सेस' की सफलता की कहानी को प्रस्तुत करना है।

अनुभव की लिखित शेयरिंग- उपरोक्त जिलों में अपने अनुभव को शेयर करने वाले शिक्षकों का लिखित अनुभव संबंधित 'नवाँ जतन' समूह में शेयर करना है।

100% उपलब्धि वाले स्कूल को सम्मान- जिस संकुल के किसी भी स्कूल में 100% उपलब्धि मिलती है उस विद्यालय, उसके एस.एम.सी व पंचायत को जिला द्वारा ई सर्टिफिकेट दिया जाएगा। 100% उपलब्धि का मापदंड जिला द्वारा निर्धारित किया जाएगा।

परिशिष्ट-1
सीखने के प्रतिफल का प्राथमिकीकरण एवं उपचारात्मक शिक्षण के कारगर उपाय

भूमिका:

- कोरोना महामारी के चलते लगभग 18 महीने स्कूल बंद रहे। अब अगस्त 2021 से स्कूलों के आंशिक रूप से खुलने की शुरुआत हुई है।
- इन पिछले 18 महीनों में, विभिन्न तरीकों जैसे मोहल्ला कक्षा, सीख प्रोग्राम आदि के साथ साथ ऑनलाइन माध्यम से शिक्षण के प्रयास किए गए हालांकि इन-पर्सन शिक्षण की तुलना में यह माध्यम ज्यादा प्रभावी साबित नहीं हुआ है।
- कुछ क्षेत्रों में इंटरनेट की कनेक्टिविटी एवं उच्च लागत के कारण बच्चों की ऑनलाइन शिक्षा तक पहुँच संभव नहीं थी।
- सभी छात्रों ने उच्च स्तर की सीखने की अपेक्षाओं के साथ आगे की कक्षाओं में प्रगति की है।
- इस समस्या के समाधान के लिए प्रणालीगत और शिक्षक दोनों स्तरों पर एक बहुत ही विचारशील और नियोजित दृष्टिकोण के साथ कार्य करने की आवश्यकता है।

दृष्टिकोण:

नीचे दिए गए कुछ प्रश्न हमें आगे के रास्ते तय करने में मदद करेंगे -

1. प्रारम्भिक स्तर पर सीखने में किन क्षेत्रों पर फोकस होना चाहिए?
2. कोविड महामारी को ध्यान में रखते हुए इन क्षेत्रों पर कार्य करने की समय सीमा क्या होनी चाहिए?
3. इन फोकस क्षेत्रों पर कार्य करने के लिए क्या दृष्टिकोण होना चाहिये?
4. किस प्रकार की आकलन प्रक्रिया अपनाने की आवश्यकता है?

I. प्रारम्भिक स्तर पर सीखने में किन क्षेत्रों पर फोकस होना चाहिए?

- **विद्यार्थियों के सामाजिक-भावनात्मक-शारीरिक कल्याण/विकास पर ज़ोर:**

  स्कूल बंद होने के 18 महीनों के दौरान, बच्चों को कई मुद्दों का सामना करना पड़ा है जैसे- परिवार में मृत्यु, माता-पिता की आजीविका का नुकसान, कुपोषण, घरेलू हिंसा, शैक्षणिक सीखने के इनपुट का नुकसान, साझा रूप से सीखने के मौकों का अभाव आदि। बच्चों की सामाजिक-भावनात्मक आवश्यकताओं पर ध्यान केंद्रित करने का सबसे आसान तरीका स्कूल में सभी प्रकार की सह-पाठ्यचर्या संबंधी गतिविधियों को उचित महत्व देना है। उदाहरण के लिए- कला:

  - पेंटिंग, संगीत, नाटक, एवं नृत्य
  - विचारों एवं भावनाओं की स्वतंत्र अभिव्यक्ति हेतु सक्षम बनाना।
  - अनुभावात्मक सीखने के साथ-साथ आत्म-अभिव्यक्ति के लिए अवसर प्रदान करना।

शारीरिक शिक्षा:

- अपनी स्वयं की स्वच्छता और स्वास्थ्य (शारीरिक और मानसिक) के प्रति जागरूक करना साथ ही अपने समुदाय के स्वास्थ्य की देखभाल करना।
- बच्चों में आपसी सम्मान, सहयोग एवं समूह में कार्य करने की क्षमता विकसित करने में मदद करता है।

- **आधारभूत साक्षरता एवं संख्यात्मकता**

- वर्तमान में प्राथमिक विद्यालय में छात्रों का बड़ा हिस्सा - जिनकी संख्या 5 करोड़ से अधिक होने का अनुमान है - उन्होंने मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता कौशलों को प्राप्त नहीं किया है।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति(NEP)-2020 ने प्राथमिक विद्यालय और उसके बाद सार्वभौमिक आधारभूत साक्षरता और संख्यात्मकता प्राप्त करने को सर्वोच्च प्राथमिकता दी है
- कोविड महामारी के कारण, सीखने का संकट कई गुना बढ़ गया है और प्राथमिक स्तर के करोड़ों बच्चे FLN में संघर्ष कर रहे होंगे।
- आधारभूत साक्षरता एवं संख्यात्मकता में भाषा और गणित में ग्रेड 1-2 के लिए आवश्यक सीखने के प्रतिफलों को शामिल किया गया है। यह पढ़ने और लिखने और संख्याओं के साथ बुनियादी कार्य करने की क्षमता पर जोर देता है।

- **ग्रेड विशेष एवं विषयवार सीखने के प्रतिफल**

राष्ट्रीय अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् द्वारा प्रत्येक ग्रेड में, सभी विषयों के लिए स्पष्ट रूप से सीखने के प्रतिफलों (LOs) को परिभाषित किया है। कोविड के कारण स्कूल बंद होने के मद्देनजर, छात्रों के सीखने का स्तर उनके वर्तमान ग्रेड से एक या दो ग्रेड कम हो सकता है। इसके लिए निम्न तरीके से कार्य किया जा सकता है -

ग्रेड 1-3: बुनियादी साक्षरता एवं संख्यात्मकता पर अधिक ज़ोर

ग्रड 4-5: वर्तमान ग्रेड के साथ-साथ पिछले दो ग्रेड के आवश्यक सीखने के प्रतिफलों को शामिल करते हुए बुनियादी साक्षरता एवं संख्यात्मकता के कौशलों को सुदृढ़ करना।

ग्रेड 6-8: वर्तमान ग्रेड के साथ-साथ पिछले दो ग्रेड के आवश्यक सीखने के प्रतिफलों को शामिल करते हुए बुनियादी साक्षरता एवं संख्यात्मकता के कौशलों को सुदृढ़ करना।

II. कोविड महामारी को ध्यान में रखते हुए इन क्षेत्रों पर कार्य करने की समय सीमा क्या होनी चाहिए?

- लॉकडाउन अवधि में सीखने सिखाने की प्रक्रियाओं एवं निरंतर पारिवारिक सहयोग की गुणवत्ता और निरंतरता विभिन्न स्कूलों और बच्चों के समूह के बीच भिन्न थी।
- 18-महीने स्कूल बंद रहने के कारण आवश्यक है कि हमारे पास उन 18 महीनों में जो कार्य किया जा सकता था उसको करने की योजना हो।
- इसे ध्यान में रखते हुए अगर योजनाबद्ध तरीके से कार्य करें और यह लक्ष्य रखें कि 2023-24 शैक्षणिक सत्र की शुरुआत तक, अधिकांश बच्चे ग्रेड स्तर के सीखने के परिणाम प्राप्त कर लेंगे।

- पिछले दो ग्रेड के आवश्यक लर्निंग आउटकम्स को वर्तमान ग्रेड पाठ्यक्रम में शामिल किया जाएगा।

III. इनफोकस क्षेत्रों पर कार्य करने के लिए क्या दृष्टिकोण होना चाहिये?

- आवश्यक सीखने के प्रतिफलों (LOs) को प्राथमिकता देना तथा इनके पूर्ण होने पर आगे की दक्षताओं की तरफ बढ़ना।
- पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तक अध्यायों के साथ लर्निंग आउटकम्स का मैपिंग करना।
- प्रस्तावित शिक्षण अभ्यास/प्रक्रियाएँ जैसे एक जैसे दक्षता अनुसार बच्चों को अलग अलग गतिविधि में शामिल करना।

गणित में विषयवस्तु की प्राथमिकता के कुछ बिंदु :

- सीखने के प्रतिफल, जो बाद की कक्षाओं में सीखने के परिणामों को प्राप्त करने के लिए एक पूर्व-आवश्यकता के रूप में कार्य करते हैं, उन्हें शामिल किया जाना चाहिए।
- सभी कक्षाओं/स्तरों में आवश्यक सीखने के प्रतिफलों में बच्चो की प्रगति एवं उसमे आने वाली जटिलता स्पष्ट रूप से दिखाई देनी चाहिए। इससे शिक्षक को किसी कक्षा में बहुस्तरीय शिक्षार्थियों को संबोधित करने में मदद मिलेगी।
- एक दक्षता (अवधारणा) किस तरीके से क्रम में एक कक्षा से दूसरे कक्षा में बढ़ रही है, उसी के अनुसार - कक्षा योजना, बच्चों के साथ बातचीत, अनुरूप शिक्षण सहायक सामग्री का इस्तेमाल और प्रिंट रिच माहौल के साथ बच्चों को संकेतों के देखने का भरपूर मौका तैयार किया जाना चाहिए। जैसे कक्षा 5 के जिन बच्चों को भिन्न नहीं आता है, उन बच्चों के साथ कैसे गतिविधि की जाए जिससे भिन्न की समझ पर भी काम हो तथा भिन्न के जोड़ घटाना के बारे में भी बच्चों को समझ आने लग जाए।

कक्षा-1		
कक्षा 1 सीखने के प्रतिफल (Learning outcome)	**अध्याय (Chapter)**	**संभावित सीखने सिखाने की प्रक्रियाएं और आकलन के तरीके (Pedagogical processes and assessment strategies)**
संख्याएं		
1 से 20 तक की संख्याओं पर कार्य करते हैं। • 1 से 9 तक की संख्याओं का उपयोग करते हुए वस्तुओं को गिनते हैं। • 20 तक की संख्याओं को मूर्त रूप से, चित्रों और प्रतीकों द्वारा बोलकर गिनते हैं। 20 तक संख्याओं की तुलना करते हैं, जैसे - यह बता पाते हैं कि कक्षा में लड़कियों की संख्या या लड़कों की संख्या ज़्यादा है।	Chapter 3- एक से नौ तक की संख्याएँ Chapter 5- बीस तक की संख्याएँ	• वस्तुएँ गिनें। उदाहरण के रूप में, किसी दिए गए समूह में से 9 तक वस्तुएँ निकाल सकें, जैसे- दिए गए बॉक्स में से 8 पत्तियाँ/4 मोती/ 6 आइसक्रीम की डंडियाँ आदि उठाना। • वस्तुओं के दिए गए समूह में से गिनकर 20 तक की वस्तुएँ निकालें।

		• दो समूह में से एक से एक मिलान (एक-एक की संगतता का उपयोग) करके अधिक है, कम है अथवा बराबर है जैसे शब्दों का प्रयोग करें। • 9 तक के अंकों का योग करने के लिए विभिन्न तरीकों को खोजें, जैसे- आगे गिनना तथा पहले से ज्ञात योग के तथ्य का उपयोग करना।
मूलभूत संक्रियाएं		
• दैनिक जीवन में 1 से 20 तक संख्याओं का उपयोग जोड़ (योग) व घटाने में करते हैं। • मूर्त वस्तुओं की मदद से 9 तक की संख्याओं के जोड़ तथ्य बनाते हैं। उदाहरण के लिए 3+3 निकालने के लिए 3 के आगे 3 गिनकर यह निष्कर्ष निकालते हैं कि 3+3=6। • 1 से 9 तक संख्याओं का प्रयोग करते हुए घटाने की क्रिया करते हैं, जैसे - 9 वस्तुओं के एक समूह में से 3 में वस्तुएँ निकालकर शेष वस्तुओं को गिनते हैं और निष्कर्ष निकालते हैं कि 9–3 = 6। 9 तक की संख्याओं का प्रयोग करते हुए दिन प्रतिदिन में उपयोग होने वाले जोड़ तथा घटाव के प्रश्नों को हल करते हैं।	Chapter 4: जोड़ना Chapter 7: घटाना	• समूहन, आगे गिनना, जोड़ तथ्यों का प्रयोग आदि विभिन्न तरीकों द्वारा 20 तक की संख्याओं का जोड़ करें (जोड़ 20 से अधिक न हो) वस्तुओं/चित्रों के द्वारा घटाने के विभिन्न तरीकों का विकास करें।

कक्षा-2		
कक्षा 1 सीखने के प्रतिफल (Learning outcome)	**अध्याय (Chapter)**	**संभावित सीखने सिखाने की प्रक्रियाएं और आकलन के तरीके (Pedagogical processes and assessment strategies)**
संख्याएं		
• दो अंकों की संख्या के साथ कार्य करते हैं। • 99 तक की संख्याओं को पढ़ते तथा लिखते हैं। • दो अंकों की संख्याओं को लिखने एवं तुलना करनेस्थानीयमान का उपयोग करते हैं। • अंकों की पुनरावृत्ति के साथ और उसके बिना दो अंकों की सबसे बड़ी तथा सबसे छोटी संख्या को बनाते हैं। • 3-4 नोट तथा सिक्कों (समान/असमान मूल्यवर्ग के) का दो समूहों। प्रयोग करते हुए ₹100तक की मान वाली खेल मुद्रा को दर्शाते हैं।	Chapter1: दोहराना Chapter 2: संख्याएँ	• संख्याओं के नाम तथा संख्याओं को लिखने का पैटर्न पहचानें, 99 तक की संख्याओं को पढ़ें तथा लिखें। • संख्याओं के समूह बनाने तथा पहचानने की प्रक्रिया में अंकों के स्थानीय मान की समझ का उपयोग करें।
मूलभूत संक्रियाएं		
• दो अंकों की संख्याओं के जोड़ पर आधारित दैनिक जीवन की समस्याओं को हल करते हैं। • दो अंकों की संख्याओं को घटाने पर आधारित दैनिक जीवन की समस्याओं को हल करते हैं।	Chapter 3: जोड़ना Chapter 4: घटाना	• संख्याओं को जोड़ने एवं घटाने के लिए कुछ नए तरीकों का विकास तथा उपयोग करें। • ऐसी परिस्थितियों की खोज करें जिनमें संख्याओं के जोड़ने तथा घटाने की आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए - दो समूहों को मिलाना, किसी समूह में कुछ और वस्तुओं को मिलाकर बड़ा करना। • जोड़ व घटा पर आधारित अपने संदर्भ, स्थितियाँ तथा प्रश्न विकसित करें। ऐसी परिस्थितियाँ बनाएँ जहाँ पर एक संख्या का बार-बार जोड़ करना पड़ता है।

कक्षा-3		
कक्षा 1 सीखने के प्रतिफल (Learning outcome)	**अध्याय (Chapter)**	**संभावित सीखने सिखाने की प्रक्रियाएं और आकलन के तरीके (Pedagogical processes and assessment strategies)**
संख्याएं		
तीन अंकों की संख्या के साथ कार्य करते हैं • स्थानीयमान की मदद से 999 तक की संख्याओं को पढ़ते तथा लिखते हैं। • स्थानीयमान के आधार पर 999 तक की संख्याओं के मानों की तुलना करते हैं।	Chapter 2:संख्याएँ Chapter 3: जोड़ना घटाना-1	• अपने परिवेश में बड़ी संख्याओं में उपलब्ध वस्तुओं को 100 के समूह, 10 के समूह और इकाइयों के रूप में गिनें। • एक समूह कोई संख्या (999 तक) लिखें तथा दूसरा समूह इसे पढ़ें। • तीन अंकों की सबसे बड़ी / छोटी संख्या लिखने हेतु स्थानीय मान का प्रयोग करें (अंकों की पुनरावृत्ति हो सकती है/ नहीं भी हो सकती है।)
मूलभूत संक्रियाएं		
• दैनिक जीवन की समस्याओं को हल करने में 3 अंको की संख्याओं का जोड़ तथा घटा करते हैं (दोबारा समूह बनाकर या बिना बनाएँ) (जोड़ का मान 999 से अधिक न हो)। • विभिन्न दैनिक परिस्थितियों का आकलन कर उचित संक्रियाओं का उपयोग करते हैं। • 2, 3, 4, 5 तथा 10 के गुणन तथ्य बनाते हैं तथा दैनिक जीवन की परिस्थितियों में उनका उपयोग करते हैं। भाग के तथ्यों को बराबर समूह में बाँटने और बारंबार में घटाने की प्रक्रिया के रूप में समझते हैं। उदाहरण के लिए 12 ÷ 3 में 12 को 3-3 के समूह में बाँटने पर कुल समूहों की संख्या 4 होती है अथवा 12 में से 3 को बारंबार घटाने की प्रक्रिया जो कि 4 बार में संपन्न होती है।	Chapter 3: जोड़ना घटाना-1 Chapter 4: जोड़ना घटाना -2 Chapter 5: गुणा भाग -1 Chapter 6: गुणा भाग -2	• दी गयी संख्या के लिए मूर्त वस्तुओं को व्यवस्थित करें और अलग-अलग गुणन तथ्यों की समझ विकसित करें, जैसे- 6 आमों को निम्नांकित तरीकों से व्यवस्थित किया जा सकता है। 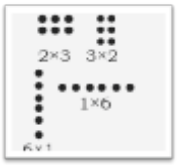 • 2, 3, 4, 5 तथा 10 के लिए विभिन्न तरीकों का प्रयोग कर गुणन तथ्यों का विकास करें, जैसे - छोड़कर गिनना - तथा बारंबार जोड़ द्वारा। 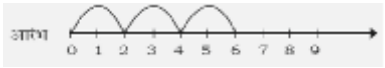 • बराबर बाँटना, समूह बनाना तथा उसे गणितीय रूप से अपने दैनिक जीवन से संबंधित करना आदि का अनुभव करें। उदाहरण के लिए बच्चों में बराबर संख्या में मिठाई बाँटना।

कक्षा-4		
कक्षा 1 सीखने के प्रतिफल (Learning outcome)	**अध्याय (Chapter)**	**संभावित सीखने सिखाने की प्रक्रियाएं और आकलन के तरीके (Pedagogical processes and assessment strategies)**
संख्याएं		
• दैनिक जीवन की समस्याओं को हल करने में 3 अंको की संख्याओं का जोड़ तथा घटा करते हैं (दोबारा समूह बनाकर या बिना बनाएँ) (जोड़ का मान 999 से अधिक न हो)।	Chapter 3: गुणा भाग	शिक्षार्थी को जोड़े/समूहों/व्यक्तिगत रूप से अवसर प्रदान किए जा सकते हैं और इसके लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है: • स्थानीय मान का उपयोग करके 9999 तक की संख्याओं को पढ़ता और लिखता है। • 9999 तक की संख्याओं की उनके स्थानीय मान के आधार पर उनके मान की तुलना करता है। • चार अंकों वाली सबसे बड़ी/छोटी संख्या लिखने के लिए स्थानीय मान लागू करें। (अंकों की पुनरावृत्ति हो भी सकती है और नहीं भी।)
मूलभूत संक्रियाएं		
• संख्याओं की संक्रियाओं का उपयोग दैनिक जीवन में करते हैं। • 2 तथा 3 अंकों की संख्याओं को गुणा करते हैं। • एक संख्या से दूसरी संख्या को विभिन्न तरीकों से भाग देते हरण के लिए हैं, जैसे – चित्रों द्वारा (बिंदुओं का आलेखन कर), बराबर बाँटकर, बार-बार घटाकर, भाग तथा गुणा का उपयोग करके। • दैनिक जीवन से के संदर्भ में मुद्रा, लंबाई, भार, धारिता से संबंधित चार संक्रियाओं पर आधारित प्रश्न बनाते हैं तथा हल करते हैं।	Chapter 2: जोड़ना घटाना चैप्टर 3: गुणा भाग चैप्टर 6 : मापन चैप्टर 11 : मुद्रा	• दो अंकों की संख्या का विस्तार करते हुए गुणा करें, जैसे –23को 6 से गुणा इस प्रकार किया जा सकता है - 23×6 = (20+3) ×6 = 20×6+3 ×6 = 120+18 = 138 • दैनिक जीवन की समस्याओं पर आधारित गुणा के प्रश्न बनाएँ तथा हल करें, जैसे- यदि एक पेन की कीमत ₹35 है, तो 7 पेन की कीमत कितनी होगी? • गुणा के लिए मानक विधि पर चर्चा एवं विकास करें। • भाग क्रिया के लिए समूह बनाएँ, जैसे- 24÷3का अर्थ है

		अर्थात् यह पता करना कि 24 में 3 के कितने समूह हो सकते हैंया 3-3 के कितने समूह मिलकर 24 बनाते हैं। 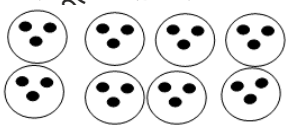 • गणितीय कथनों पर आधारित संदर्भ से संबंधित प्रश्न बनाएँ। जैसे कथन 25-10 15, पर अलग-अलग बच्चे अलग अलग प्रश्न बना सकते हैं. एक बच्चा यह प्रश्न बना सकता है- 'मेरे पास 25 सेब थे, 10 सेब खा लिए तो कितने सेब बचे?'
मापन		
• मीटर को सेंटीमीटर एवं सेंटीमीटर को मीटर में बदलते हैं। किसी वस्तु की लंबाई, दो स्थानों के बीच की दूरी, विभिन्न वस्तुओं के भार, द्रव का आयतन आदि का अनुमान लगाते हैं तथा वास्तविक माप द्वारा उसकी पुष्टि करते हैं। • सरल ज्यामितीय आकृतियों (त्रिभुज, आयत, वर्ग) का क्षेत्रफल तथा परिमाप एक दी हुई आकृति को इकाई मानकर ज्ञात करते हैं, जैसे- किसी टेबल की ऊपरी सतह को भरने के लिए एक जैसी कितनी किताबों की आवश्यकता पड़ेगी। • लंबाइयों/दूरियों तथा बर्तनों की धारिता का अनुमान लगाते हैं तथा मापन के लिए एकसमान परंतु अमानक इकाइयों, जैसे - छड़/पेंसिल, कप/ चम्मच/ बाल्टी इत्यादि का प्रयोग करते हैं। सामान्य तुला का प्रयोग करते हुए वस्तुओं की से भारी / हल्की' शब्दों का उपयोग करते हुए तुलना करते हैं। (कक्षा 2)	चैप्टर 6 : मापन चैप्टर 7 : समय चैप्टर 9 : परिमाप चैप्टर 10: क्षेत्रफल चैप्टर 7: लंबाई चैप्टर 9: धारिता (कक्षा 2)	• एक समान परंतु अमानक इकाइयों का प्रयोग करते हुए विभिन्न लंबाइयों/दूरियों का मापन करें। • वस्तुओं के भार मापन के लिए प्रयोग में आने वाली विभिन्न तुलाओं का अवलोकन करें तथा अवलोकन और अनुभवों परचर्चा करें। • एक साधारण तुला बनाएँ तथा अपने आस-पास स्थित विभिन्न वस्तुओं का भार मापें तथा उनकी तुलना करें। • दो या दो से अधिक बर्तनों की धारिता की तुलना करें। • वस्तुओं की लंबाई/दूरी का पहले अनुमान लगाते हुए फिर उन्हें वास्तव में मापकर सत्यापित करें। उदाहरण के लिए अपने बिस्तर की का अनुमान या कक्षा-कक्ष और विद्यालय के गेट के बीच की दूरी का अनुमान लगाकर फिर उन्हें मापकर सत्यापित करें। • तराजू बनाकर मानक बाटों से वस्तुओं का वज़न करें। यदि मानक बाट उपलब्ध न हों तो मानक वज़न वाले पैकेट का उपयोग किया जा सकता है, जैसे- किलोग्राम दाल का पैकेट, 200 ग्राम नमक का पैकेट, 100 ग्राम बिस्कुट का पैकेट।

ज्यामितीय		
• अपने परिवेश से विभिन्न आकृतियों के बारे में समझ अर्जित करते हैं। • वृत्त के केंद्र, त्रिज्या तथा व्यास को पहचानते हैं। • उन आकृतियों को खोजते हैं जिनका उपयोग टाइल लगानेमें किया जा सकता है। • दिए गए जाल (नेट) की मदद से घन /घनाभ बनाते हैं। • मूलभूत 3D (त्रिविमीय) तथा 2D (द्विआयामी) आकृतियों की उनकी विशेषताओं के साथ चर्चा करते हैं। - 3 D (त्रिविमीय) आकृतियों, जैसे घनाभ, बेलन, शंकु, गोला आदि को उनके नाम से पहचानते हैं। - सीधी रेखा एवं घुमावदार रेखा के बीच अंतर करते हैं। सीधी रेखा का खड़ी, पड़ी, तिरछी रेखा के रूप में प्रदर्शन करते हैं। (कक्षा 2) • आकृतियों तथा संख्याओं के पैटर्न का अवलोकन, विस्तार तथा निर्माण करते हैं(कक्षा 2) • द्वि-आयामी आकृतियों की समझ अर्जित करते हैं - कागज़ को मोड़कर, डाट ग्रिड पर, पेपर कटिंग द्वारा बनी तथा सरल रेखा से बनी द्वि-आयामी आकृतियों को पहचानते हैं। - द्वि-आयामी आकृतियों का वर्णन भुजाओं की संख्या, कोनों की संख्या (शीर्ष) तथा विकर्णों की संख्या के आधार पर करते हैं, जैसे – किताब के कवर की आकृतिमें 4 भुजा, 4 कोने तथा 2 विकर्ण होते हैं।(कक्षा 3)	चैप्टर 11: आकृतियाँ (कक्षा 2) चैप्टर 10 : ज्यामितीय आकृतियाँ (कक्षा 3)	• परकार की सहायता से अलग-अलग त्रिज्या के वतृ बनाए औरवृतों से बने विभिन्न डिज़ाइन का पता लगाएँ। • कागज पर 3डी वस्तुओं के विभिन्न चेहरों को ट्रेस करें और उनके अनुरूप 2डी आकृतियों का नामकरण करें। • विभिन्न आकृतियों के कट आउट/कागज तहों के माध्यम से आकृतियों को उनकी भौतिक विशेषताओं के आधार पर वर्गीकृत करें। • आकृतियों और उनकी भौतिक विशेषताओं का वर्णन करने के लिए प्रेक्षणों/स्पर्श की भावना का उपयोग करें। • अपने आस-पास उपलब्ध त्रि - आयामी (3D) आकृतियों काअवलोकन करें तथा उनके संगत द्वि -आयामी (2D) आकृतियों,जैसे – त्रिभुज, वर्ग , वृत्त आदि के सापेक्ष समानता तथाअसमानता के बारे में चर्चा करें।. • पेपर फोल्डिंग/कागज काटने की गतिविधियों के माध्यम से 2डी आकार बनाएं।

पैटर्न		
• सममिति (Symmetry) पर आधारित ज्यामिति पैटर्न काअवलोकन, पहचान कर उनका विस्तार करते हैं। • आकृतियों तथा संख्याओं के पैटर्न का अवलोकन, विस्तार तथा निर्माण करते हैं। (From grade 1) • विभिन्न वस्तुओं/आकृतियों के भौतिक गणुों का अपनी भाषा मेंवर्णन करते हैं, जैसे – एक गेंद लुढ़कती है, एक बाक्स खिसकताहै, आदि।(From grade 1)	चैप्टर 14: पैटर्न और पहेलियाँ चैप्टर 1: गणित के खेल चैप्टर 13: आकृति (कक्षा 1)	• आकृतियों, अंगूठे के निशान, लीफ प्रिंट और नंबरों आदि का उपयोग करके बनाए गए पैटर्न का विस्तार करें। • ज्यामितीय और संख्यात्मक दोनों तरह के पैटर्न का निरीक्षण करें और उन पर चर्चा करें। (समूह द्वारा प्रस्तुतीकरण पूरी कक्षा के सामने किया जा सकता है) • अपने वातावरण में पैटर्न/डिजाइनों का पता लगाएं (आकृतियों और संख्याओं का उपयोग करके) और ऐसे पैटर्न बनाने और उन्हें विस्तारित करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है।
डाटा हैंडलिंग		
• इकट्ठा की गई जानकारी को सारणी, दडं आलेख के माध्यम सेप्रदर्शित कर उनसे निष्कर्ष निकालते हैं	चैप्टर 12: आंकड़ों का निरूपण	• आसपास के लोगों से जानकारी एकत्र करें, उसे रिकॉर्ड करें और उससे कुछ निष्कर्ष निकालें। • डेटा को अपने तरीके से इकट्ठा और रिकॉर्ड करें और इसे दर्शाने के लिए चित्रलेख का उपयोग करें। उदाहरण के लिए, स्कूल के बगीचे में विभिन्न रंगों के फूल या एक कक्षा में उपस्थित लड़के-लड़कियों की संख्या। • पत्रिकाओं और समाचार पत्रों से चित्रों की व्याख्या करना जिन्हें ग्रेड रूम में प्रदर्शित किया जा सकता है। • समाचार पत्रों/पत्रिकाओं से डेटा/बार ग्राफ आदि पढ़ें और उनकी व्याख्या करें

कक्षा-5		
कक्षा 1 सीखने के प्रतिफल (Learning outcome)	**अध्याय (Chapter)**	**संभावित सीखने सिखाने की प्रक्रियाएं और आकलन के तरीके (Pedagogical processes and assessment strategies)**
संख्याएं		
• बड़ी संख्याओं पर कार्य करते हैं • परिवेश में उपयोग की जाने वाली 1000 से बड़ी संख्याओंको पढ़ तथा लिखते हैं। • 1000 से बड़ी संख्याओंपर, स्थानीय मान को समझते हुएचार मूल संक्रियाएँ करते हैं। • मानक ऐल्गोरिदम् द्वारा एक संख्या से दूसरी संख्या कोभाग देते हैं।	चैप्टर 1: संख्याएँ चैप्टर 2: संक्रियाएँ	• उन संदर्भों/स्थितियों पर चर्चा करें जिनमें 1000 से अधिक की संख्याओं की आवश्यकता होती हैं जिससे संख्या प्रणाली का विस्तार सहज रूप से हो सकता है। • स्थानीय मान का प्रयोग करते हुए 1000 से अधिक (100000 तक) की संख्याओं को प्रदर्शित करें, जैसे – 9 हज़ार से बड़ी संख्याओ को सीखना, 9999 से 1 अधिक बड़ी संख्या कैसे लिखी जाती है? • मानक एल्गॉरिथ्म द्वारा बड़ी संख्याओं में जोड़ तथा घटा की संक्रिया करें। इसे संख्या प्रणाली के विस्तार के रूप में समझाजा सकता है। भाग देने के विभिन्न तरीकों का प्रयोग करें, जैसे – बराबर बाँटना, गुणन की विपरीत क्रिया के रूप में। • विभिन्न तरीकों जैसे कागज़ मोड़कर, चित्रों के छायांकन के द्वाराभिन्नों की तुलना करें। चित्रों/कागज को मोड़ने से संबंधित गतिविधियों के माध्यम से भिन्नात्मक संख्याओं को निरूपित करें For example: Shade the half निम्नलिखित में से किस चित्र का छायांकित भाग एक चौथाई (1/4) का प्रतिनिधित्व नहीं करता है (i) 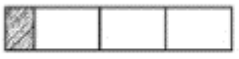 (ii) • समूह के भिन्नात्मक भाग के बारे में समझ विकसित करने के लिए गतिविधियों में दैनिक जीवन से संदर्भों / स्थितियों पर चर्चा और उपयोग करें, जैसे आधा दर्जन केले में कितने केले होते हैं?

		• विभिन्न तरीकों से भिन्नों की तुलना करता है जैसे पेपर फोल्डिंग, डायग्राम की छायांकन आदि. विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से भिन्नों की तुल्यता के विचार को विकसित करना। उदाहरण के लिए: पेपर फोल्डिंग और शेडिंग द्वारा 1/2 is same as 2/4 दशमलव भिन्नों के अवधारणा को समझें (1/10 and 1/100)
मूलभूत संक्रियाएं		
मानक ऐल्गोरिदम् द्वारा एक संख्या से दूसरी संख्या को भाग देते हैं। जोड़, घटाव, गुणन तथा भागफल का अनमुान लगातेहैं तथा विभिन्न तरीकों का प्रयोग कर उनकी पुष्टि करते हैं जैसे – मानक ऐल्गोरिदम् का प्रयोग कर या किसी दीहुई संख्या को अन्य संख्याओं के जोड़ तथ्य के रूप में लिखकर संक्रिया का उपयोग करना। उदाहरण के लिए– 9450 को 25 से भाग देने हेतु 9000 को 25 से, 400 को 25 से तथा अंत में 50 को 25 से भाग देकर जितने भीभागफल प्राप्त हों उन सभी को जोड़कर उत्तर प्राप्त करते हैं।	चैप्टर 2: संक्रियाएँ	• उन संदर्भों/स्थितियों पर चर्चा करें जिनमें संख्या 1000 से आगे जाने की आवश्यकता उत्पन्न होती है ताकि संख्या प्रणाली का विस्तार स्वाभाविक रूप से हो। उदाहरण के लिए, 10 किग्रा में ग्राम की संख्या, 20 किमी में मीटर की संख्या आदि। • मानक एल्गोरिथम का उपयोग करके बड़ी संख्या में संचालन (जोड़ और घटाव) करें। इसे एक और स्थान के लिए एल्गोरिथम के विस्तार के रूप में पहचाना जा सकता है। • संख्याओं को विभाजित करने के लिए विभिन्न तरीकों का उपयोग करें जैसे समान वितरण और गुणा की व्युत्क्रम प्रक्रिया • किसी संख्या के गुणज के गुणन तथ्यों के माध्यम से उसके गुणनफल का विचार विकसित करना, संख्या रेखा और संख्या ग्रिड पर गिनती करना छोड़ दें

मापन		
• सामान्यतः प्रयोग होने वाली लंबाई, भार, आयतन की बड़ी तथा छोटी इकाइयों में संबंध स्थापित करते हैं तथा बड़ी इकाइयों को छोटी व छोटी इकाइयों को बड़ी इकाई में बदलते हैं।	चैप्टर 12 : लंबाई	• उनकी खरीदारी की योजना बनाएं- पैसे का अनुमान लगाने के लिए (विभिन्न संप्रदायों में) और शेष राशि जो एक को मिलेगी। • दुकानदारों/खरीदारों की भूमिका निभाता है जिसमें छात्र बिल बनाते हैं। • टेप/मीटर स्केल का उपयोग करके विभिन्न वस्तुओं की लंबाई मापें। • बड़ी इकाइयों को छोटी इकाइयों में बदलने की आवश्यकता की सराहना करता है। • पानी की बोतल, शीतल पेय पैक आदि पर मुद्रित क्षमता की इकाइयों के अनुभवों पर चर्चा करें। • विभिन्न ठोस आकृतियों, घनों, घनाभों, प्रिज्मों, गोलों आदि का उपयोग करके दिए गए स्थान को भरें और विद्यार्थियों को यह निर्णय लेने के लिए प्रोत्साहित करें कि कौन सा ठोस आकार अधिक उपयुक्त है।
ज्यामितीय		
• कोणों को समकोण, न्यून कोण, अधिक कोण में वर्गीकृत करता है और आरेखण और अनुरेखण द्वारा उनका प्रतिनिधित्व करता है।	चैप्टर 10 : कोण	• कोणों की पहले की समझ विकसित करना और उसका वर्णन करना। • अपने आसपास के कोणों का निरीक्षण करें और उनके मापों की तुलना करें। उदाहरण के लिए, चाहे कोण छोटा हो, बड़ा हो, या किसी किताब के एक कोने के बराबर हो, जो एक समकोण हो; इसके अलावा, कोणों को वर्गीकृत करें। • कोणों को मापने के लिए प्रोट्रैक्टर को एक उपकरण के रूप में पेश करें और कोणों को मापने और खींचने के लिए इसका इस्तेमाल करें।
ज्यामितीय		
• विभिन्न दैनिक जीवन स्थितियों से संबंधित डेटा एकत्र करता है, इसे सारणीबद्ध रूप में और बार ग्राफ के रूप में प्रस्तुत करता है और इसकी व्याख्या करता है।	चैप्टर 20 : आँकड़ो का निरूपण	• जानकारी एकत्र करें और उसे सचित्र रूप में प्रदर्शित करें। उदाहरण के लिए, अपने कक्षा से छात्रों की ऊंचाई और इसे सचित्र रूप से दर्शाते हैं। • समाचार पत्रों/पत्रिकाओं से विभिन्न आरेखों/बार चार्टों को एकत्रित कर चर्चा करें और ग्रेड में हो सकते हैं।

कक्षा-6			
Content domain/ Theme/ Topics	**कक्षा 1 सीखने के प्रतिफल (Learning outcome)**	**अध्याय (Chapter)**	**संभावित सीखने सिखाने की प्रक्रियाएं और आकलन के तरीके (Pedagogical processes and assessment strategies)**
Arithmetic operations	• बड़ी संख्याओं से संबंधित समस्याओं को उचित संक्रियाओं (जोड़, घटा, गुणन, भाग) के प्रयोग द्वारा हल करते हैं। (M601) • पूर्णांकों के जोड़ तथा घटा से संबंधित समस्याओं को हल करते हैं। (M604) • दैनिक जीवन की समस्याओं, जिनमें भिन्न तथा दशमलव का जोड़/घटा हो, को हल करते हैं। (M606)	Chapter 1 प्राकृत संख्याएँ, Chapter 2 पूर्ण संख्याएँ (M601) Chapter 4 पूर्णांक (M604) Chapter 7 भिन्न (M606)	• 8 अंकों तक की संख्याओं वाली स्थितियों के विषय में चर्चा करें, जैसे- किसी संपत्ति का मूल्य, विभिन्न शहरों की कुल आबादी, आदि। • दो मकानों के मूल्य, दर्शकों की संख्या, पैसों के लेन-देन आदिस्थितियों के द्वारा संख्याओं की तुलना करें। • बाज़ार में ज़रुरत के अनुसार कितने रूपए ले कर जाएं, कितना खर्चा हो सकता है, अनुमान लगा कर संक्रिया करे, तथा सामान खरीदारी के दौरान हुए अनुभव को कक्षा में चर्चा करें। • दैनिक जीवन में ऋणात्मक संख्याओं से संबंधित स्थितियों पर विचार करें तथा उन पर चर्चा करें। मौसं की जानकारी में ठंडी गर्मी और तापमान के ऊपर बातचीत करें। • ऐसी स्थितियों का अवलोकन करें जिन्हें भिन्न तथा दशमलव द्वारा प्रदर्शित करने की आवश्यकता हो। इन्हें भिन्न के साथ सम्बन्ध स्थापित कर दिखाने की कोशिश करें। • जितना ज्यादा हो सके, संख्याओं को और उनके बीच होने वाले संक्रिया को सन्दर्भ के साथ इस्तेमाल करने के लिए प्रेरित करें तथा ऐसे सवाल बनाने के लिए प्रेरित करें। • भिन्न के परिभाषा को हमेशा चित्र के साथ और अलग अलग मॉडल के साथ जोड़ कर बताये, क्षेत्रफल मॉडल: आधा-बिस्कुट, आयतन: आधा कप चाय या आधा ग्लास पानी, समय: आधा घंटा, लम्बाई: डेढ़ किलोमीटर दूरी, वजन: 1 पाव आलू, टमाटर, संख्या: आधा दर्जन केला या आधे बच्चे आदि। भिन्न की परिभाषा को ऐसे बताये ताकि उसे यह न लगे की जिस हिस्से को रंगीन किया गया है वही बस भिन्न है।

Algebra	• किसी स्थिति के सामान्यीकरण हेतु चर राशि का विभिन्न संक्रियाओं के साथ प्रयोग करते हैं, जैसे- किसी आयत का परिमाप जिसकी भुजाएं x इकाई तथा 3 इकाई हैं, 2(x+3) इकाई होगा। (M607)	Chapter 11 चार संख्याएं Chapter 12 बीजीय व्यजक(M607)	• गणितीय संदर्भों में अज्ञात राशियों को चर राशियों (वर्णमाला के अक्षरों द्वारा) से प्रदर्शित करने की आवश्यकता के महत्व को समझें और प्रयोग करें। • चरों (वर्णमाला के अक्षर) के प्रयोग की आवश्यकता कीछानबीन करें एवं सामान्यीकरण करें। कुछ उदाहरण ऐसे रखे जिसमे बच्चों को मन में एक राशि को मान लेने की ज़रुरत महसूस हो, जैसे मैंने आपको कुछ रूपए दिया, और आपके दोस्त ने और 5 रूपए दिए, अब बताओ कितना रूपए है तुम्हारे पास- संभावित उत्तर: 5 रुपय और जितना दोस्त ने दिया, इस वाक्य को उन्हें लिखने के लिए कहे तथा जितना रूपए दिया के बदले किसी भी तरीके का छोटा संकेत इस्तेमाल करने के के लिए कहे। • सेव+सेव+सेव=18, सेव+केला+केला=16 से केला कितने का होगा, सेव कितने का होगा जैसे कुछ सवाल रखे जिसे बच्चों को x की जगह कोई भी शब्दाबली इस्तेमाल करने में मदद करे। पिछली कक्षा के उदाहरणों को ले जहाँ पर +3=5 जैसे संकेत का इस्तेमाल किया गया था। इससे भी x का अनुमान लगाने का मौका तैयार करें।
Geometry + Measurement	• ज्यामितीय अवधारणाओं, जैसे रेखा, रेखाखंड, खुली एवं बंदआकृतियों, कोण, त्रिभुज, चतुर्भुज, वृत्त आदि का अपने परिवेश के उदाहरणों द्वारा वर्णन करते हैं। (M610) • 3D वस्तुओं/ आकृतियों के किनारे, शीर्ष, फलक का वर्णन कर उदाहरण देते हैं। (M619)	Chapter 18- सममिति अध्याय में सममिति को छोड़कर(M619)	• 3D आकृतियों के विभिन्न मॉडल तथा जाल (नेट), जैसे घनाभ, बेलन आदि का अवलोकन करें तथा 3D आकृतियों के विभिन्न अवयव, जैसे- फलक, किनारे व शीर्ष पर चर्चा करें। • ओरिगामी के सहारे अलग अलग आकृति बनवाए, जैसे मेंढक, मछली, पंछी, टोपी आदि। उन आकृतियों में क्या क्या खासियत है तथा कैसे एक आकृति दूसरे से अलग है पर बातचीत करें जिससे बच्चों को भुजा, कोना आदि का समझ सामान्य रूप से बने। • व्यक्तिगत रूप से या समूहों में से कक्षा कक्ष के अंदर अथवा बाहर विभिन्न ज्यामितीय आकृतियों को पहचानें तथा उनके गुणों का अवलोकन करें।

Geometry + Measurement	• त्रिभुजों को उनके कोण तथा भुजाओं के आधार पर वर्गीकृत करते हैं, जैसे – भुजाओं के आधार पर विषमबाहु त्रिभुज, समद्विबाहु त्रिभुज, समबाहु त्रिभुज आदि। (M616) • चतुर्भुजों को उनके कोण तथा भुजाओं के आधार पर विभिन्न समूहों में वर्गीकृत करते हैं। M617	Chapter 18- सममिति अध्याय में सममिति को छोड़कर(M619)	• तीलियों या पेपर कटिंग के माध्यम से विभिन्न आकृतियाँ बनाएँ।आकर्षक बनाने के लिए तीलियों के पजल दे, जिससे मछली आकृति बनाकर और सिर्फ 2 तिली घुमाकर मछली का दिशा बदलना होता है। ओरिगामी, मिटटी के आकृतियाँ भी इसमें मदद करेगा। • कोणों की अवधारणा को कुछ उदाहरणों द्वारा साझा करें जैसे दरवाज़े का खुलना, पेंसिल बॉक्स का खुलना आदि। अपने परिवेश से कोण संबंधी अवधारणा के और अधिक उदाहरण प्रस्तुत करें। प्लास्टिक पाइप को पिन से जोड़ कर चतुर्भुज त्रिभुज बनवाएं, उस कोण को बदल कर अलग अलग आकृति तैयार करने का मौका दे। कोण निकालने के लिए पेपर पेरिस्कोप का इस्तेमाल करें। बाछें इसे खेल खेल में कोण जानने पर उत्साहित होंगे। • बच्चों से अलग अलग आकृति बनाकर कक्षा सजाने का मौका दे, इससे वह अलग आलग आकृतिओं के गुणधर्मों को बेहतर ढंग से समझ पायेंगे।

कक्षा-7			
Content domain/ Theme/ Topics	**कक्षा 1 सीखने के प्रतिफल (Learning outcome)**	**अध्याय (Chapter)**	**संभावित सीखने सिखाने की प्रक्रियाएं और आकलन के तरीके (Pedagogical processes and assessment strategies)**
Arithmetic operations	• दो पूर्णांकों का गुणा/भाग कर सकता है। M701 • परिमेय संख्या से संबंधित दैनिक जीवन की समस्याओं को हल करते हैं। (M705) • पैसा, लंबाई, तापमान आदि से संबंधित स्थितियों में भिन्न तथादशमलव का प्रयोग करते हैं, जैसे- 7½ मीटर कपड़ा, दो स्थानों के बीच दूरी 112.5 किलोमीटर आदि। (कक्षा 6 से)(M605) • भिन्नों के भाग तथा गुणन की व्याख्या करते हैं। (M702) उदाहरण के लिए 2/3×4/5 की व्याख्या2/3 का 4/5है के रूप मेंकरते हैं। इसी प्रकार 1/2÷1/4की व्याख्या इस रूप मेंकरते हैं किकितने 1/4मिलकर1/2 बनाते हैं? M703	Chapter 2 परिमेय संख्याएं (M605, M705) Chapter 11 परिमेय संख्याओं का दशमलव निरूपण एवं संक्रियाएं (M704) Chapter 16 प्रतिशतता	• पूर्णांकों के गुणन तथा भाग के नियमों को खोजें। यह कार्य संख्या रेखा अथवा संख्या पैटर्न के द्वारा किया जा सकता है। उदाहरण के लिए 3 x 2 = 6 3 × 1 = 3 3 × 0 = 0 3 × (-1) = −3 3 × (-2) = - 6 अर्थात एक धनात्मक पूर्णांक का गुणा ऋणात्मक पूर्णांक से करते हैं तो परिणाम एक ऋणात्मक पूर्णांक प्राप्त होता है। • पैटर्न में जोड़ या घटाव के कार्य को समझने के लिए रंगीन काउंटर का इस्तेमाल कर सकते हैं। 1/4×1/2का अर्थ है, 1/4 का 1/2=1/8 1/2÷1/4 काअर्थहै,1/2 में 1/4 दो बार है। • भिन्न/दशमलव की गुणा/भाग को चित्रों द्वारा, कागज़ मोड़कर या दैनिक जीवन के उदाहरणों से खोजें। भिन्न की परिभाषा का इस्तेमाल हर बार करें और बच्चों को भी बताने के लिए उत्साह दें। भिन्न/दशमलव की गुणा/भाग को चित्रों द्वारा, कागज़ मोड़कर या दैनिक जीवन के उदाहरणों से खोजें। • उन स्थितियों की चर्चा करें जिनमें भिन्नात्मक संख्याओं को एक-दूसरे से विपरीत दिशाओं में प्रयोग किया जाता है, जैसे 1 एक पेड़ के 10 1/2 मीटर दाईं ओर पहुँचना तथा इसके 15 2/3 मीटर बाईं ओरआदि।

Arithmetic operations	• भिन्न/दशमलव संख्या का गुणा तथा भाग हेतु कलन (अल्गोरिथम) विधि का प्रयोग करते हैं । M704		• मात्राओं का अनुपात तथा प्रतिशत सिखाने के लिए दैनिक जीवन से जुड़ी घटना जिसमे लाभ हानि, ब्याज शामिल हो, को चर्चा में शामिल कर सकते हैं।
Algebra	• दैनिक जीवन की समस्याओं को सरल समीकरण के रूप में प्रदर्शित करते हैं तथा हल करते हैं। (M707, M607)	Chapter 4 समीकरण (M707) Chapter 14 समीकरण (M607)	• कक्षा 2, 3 में जिस दिए गए संक्रिया से समीकरण की तरफ उदाहरण: ___+3 = 5 में ___ की जगह क्या उत्तर आयेगा ? अगर इसे एक संख्या +3 =5 लिखा जाएं तो ? इसमें क+3=5 लिखा जाये तो इनमे क्या अंतर होगा ? • बच्चों से भाषायी सवाल बनाने के लिए कहें तथा उसे समीकरण के रूप में लिख कर दिखाएँ, बच्चे एक-दूसरे से सवाल पूछें और सवाल के अनुसार उन्हें समीकरण के रूप में लिख कर लाये। • चर तथा अचर राशियों को विभिन्न संक्रियाओं के साथ संयोजित कर सभी संभावित बीजीय व्यंजकों को विभिन्न सदंर्भों में खोज करें। • दैनिक जीवन की ऐसी स्थितियों को प्रस्तुत करें जिनमें समीकरण बनाने की आवश्यकता हो तथा चर का वह मान ज्ञात करें जो समीकरण को संतुष्ट कर दे।
Geometry	• कोणों के जोड़े को रेखीय, पूरक, संपूरक, आसन्न कोण, शीर्षाभिमुख कोण के रूप में वर्गीकृत करते हैं तथा एक कोण का मान ज्ञात होने पर दूसरे कोण का ज्ञात करते हैं। (M712) • तिर्यक रेखा द्वारा दो रेखाओं को काटने से बने कोणों के जोड़े के गुणधर्म का सत्यापन करते हैं। (M713)	Chapter 3 त्रिभुज के गुण (714), Chapter 7 त्रिभुजों की संरचना (716), 8(715) Chapter 12 कोण, रेखीय युग्म एवं तिर्यक रेखाएं (M712, M713)	• दैनिक जीवन के उन उदाहरणों को खोजें जिनमें कोणों को जोड़ने में एक उभयनिष्ठ शीर्ष हो। उदाहरण के लिए - कैंची, चौराहा, अक्षर X, T आदि) • चित्र बनाकर कोणों के युग्म के विभिन्न गुणों का सत्यापन करें (एक समूह एक कोण का माप दें तो दूसरा समूह दूसरे कोण का माप बताएँ। • चित्र बनाकर कोणों के युग्म के विभिन्न गुणों का सत्यापन करें (एक समूह एक कोण का माप दें तो दूसरा समूह दूसरे कोण का माप बताएँ। • विभिन्न प्रकार के त्रिभुज की रचना करें। त्रिभुज के कोणों को मापें तथा उनके योग का सत्यापन करें।

	• यदि त्रिभुज के दो कोण ज्ञात हो तो तीसरे अज्ञात कोण का मानज्ञात करते हैं। (M714) • त्रिभुजों के बारे में दी गई सूचना, जैसे- SSS, SAS, ASA, RHS के आधार पर त्रिभुजों की सर्वांगसमता की व्याख्या करते हैं। (M715) • पैमाना (स्केल) तथा परकार की सहायता से एक रेखा के बाहर स्थित बिंदु से रेखा के समांतर एक अन्य रेखा खींचते हैं। (M716)		• त्रिभुजों के बहिष्कोण के गुण तथा पाइथागोरस प्रमेय का पता लगायें। • अपने परिवेश से सममित आकृतियों को पहचानें जिनमें घूर्णन सममिति हो। • कागज़ को मोड़ने के क्रियाकलाप द्वारा सममितता की कल्पनाकरें। • सर्वांगसमता की कसौटी स्थापित करें तथा उनका सत्यापन एक आकृति को दूसरे के उपर इस प्रकार रखकर करें कि वे एक-दूसरे को पूरा-पूरा ढक लें। • सक्रिय भागीदारी द्वारा एक रेखा के बाहर स्थित बिंदु से उसे रेखा के समांतर एक अन्य रेखा खींचने का प्रदर्शन करें। • पैमाना तथा परकार (Compass) की सहायता से सरल त्रिभुज की रचना करें। • कार्ड बोर्ड/मोटे कागज़ पर विभिन्न बंद आकृतियों के कट आउट बनाए तथा आकृतियों का ग्राफ़ पेपर पर खाका खीचें।
Measurement	• आयताकार वस्तुओं का परिमाप तथा क्षेत्रफल ज्ञात करते हैं, जैसे - कक्षा का फ़र्श, चॉक के डिब्बे की ऊपरी सतह का परिमाप तथा क्षेत्रफल (कक्षा 6 से) (M620) • एक बंद आकृति के अनुमानित क्षेत्रफल की गणना इकाई वर्ग ग्रिड / ग्राफ़ पेपर के द्वारा करते हैं। (M717) • आयत तथा वर्ग द्वारा घिरे क्षेत्र के क्षेत्रफल की गणना करते हैं। (M718)	Chapter 15 क्षेत्रफल M717, M718 (Class 7) Chapter 16 क्षेत्रमिति-1(क्षेत्रफल), Chapter 17 क्षेत्रमिति-2(परिमाप) (class 6) (M620)	• कहानी के माध्यम से परिमाप और क्षेत्रफल की ज़रुरत पर बातचीत करें, आसपास की परिवेश के सन्दर्भ में परिमाप, क्षेत्रफल को समझने तथा उन्हें सांकेतिक रूप में लिखने के लिए प्रेरित करें। • ग्राफ़ पेपर पर आकृति द्वारा घेरे हुए स्थान पर इकाई वर्ग की गिनती करें (पूर्ण/आधा आदि) तथा अनुमानित क्षेत्रफल ज्ञात करें। • चर्चा के माध्यम से, वर्गाकार कागज से आयत/वर्ग के क्षेत्रफल के सूत्र तक पहुँचें।

Data handling	• दी गई/ संकलित की गई सूचना को सारणी, चित्रालेख, दंड आलेख के रूप में प्रदर्शित कर व्यवस्थित करते हैं और उसकी व्याख्या करते हैं, जैसे - विगत छह माह में किसी परिवार के विभिन्न सामग्रियों पर हुए खर्च को। (कक्षा 6 से)(M621) • दैनिक जीवन के साधारण आँकड़ों के लिए विभिन्न प्रतिनिधि मानों जैसे समान्तर माध्य, मध्यिका, बहुलक की गणना करते हैं। (M719) • दंड आलेख के द्वारा आँकड़ों की व्याख्या करते हैं, जैसे- गर्मियों में बिजली की खपत	Chapter 17 सांख्यिकी (class 7) (M719, 721) Chapter 19 सांख्यिकी (Class 6) (M621	• कक्षा या विद्यालय के अन्दर से आंकड़ा इकठ्ठा करने के लिए तथा उन्हें एक टेबल में लिखने के लिए कहे, शुरुआत में ही किताब में दिए गए टेबल का इस्तेमाल से बचे • समांतर माध्य, बहुलक या मध्यिका की ज़रुरत पर बातचीत करें। कब किसे चुनना चाहिए अलग आग स्थितिओं के आधार पर उपयुक्त केंद्रीय प्रवृत्ति चुनने का मौका दे। • समांतर माध्य, बहुलक या मध्यिका के रूप में असमूहीकृत आँकड़ों का प्रतिनिधि मान ज्ञात करें। उन्हें प्रोत्साहित करें कि आँकड़ों को सारणी के रूप में लिखकर उसे दंड आलेख के रूप में प्रदर्शित करें।

कक्षा-8			
Content domain/ Theme/ Topics	**कक्षा 1 सीखने के प्रतिफल (Learning outcome)**	**अध्याय (Chapter)**	**संभावित सीखने सिखाने की प्रक्रियाएं और आकलन के तरीके (Pedagogical processes and assessment strategies)**
Arithmetic operations	• परिमेय संख्याओं में योग, अंतर, गुणन, तथा भाग के गुणों का एक पैटर्न द्वारा सामान्यीकरण करते हैं। (M801) • 2, 3, 4, 5, 6, 9 तथा 11 से विभाजन के नियम को सिद्ध करतेहैं। (M803) • संख्याओं का वर्ग, वर्गमूल, घन, तथा घनमूल विभिन्न तरीकों से ज्ञात करते हैं। (M804) • प्रतिशत की अवधारणा का प्रयोग लाभ तथा हानि की स्थितियों छूट की गणना, जी.एस.टी. (GST), चक्रवृद्धि ब्याज की गणना के लिए करते हैं, जैसे अंकित मूल्य तथा वास्तविक छूट दी गई हो तो छूट प्रतिशत ज्ञात करते हैं अथवा क्रय मूल्यतथा लाभ की राशि दी हो तो लाभ प्रतिशत ज्ञात करते हैं। (M809) • समानुपात तथा व्युत्क्रमानुपात (direct and inverse proportion) पर आधारित प्रश्न हल करते हैं। (M810)	M801- Ch 18 परिमेय संख्यांओं पर संक्रियाएँ M803- Ch 17 संख्याओं का खेल M804- Ch 1 वर्ग एवं धन M809- Ch 13 प्रतिशतता का अनुप्रयोग M810- Ch 7 अनुक्रमानुपाती एवं व्युत्क्रमानुपाती विचरण	• सभी शिक्षार्थियों को जोड़े में/समूहों में/व्यक्तिगत रूप से कार्य करने के अवसर दिए जाएं तथा उन्हें प्रोत्साहित किया जाएं कि वेपरिमेय संख्याओं पर सभी संक्रियाओं के साथ उदाहरण खोजें तथा इन संक्रियाओं में पैटर्न खोजें। • ऐसे संदर्भों का अवलोकन करें जिनमें प्रतिशत का प्रयोग विभिन्न संदर्भों, जैसे – छूट, लाभ, हानि, जी.एस.टी. (GST), साधारणतथा चक्रवृद्धि ब्याज आदि में होता है। • बार-बार साधारण ब्याज के रूप में चक्रवृद्धि ब्याज के लिए सूत्र का सामान्यीकरण करें। • ऐसी स्थितियों का अवलोकन करें जिनमें एक राशि दूसरी पर निर्भर करती है। वे ऐसी परिस्थितियों को पहचानें जिनमें एक राशि के बढ़ने से दूसरी में भी वृद्धि होती है या एक राशि के बढ़ने से दूसरी घटती है, जैसे – किसी वाहन की गति बढ़ने पर उसके द्वारा तय की जाने वाली दूरी में लगने वाला समय घट जाता है।

Algebra	• पूर्णांक घातों वाली समस्याएँ हल करते हैं। (M805) • चरों का प्रयोग कर दैनिक जीवन की समस्याएँ तथा पहेली हलकरते हैं।(M806) • बीजीय व्यंजकों को गुणा करते हैं, जैसे (2x-5) (3x2+7) का विस्तार करते हैं। (M807) • विभिन्न सर्वसमिकाओं का उपयोग दैनिक जीवन की समस्याओंको हल करने के लिए करते हैं। (M808)	M805- Ch 2 घातांक M806- Ch 12 समीकरण M807- Ch 8 वीजीय व्यंजकों के गुणनखंड M808- Ch 9 सर्वसमिकाएं	• 3 अंकों तक की संख्या के सामान्यीकरण रूप का प्रयोग करें तथा बीजगणित की समझ द्वारा 2, 3, 4, से भाज्यता का नियम खोजें, जिसे इससे पूर्व की कक्षाओं में पैटर्न के अवलोकन द्वारा खोजा गया था। • वर्ग, वर्गमूल, घन तथा घनमूल संख्याओं में पैटर्न खोजें तथा पूर्णांकों को घातांक के रूप में व्यक्त करने के लिए नियम बनाएँ। • ऐसी स्थिति का अवलोकन करें जो उन्हें समीकरण बनाने के लिए प्रेरित करें तथा समीकरण को उचित विधि द्वारा हल करें। • वितरण गुण की समझ के आधार पर दो बीजीय व्यंजकों एवं बहुपदों को गुणा करें तथा विभिन्न बीजगणित सर्वसमिकाओं का मूर्त उदाहरणों द्वारा सामान्यीकरण करें। • दो संख्याओं के गुणनफल की समझ के आधार पर उचित क्रियाकलापों द्वारा बीजीय व्यंजकों के गुणनखंड करें।
Measurement	• समलंब चतुर्भुज तथा अन्य बहुभुज के क्षेत्रफल का अनुमानित मान इकाई वर्ग ग्रिड/ग्राफ़ पेपर के माध्यम से करते हैं तथा सूत्र द्वारा उसका सत्यापन करते हैं। (M816) • घनाभाकार तथा बेलनाकार वस्तुओं का पृष्ठीय क्षेत्रफल तथा आयतन ज्ञात करते हैं। (M818)	M 816- Ch 14 क्षेत्रमिति-1 M818- Ch 15- क्षेत्रमिति-3	• त्रिभुज तथा आयत (वर्ग) के क्षेत्रफल की समझ का उपयोग करते हुए समलंब चतुर्भुज के क्षेत्रफल के लिए सूत्र बनाएँ। • विभिन्न 3D वस्तुओं, जैसे- घन, घनाभ तथा बेलन की सतहोंकी पहचान करें। • आयत, वर्ग तथा वृत के क्षेत्रफल के सूत्र का प्रयोग करते हुए घन, घनाभ के पृष्ठीय क्षेत्रफल के लिए सूत्र बनाएँ। • इकाई घनों की सहायता से घन तथा घनाभ का आयतन ज्ञात करें।

Geometry	• कोणों के योग के गुणधर्म का प्रयोग कर चतुर्भुज के कोणों से संबंधित समस्याएँ हल करते हैं। M811 • समांतर चतुर्भुज के गुणधर्मों का सत्यापन करते हैं तथा उनके बीच तर्क द्वारा संबंध स्थापित करते हैं। (M812) • बहुभुज का क्षेत्रफल ज्ञात करते है M817 • पैमाना (स्केल) तथा परकार के प्रयोग से विभिन्न चतुर्भुज कीरचना करते हैं। M815 • 3D आकृतियों को समतल, जैसे- कागज़ के पन्ने, श्यामपट आदि पर प्रदर्शित करते हैं। (M813) • पैटर्न के माध्यम से यूलर (Euler's) संबंध का सत्यापन करते हैं। (M814)	M811- CH 10 बहुभुज M812- CH 10 बहुभुज M813, 814- Ch 16 आकृतियाँ (द्विविमीय एवं त्रिविमीय) M815- Ch 11 चतुर्भुज की रचना M817- Ch 14 क्षेत्रमिति-1	• विभिन्न चतुर्भुजों की भुजाओं तथा कोणों को मापें तथा उनके बीच संबंधों के पैटर्न की पहचान करें। पैटर्न के सामान्यीकरण के आधार पर स्वयं की परिकल्पना का निर्माण करें तथा उनका सत्यापन उचित उदाहरणों द्वारा करें। • समांतर चतुर्भुज के गुणधर्मों का सत्यापन करें तथा इनका तार्किक प्रयोग समांतर चतुर्भुज की रचना, उनके विकर्णों की रचना, कोणों तथा भुजाओं के मापन जैसे क्रियाकलापों में करें। • परिवेश की 3D वस्तुओं को 2D रूप में प्रदर्शित करें, जैसे बॉक्स या बोतल का चित्र कागज़ पर बनाना। • विभिन्न आकृतियों जैसे घनाभ, घन, पिरामिड, प्रिज्म आदि के जाल (नेट) बनाएँ। नेट से विभिन्न आकृतियाँ बनाएँ तथा शीर्षों-किनारों तथा सतह के बीच संबंध स्थापित करें। • ज्यामितीय किट का प्रयोग कर विभिन्न प्रकार के चतुर्भुज बनाएँ। • ग्राफ़ पेपर पर समलंब चतुर्भुज तथा अन्य बहुभुज का खाका खीचें तथा इकाई वर्ग को गिनकर अनुमानित क्षेत्रफल ज्ञात करें।
Data handling	• दंड आलेख तथा पाई आलेख बनाकर उनकी व्याख्या करते हैं। M819 • किसी घटना के पूर्व में घटित होने या पासे या सिक्कों की उछाल के आँकड़ों के आधार पर भविष्य में होने वाली ऐसी घटनाओं के घटित होने के लिए अनुमान (Hypothesize) लगाते हैं। M820	M819, 820- Ch 6 सांख्यिकी	• आँकड़ों का संग्रहण, उनका वर्ग अंतरालों में सारणीबद्ध करेंऔर दंड आरेख/पाई आरेख के रूप में प्रदर्शित करें। • एक जैसे पासे/ सिक्के को कई बार उछालकर घटनाओं के घटित होने की गणना करें तथा इसके आधार पर भविष्य की घटनाओंके सापेक्ष व्यक्तिगत घटनाओं के घटित होने की गणना द्वारा भविष्य की उसी प्रकार घटनाओं के बारे में पूर्वानुमान लगाएँ।

कक्षा वार कुछ सीखने के प्रतिफल को प्राथमिकता तय करने के आधार पर वर्तमान के लिए हटाया जा सकता है और उसको हटाने के तर्क क्या हो सकते हैं, नीचे के टेबल में दिया गया है -

Class	Removed Learning outcomes	Reason or rationale
1	छोटी लंबाइयों का अनमुान लगाते हैं अमानक इकाइयों, जैसे- उँगली, बित्ता, भुजा, कदम आदि की सहायता से मापते हैं।	अगली कक्षा में ले जाया गया क्योंकि निरंतरता में बच्चे माप से जुड़ी अवधारणाओं को सीखेंगे।
1	आकृतियों/संख्याओं का प्रयोग करते हुए किसी चित्र के संबंध में सामान्य सूचनाओं का संकलन करते हैं लिखते हैं तथा उनकाअर्थ बताते हैं। (जैसे किसी बाग के चित्र को देखकर विद्यार्थी विभिन्न फूलों को देखते हुए यह नतीजा निकालते हैं कि एक विशेष रंग के पुष्प अधिक हैं।)	4 वीं कक्षा में ले जाया गया, ताकि बच्चा डेटा हैंडलिंग से जुड़ी सभी अवधारणाओं को सीख सके। हम मानते हैं कि यह महत्वपूर्ण है लेकिन इस स्तर पर आवश्यक नहीं है।
2	• सीधी रेखा एवं घुमावदार रेखा के बीच अतंर करते हैं • सीधी रेखा का खड़ी, पड़ी, तिरछी रेखा के रूप में प्रदर्शन करते हैं। • सामान्य तलुा का प्रयोग करते हुए वस्तुओं की 'से भारी/से हल्की ' शब्दों का उपयोग करते हुए तुलना करते हैं। • सप्ताह के दिनों तथा वर्ष के माह को पहचानते हैं • विभिन्न घटनाओं को घटित होने के समय केअनुसार क्रम से दिखाते हैं, जैसे – क्या कोई बच्चाघर की तुलनामें स्कूल में ज़्यादा समय तक रहता है? • संकलित आकँड़ों से निष्कर्ष निकालते हैं जैसे – 'समीर के घरमें उपयोग में आने वाले वाहनों की संख्या एंजिलीना के घर मेंउपयोग किए जाने वाली वाहनों की तुलना में अधिक है'। • 3-4 नोट तथा सिक्कों (समान/असमान मलूयवर्ग के) का प्रयोग करते हुए 100 तक की मान वाली खेल मुद्रा को दर्शाते हैं।	ज्यामिति और संख्याओं की अन्य अवधारणाओं को सीखते हुए बच्चा स्थानिक समझ अवधारणाओं को सीख सकता है बच्चे दिन-प्रतिदिन के जीवन में समय की अवधारणा सीखते हैं और इस पहलू को भाषा और पर्यावरण अध्ययन को भी शामिल किया जाएगा। डेटा संकलन चौथी और पांचवीं कक्षा में शामिल की जाएंगी, इसलिए यहां नहीं लिया गया है मुद्रा और इसका उपयोग भी प्राकृतिक शिक्षा है और हम यहां आवश्यक सीखने के परिणाम के रूप में शामिल नहीं कर रहे हैं

3	• दिए गए क्षेत्र को एक आकृति के टाइल की सहायता से बिना कोई स्थान छोड़े भरते हैं। • मानक इकाइयों, जैसे – सेंटीमीटर, मीटर का उपयोग कर लंबाइयों तथा दूरियों का अनुमान एवं मापन करते हैं। इसके साथ ही इकाइयों में संबंध की पहचान करते हैं। • मानक इकाइयों ग्राम, किलोग्रा म तथा साधारण तलु के उपयोगसे वस्तुओंका भार मापते हैं। • विभिन्न कंटेनरों की क्षमता की तुलना अमानक इकाइयो में करता है। • दैनिक जीवन की स्थितियों में में ग्राम और किलोग्राम जोड़ता और घटाता है। • कैलेंडर पर किसी विशेष दिन और तारीख की पहचान करता है। • घड़ी का उपयोग करके समय को सही ढंग से पढ़ता है। • सरल आकृतियों और संख्याओं में पैटर्न का विस्तार करता है। • डेटा हैंडलिंग के बारे में समझ हासिल करता है। • टैली चिह्नों का उपयोग करके डेटा रिकॉर्ड करता है, चित्रमय रूप से प्रस्तुत करता है और निष्कर्ष निकालता है।	हमने इस अवधारणा को कक्षा 4 में लिया है इसलिए यहाँ नहीं लिया गया है। मानक इकाइयाँ और माप 5 वीं कक्षा में लिए जाते हैं इसलिए इस ग्रेड में आवश्यक सीखने के परिणाम के रूप में नहीं लिया गया है। रूपांतरण को चौथी कक्षा में ले जाया गया। डेटा हैंडलिंग को चौथी और पांचवीं कक्षा में स्थानांतरित कर दिया गया है।
4	• भिन्नों के साथ काम करता है: प्रत्येक चित्र में (कागज को मोड़कर) और वस्तुओं के संग्रह में भी आधा, एक-चौथाई, तीन-चौथाई की पहचान करता है। • भिन्नों को क्रमशः प्रतीकों का उपयोग करके आधा, एक-चौथाई और तीन-चौथाई के रूप में दर्शाता है। • अन्य भिन्नों की तुल्यता को दर्शाता है। • अपने आस-पास की आकृतियों के बारे में समझ प्राप्त करता है।	भिन्न अवधारणा को 5वीं कक्षा में स्थानांतरित कर दिया गया है क्योंकि ग्रेड 4 में केवल भिन्नों का परिचय शामिल है।

4	• पेपर फोल्डिंग/कागज कटिंग, इंक ब्लॉट्स इत्यादि के माध्यम से सममिति की अवधारणा दिखाता है। • साधारण वस्तुओं का शीर्ष दृश्य, सामने का दृश्य और पार्श्व दृश्य खींचता है। • सरल ज्यामितीय आकृतियों के क्षेत्रफल और परिधि की पड़ताल करता है(त्रिभुज, आयत, वर्ग)। • मीटर को सेंटीमीटर में बदलता है और इसके विपरीत। • घड़ी के समय को घंटे और मिनटों में पढ़ता है और समय को AM और PM में व्यक्त करता है। • 12 घंटे की घड़ी को 24 घंटे की घड़ी से संबंध स्थापित करता है। • आगे या पीछे गिनती/जोड़ और घटाव का उपयोग करके परिचित दैनिक जीवन की घटनाओं के समय अंतराल/अवधि की गणना करता है। • गुणा और भाग (9 के गुणक तक) में पैटर्न की पहचान करता है।	सममिति और समय की अवधारणा को हटा दिया गया जिसको आगे की कक्षाओं में शामिल किया जाएगा।
5	• वातावरण से 2D आकृतियों की पहचान करता है जिसमें वर्णमाला और आकृतियों की तरह घूर्णन और प्रतिबिंब सममिति होती है। • जालों का उपयोग करके घन, बेलन और शंकु बनाता है। • लंबाई, वजन और आयतन की आमतौर पर उपयोग की जाने वाली बड़ी और छोटी इकाइयों से संबंधित है और बड़ी इकाइयों को छोटी इकाइयों में परिवर्तित करता है और इसके विपरीत।	पहले के कक्षाओं में 2डी और 3डी पहलुओं को कवर किया इसलिए हमने आवश्यक प्रतिफलों से सममिति हटा दी।

6	• सम, विषम, अभाज्य, सह-अभाज्य, आदि के रूप में संख्याओं के व्यापक वर्गीकरण को पहचानता है (पैटर्न के माध्यम से)।	पिछली कक्षाओं में पैटर्न के माध्यम से पढ़ाये गए सम और विषम भाग, प्राइम, कोप्राइम को बाद में LCM HCF के साथ कवर किया जाएगा।
6	• किसी विशेष स्थिति में HCF या LCM उपयोग करता है।	समय की कमी को ध्यान में रखते हुए, अन्य अवधारणाओं को LCM& HCF पर अधिक प्राथमिकता दी गई।
6	• विभिन्न इबारती सवालों को हल करने में एकिक नियम का उपयोग करता है। उदाहरण के लिए, यदि एक दर्जन नोटबुक की कीमत दी गई है, तो वह पहले 1 नोटबुक की लागत का पता लगाकर 7 नोटबुक की लागत का पता लगाती है।	कक्षा 5 में इसको संबोधित किया गया।
6	• विभिन्न स्थितियों में अनुपातों का उपयोग करके मात्राओं की तुलना करता है। उदाहरण के लिए, एक विशेष कक्षा में लड़कियों का लड़कों से अनुपात 3:2।	कक्षा 7 में संबोधित किया जाएगा।
6	• रैखिक सममिति की समझ को प्रदर्शित करता है। - सममित 2-डी आकार बनाना। - सममित 2-आयामी (2-डी) आकृतियों की पहचान करना जो एक या अधिक रेखाओं के साथ सममित हैं।	समय की कमी को ध्यान में रखते हुए, अन्य अवधारणाओं को सममिति पर अधिक प्राथमिकता दी गई
6	• कोणों की समझ को प्रदर्शित करता है - परिवेश में कोणों के उदाहरणों की पहचान करना। - कोणों को उनके माप के अनुसार वर्गीकृत करना। - संदर्भ कोणों के रूप में 45°, 90° और 180° का उपयोग करके कोणों की माप का अनुमान लगाना।	इन्हें कक्षा 6 के भागों को मिलाकर कक्षा 7 में शामिल किया जा सकता है।
6	• विभिन्न (3-डी) वस्तुओं जैसे गोले, घन, घनाभ, बेलन, शंकु को परिवेश से उदाहरणों की सहायता से पहचानते हैं।	ऊपर के प्रतिफल में शामिल हैं , 3डी आकार की समझ विकसित की जा सकती है जबकि 3डी ऑब्जेक्ट्स के अवलोकन के आधार पर 2डी ऑब्जेक्ट्स पर चर्चा की जा सकती है।
6	• कक्षा के फर्श, एक चॉक बॉक्स की सतह आदि जैसे परिवेश में आयताकार वस्तुओं की परिधि और क्षेत्रफल का पता लगाता है।	कक्षा 7 में शामिल।

6	• पिछले छह महीनों में एक परिवार में विभिन्न मदों पर किए गए खर्च जैसी दी गई/एकत्र की गई जानकारी को टेबल, चित्रलेख और बार ग्राफ के रूप में व्यवस्थित करता है और उनकी व्याख्या करता है।	कक्षा 5 में कम उदाहरण के साथ, कक्षा 7 में भी होंगे।
7	• बड़ी संख्या के गुणन और विभाजन से संबंधित समस्याओं को सरल बनाने के लिए संख्याओं के घातीय रूप का उपयोग करता है।	समय की कमी के कारण, अन्य अवधारणाओं को घातीय की तुलना में अधिक प्राथमिकता दी जाती है।
7	• अनुपात में मात्राओं को अलग करता है। उदाहरण के लिए, बताता है कि 15,45,40,120 अनुपात में हैं क्योंकि 15/45 40/120 के समान है।	तुल्य भिन्न का पुनरावृत्त भाग।
7	• साधारण ब्याज में लाभ/हानि प्रतिशत और दर प्रतिशत की गणना करता है।	कक्षा 8 में ले जाया गया क्योंकि इन्हें वहां अधिक विस्तार में संबोधित किया गया है
7	• वास्तविक जीवन की स्थिति में परिवर्तनशीलता को पहचानता है जैसे, उसकी कक्षा में छात्रों की ऊंचाई में भिन्नता और सिक्का फेंकने जैसी घटनाओं के घटित होने में अनिश्चितता।	इसे कक्षा 8 में संबोधित किया जाएगा।
7	• बीजीय व्यंजकों को जोड़ता/घटाता है।	कक्षा 8 में ले जाया गया क्योंकि ये वहाँ बहुत विस्तार से बताए गए हैं।
8	• दी गई दो परिमेय संख्याओं के बीच यथासंभव अधिक से अधिक परिमेय संख्याएँ ज्ञात करता है।	बाद की कक्षाओं में शामिल किया जाएगा।

पाठ्यक्रम पुननिर्धारण की ज़रूरत: हिन्दी

कोविड-19 ने हमारे आसपास की हर चीज को बहुत गहरे से प्रभावित किया है। इनमें भी सबसे ज्यादा प्रभावित शिक्षा हुई है। उसमें भी यदि हिन्दी भाषा शिक्षण को देखा जाए तो पहले ही इस बात पर लगातार चिंता जाहिर की जा रही थी कि कक्षा 3 से 5 तक के बच्चों को भी स्तरानुकूल पढ़ना-लिखना नहीं आता है, अनेक सर्वे बताते हैं कि सामान्य परिस्थिति में भी लगभग 10 से 20 प्रतिशत बच्चे प्राथमिक कक्षाओं में अपेक्षित भाषाई कौशलों को हासिल नहीं कर पाते हैं। उस पर इस महामारी ने स्थिति और भी ख़राब कर दी है। लंबे समय तक स्कूलों के बंद रहने से बच्चों के सीखने पर दो तरह से प्रभाव पड़ा है। एक, उनका नियमित सीखना न केवल बाधित हुआ बल्कि रुक सा गया। दूसरी ओर, स्कूल के नियमित न चलने और नया न सीखने और अभ्यास के अभाव में जो कुछ भी वे पहले सीख चुके थे, उसमें से भी काफी कुछ भूल चुके हैं। एक सर्वे के अनुसार कक्षा 3 और 5 के 80% बच्चे पिछली कक्षा में सीखे गए एकाधिक भाषाई कौशलों को भूल गए हैं।

इस स्थिति में इस बात को समझना बहुत जरुरी है कि आधारभूत भाषाई कौशल कौन-कौन से हैं जिन पर हर कक्षा में योजनाबद्ध तरीके से काम करने की आवश्यकता होगी, साथ ही हर कक्षा में बच्चों के स्तर का पता लगाना भी जरुरी होगा ताकि उसके साथ उसी स्तर से काम किया जाना शुरू हो सके। उदाहरण के लिए किसी स्कूल में कक्षा 3 के 25 बच्चों में से संभव है कुछ बच्चे अभी चित्र पठन पर ही हों, कुछ बच्चे शब्द पठन पर हों, और कुछ बच्चे छोटी कहानियाँ ही पढ़ पा रहे हों। ऐसे में हर स्तर के बच्चों के समूह बनाना, उनके साथ काम करने की योजना बनाना और उन्हें अपेक्षित सीखने के स्तर तक लाकर आने के लिए व्यवस्थित योजना बनाना बहुत ही आवश्यक होगा।

इसी तरह से उच्च प्राथमिक कक्षाओं के लिए भी रणनीति बनानी होगी। संभव है कक्षा 6 से 8 तक के बहुतेरे बच्चे ऐसे हो जो क्रमशः चित्र, शब्द या वाक्य पठन पर रुके हुए हों जबकि इन कक्षाओं में इनके साथ उच्च स्तरीय भाषाई कौशलों पर काम किया जाना है।

सीखने के स्तरों में हुए इस नुकसान की भरपाई के लिए दो तरीके से काम करना होगा-

1. कक्षा 1 से 5 और 6 से 8 के लिए आधारभूत भाषाई कौशलों को चयनित करके उनके साथ काम करना
2. कक्षा 3 से 5 और 6 से 8 के लिए कक्षा स्तर के मुताबिक अन्य उच्च स्तरीय कौशलों को चयनित करके उनके साथ काम करने की योजना बनाना

एक बार आधारभूत कौशल और कक्षावार आवश्यक कौशल चिह्नित हो जाने के बाद हर कक्षा के पाठ्यपुस्तकों को देखा जाना होगा, दिए गए पाठों में से किन-किन पाठों का चयन प्राथमिकता से करना होगा और उनको किस तरह से पढ़ाया जाना होगा कि आधारभूत और आवश्यक दोनों ही कौशल बच्चों में विकसित किए जा सकें अर्थात पाठ्यक्रम का पुनर्निर्धारण करते हुए कक्षा प्रक्रियाओं को विस्तार से रेखांकित किया जाना आवश्यक होगा।

पाठयक्रम पुनर्निधारण का आधार (दृष्टिकोण)

पाठ्यक्रम पुनर्निर्धारण के लिए तीन मुख्य बातों पर ध्यान देना होगा-

1. हर कक्षा के लिए आधारभूत भाषाई कौशल क्या होंगे और कक्षानुरूप आवश्यक कौशल क्या होंगे इनका चयन करना अर्थात प्रत्येक कक्षा में कुछ ऐसे बच्चे होंगे जो उस कक्षा स्तर के कौशलों को प्राप्त नहीं कर पाए हैं। अत: ऐसे बच्चों को हम आधारभूत भाषायी कौशलों की श्रेणी में रखेंगे एवं उसी कक्षा में जो बच्चे कक्षा के अनुरूप स्तर पर हैं उन्हें कक्षानुरूप आवश्यक कौशल वाली श्रेणी में रखेंगे।
2. पाठ्यपुस्तक के पाठों में से उन सबसे उपयुक्त पाठों का चयन करना जिनके द्वारा इन कौशलों को प्राप्त कर पाना संभव होगा
3. पाठ्यपुस्तक से चुने गए पाठ के द्वारा किन कौशलों पर काम किया जाएगा और उसकी प्रक्रिया क्या होगी इसे सविस्तार उल्लेखित करना

कक्षा 1 से 3 के लिए रणनीति-

a. कक्षा 1 से 3 के लिए आधारभूत भाषाई कौशलों में सुनकर समझना और बोलकर समझना, पढ़कर समझना, लिखकर समझना और रचनाशील अभिव्यक्ति सभी के कुछ आधारभूत कौशल शामिल किए गए हैं। शिक्षकों से अपेक्षित है कि कक्षा 1-3 में पूरा ध्यान इन्हीं कौशलों की प्राप्ति पर लगाया जाए।

b. कक्षा 1-3 के लिए इन कौशलों से संबंधित सीखने के वही प्रतिफल चुने गए हैं जो पढ़ना-लिखना सीखने

की दृष्टि से सबसे अधिक महत्वपूर्ण हैं। कुछ प्रतिफल जिन पर अगली कक्षाओं में भी काम किया जाना है, उन्हें छोड़ा गया है।

c. इन भाषाई कौशलों को प्राप्त करने के लिए इन कक्षाओं की पाठ्यपुस्तक के किन-किन पाठों का चयन किया जाना होगा, इसे तय किया गया है। इसके लिए राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् की पुस्तकों में से उपयुक्त पाठों का चयन किया गया है और उन्हें पढ़ाने के तरीके क्या होंगे, इसे भी विस्तार से दिया जा रहा है।

कक्षा 4 और 5 के लिए रणनीति-

a. कक्षा 4 और 5 को देखें तो इन कक्षाओं में बच्चों से अपेक्षित होता है कि वे आधारभूत भाषाई कौशलों (सुनकर समझना और बोलकर समझना, पढ़कर समझना, लिखकर समझना और रचनाशील अभिव्यक्ति) को हासिल कर चुके हो ताकि उनके साथ अन्य कौशलों पर काम किया जा सके मगर हाल की स्थिति में जहाँ हम सीखने के स्तर में गिरावट आई है, इसे मानकर चल रहे हैं, कक्षा 4-5 में पहले इन्हीं आधारभूत कौशलों पर काम करना होगा। उसके बाद ही उनकी कक्षा के लिए आवश्यक प्रतिफलों की पूर्ति की जा सकेगी।

b. आधारभूत भाषाई कौशलों के साथ-साथ कक्षा स्तर के अनुसार शामिल किए गए कौशलों और उनसे संबंधित प्रतिफलों पर भी इन कक्षाओं में काम किया जाना आवश्यक है। इसके लिए भी अत्यंत आवश्यक प्रतीत होने वाले प्रतिफलों का चयन किया गया है और जिन प्रतिफलों पर अगली कक्षाओं में काम होना संभावित है, उन्हें छोड़ा गया है। उदाहरण के लिए पत्र लेखन, निबंध लेखन आदि के साथ कक्षा 6 में भी काम किया जाएगा, अतः उन्हें इन कक्षाओं में छोड़ा गया है।

कक्षा 6 से 8 के लिए रणनीति-

a. कक्षा 6 से 8 को देखें तो इन कक्षाओं में बच्चों से अपेक्षित होता है कि वे कक्षा 1 से 5 तक के अपेक्षित आधारभूत भाषाई कौशलों को हासिल कर चुके हो ताकि उनके साथ अन्य कौशलों पर काम किया जा सके मगर हाल की स्थिति में जहाँ हम मानकर चल रहे हैं सीखने के स्तर में गिरावट आई है, कक्षा 6 से 8 में भी पहले इन्हीं आधारभूत कौशलों पर काम करना होगा। इसके अंतर्गत ऐसे सीखने के प्रतिफलों को केंद्र में रखा गया है जो बुनियादी दक्षताओं पर आधारित हैं और इन दक्षताओं को प्राप्त करके ही बच्चों के लिए पढ़ने-लिखने की सार्थक दुनिया से सहजता से जुड़ना सम्भव हो पायेगा और कक्षा स्तर के लिए आवश्यक प्रतिफलों की पूर्ति की जा सकेगी। इसके लिए कुछ कौशल और संबंधित सीखने के प्रतिफल दस्तावेज में रेखांकित किए गए हैं जिन्हें Foundational Literacy या आधारभूत भाषाई कौशल कहा जा रहा है। ये कौशल ऊपर दिए गए कक्षा 4 और 5 के बढ़ते क्रम में हैं। उच्च-प्राथमिक कक्षाओं के अनुसार इस सूची में एक-दो आवश्यक कौशलों को जोड़ा गया है।

b. आधारभूत भाषाई कौशलों के साथ-साथ कक्षा स्तर के अनुसार शामिल किए गए कौशलों और उनसे संबंधित प्रतिफलों पर भी इन कक्षाओं में काम किया जाना आवश्यक है। इसके लिए भी अत्यंत आवश्यक प्रतीत होने वाले प्रतिफलों का चयन किया गया है और जिन प्रतिफलों पर अगली कक्षाओं में या अन्य विषयों में काम होना संभावित है, उन्हें छोड़ा गया है। उदाहरण के तौर पर देखें तो 'सुनकर समझना और सोचकर बोल पाना' भाषाई क्षमता से जुड़ा सीखने का प्रतिफल है और इसे फाउंडेशनल लिटरेसी के अंतर्गत शामिल किया गया है, वहीं "विभिन्न विधाओं में लिखी गई साहित्यिक सामग्री को उपयुक्त उतार-चढ़ाव और सही गति के साथ पढ़ना" कक्षा 6 से संबंधित प्रतिफल की अपेक्षित दक्षता है। इन्हीं बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए सीखने के प्रतिफलों का चुनाव संशोधित पाठ्यक्रम के अनुसार

किया गया है। जैसे कक्षा 6 के लिए चुने गए सीखने के प्रतिफलों में कुछ ऐसे प्रतिफलों को शामिल किया गया है जो कि कक्षा 5 से संबंधित हैं, लेकिन उन्हें कक्षा 5 में शामिल नहीं किया गया था। इसी प्रकार कक्षा 6 से संबंधित कुछ ऐसे प्रतिफलों को इस कक्षा से हटाकर कक्षा 7 और 8 की कक्षाओं में शामिल किया गया है।

c. कक्षा 1-8 तक के भाषाई कौशलों को प्राप्त करने के लिए इन कक्षाओं की पाठ्यपुस्तक के किन-किन पाठों का चयन किया जाना होगा, इसे तय किया गया है। इसके लिए राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् की पुस्तकों में से उपयुक्त पाठों का चयन किया गया है और उन्हें पढ़ाने के तरीके क्या होंगे, आगे इसे भी विस्तार से दिया गया है।

आवश्यक सीखने के प्रतिफल, पाठ्यपुस्तक के पाठ एवं शिक्षण प्रक्रियाएँ

कक्षा में कार्य की प्रक्रिया-

1- कक्षाओं को भाषाई कौशलों और संबंधित प्रतिफलों के आधार पर निम्न रूप से समूहों में देखा गया है-

a. कक्षा 1 से कक्षा 3 तक एक समूह जिसके साथ आधारभूत कौशल और प्रतिफलों पर काम होना है।

b. कक्षा 4 और 5 का समूह, जिसमें आधारभूत कौशलों व प्रतिफलों के साथ कक्षा स्तर के अनुकूल (ग्रेड स्तर वाले बच्चों के लिए) अन्य प्रतिफलों पर काम होना है।

c. कक्षा 6 से 8 तक के कौशल, जिनमें कक्षा 1-5 तक के लिए आवश्यक आधारभूत भाषाई कौशलों के साथ-साथकक्षा स्तर के मुताबिक अन्य उच्च स्तरीय कौशलों और संबंधित प्रतिफलों पर काम किया जाना है ताकि विद्यार्थी को अगली कक्षाओं के लिए तैयार किया जा सके।

2- जिन कक्षाओं में बच्चों की संख्या सीमित हो वहाँ पर उपरोक्त आधार पर समूह बनाकर आरम्भिक कौशलों पर काम किया जा सकता है लेकिन जहाँ पर बच्चों की संख्या अधिक हो और उन्हें एक समूह में लाना संभव न हो, वहाँ पर कक्षावार काम के साथ ही आरम्भिक कौशलों पर काम किए जाने की आवश्यकता होगी।

3- पाठ्यपुस्तक के पाठों को लेकर भी लचीलापन अपनाया जाना आवश्यक होगा। उदाहरण के लिए कक्षा 1-3 में काम करने की शुरुवात करते समय सभी के लिए किसी एक कक्षा की ही पाठ्यपुस्तक के चित्र, कविता या कहानी का उपयोग करते हुए आरंभिक प्रतिफलों पर काम करने की योजना बनाई जा सकती है। इसी तरह से 6-8 में शिक्षण के दौरान उसी कक्षा के चुने हुए पाठ को आधार बनाते हुए शुरुआत की जा सकती है।

4- इसी तरह पाठ्यपुस्तकों के पाठों का चयन करते समय ध्यान रखा गया है कि सीमित समय में किन पाठों पर काम करते हुए सभी चयनित प्रतिफलों पर काम किया जा सकता है। वर्तमान परिस्थितियों में कम समय को देखते हुए सभी पाठों पर सघन रूप से काम करने के बजाय कुछ पाठों को चुनकर उनके द्वारा ही संभई चुनी गई दक्षताओं और प्रतिफलों पर काम किया जा सकता है। कुछ पाठों को बच्चे स्वयं से भी पढ़कर समझ सकते हैं, या उनका उपयोग अतिरिक्त सामग्री के रूप में किया जा सकता है। उदाहरण के लिए कक्षा एक की पाठ्यपुस्तक के कुल 20 पाठों में से 11 पाठों एवं अन्य गतिविधियों को चुना गया है। इन पाठों के माध्यम से चयनित प्रतिफलों की प्राप्ति संभव है। यहाँ यह समझना आवश्यक है कि पाठों के चयन के दौरान किसी भी पाठ को एकदम से नकारा नहीं गया है। सिर्फ यह ध्यान में रखा गया है कि जिन पाठों में कार्य की अधिक संभावना है उनको शामिल किया गया है। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए पाठों का चयन किया गया है। यह चयन निम्न बिंदुओं को ध्यान में रखकर किया गया है-

- भाषाई गतिविधियों और मौखिक बातचीत के लिए पुस्तक के कुछ स्प्रेड चित्रों के उपयोग का सुझाव दिया गया है।
- पाठों को चयनित करने के पीछे दो तर्क काम में लिए गए हैं- एक, कम समय में सभी वांछित कौशलों

और चयनित प्रतिफलों पर काम किया जा सके।

- दो, बच्चों के साथ काम करने में अधिक रोचकता और सक्रियता बनाए रखने वाले पाठों को तरजीह दी गई है।
- कम रोचक पाठों को इसमें शामिल नहीं किया गया है।

नीचे दी गई तालिका में कक्षावार चुने हुए पाठों को रखा गया है। यह सूची सुझाव के तौर पर दी गई है, शिक्षक स्वयं इस तरह का अभ्यास करते हुए निर्धारित प्रतिफलों के अनुसार पाठों का चयन कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त पुस्तकालय की सामग्री का उपयोग भी किया जा सकता है।

कक्षा 1

सीखने के प्रतिफल	पाठ/पेज नंबर	सुझावात्मक कक्षा प्रक्रियाएँ
सुनकर समझना सोचकर बोल पाना		
• चित्रों पर बात कर पाये उसके विवरण के बारे में मौखिक रूप से बता पाए। • अपनी भाषा अथवा/ स्कूल की भाषा का इस्तेमाल करते हुए बातचीत कर पाए। जैसे- कविता, कहानी सुनाना, निजी अनुभव को साझा करना।	पेज 4-5 कक्षा प्रक्रिया का दृश्य पेज 30-31 स्कूल मैदान में बच्चों के खेलने का दृश्य पेज 206 स्कूल से बच्चों की छूट्टी का दृश्य पेज 207 सड़क पार करती बच्चियों का दृश्य पाठ-1 आम की टोकरी (कविता)	• बच्चों के साथ सभी चित्रों पर बातचीत करें । क्या, क्यों, कैसे सवाल के साथ बच्चों को चित्र पर गहराई से विचार कर अपने विचार अभिव्यक्त के करने के अवसर दें। • आम की टोकरी कविता हाव-भाव के साथ गाएँ एवं चित्र पर बातचीत करें और बच्चों को उनके अनुभव साझा करने के लिए प्रेरित करें। • आम की टोकरी कविता पर बच्चों से चर्चा करें उनके अनुभव सुनें। जैसे क्या आप ऐसे लोगों को देखा है जो सब्जी /फल या अन्य सामग्री बेचते हैं? क्या आप ऐसे बच्चों को जानते हैं?, वे यह काम क्यों करते होंगे? क्या वे स्कूल जाते हैं आदि।
• कविता कहानी सुनकर सरल प्रश्नों के उत्तर मौखिक रूप से दे पाए	पाठ-2 चार चने पाठ-4 चूहो! म्याउँ सो रही है पेज-107 कविता- झूला पाठ-11 लालू और पीलू	• कविता को हाव-भाव के साथ गाकर सुनाएं। • बच्चों के साथ कविता/कहानी पर खुले छोर वाले प्रश्नों के साथ बातचीत करें। • बातचीत के दौरान कुछ चीजों के नाम पर भी बात की जा सकती है जैसे लालू पीलू पाठ के आधार पर लाल वस्तुओं, पीली वस्तुओं का अंदाज़ा लगाकर नाम पूछना। • कविता-कहानी पर बच्चों को रोल प्ले का अवसर दें। • इस पूरी गतिविधि के दौरान बच्चों की मातृभाषा का उपयोग करें।

• सरल मौखिक निर्देशों का पालन कर पाएं।	पेज -9 चित्र बनाओं पेज- 99 बिन्दूओं को पूरा कर रंग भरो। पेज -96-97 बताओ, ये चीजें कैसी आवाजें करती है? पेज- 126-127 आओ, कागज का कुत्ता बनाएँ। पेज- 128-131- अँगूठे की छाप	• बच्चों को निर्देश दें कि वे रंगों से अपनी उंगलियों की छाप बनाकर उससे चित्र बनाने का प्रयास करें। • बच्चों को कक्षा के विभिन्न स्थानों को छूने का निर्देश दें जैसे- नासिर तुम दरवाजे को छू कर आओ। देव तुम खिड़की को छूओ। श्वेता तुम मेज के पास आओ। • कागज से अन्य क्या-क्या चीजें बनायी जा सकती है, बच्चों से पूछे व हर एक बच्चे को मौका दें कि वो अपने मित्रों को कुछ बनाने के निर्देश दें।
पढ़कर समझना और समझ कर व्यक्त करना		
• परिचित शब्दों को कविता / कहानी को शब्द-कार्ड/ श्यामपट्ट/ पोस्टर आदि में पहचान पाए। शब्दों, वाक्यों को कहानी के सही क्रम में सजा पाए। (वर्णों व शब्दों की पहचान) • कक्षा एक के अंत तक आते आते अधिकाँश अक्षर एवं मात्राएं पहचान पाए।	पेज 42-43 मटके में क्या-क्या पेज-45 चित्र देखकर पढ़ों-लिखों पेज 150-157 चित्र देखकर पढ़ों पेज-65-69 गतिविधि- चित्र देखकर पढ़ों समझों पाठ-9 तितली पेज -115 चित्रों को शब्दों से मिलाओं पाठ-135-137 चित्र देखकर पढ़ों पेज- 139-143 मेला (पढ़ों और समझों) पाठ-17 बंदर और गिलहरी पाठ-18 हलीम चला चांद पर पाठ-19 दौड़ पेज -197 मकड़ी-ककड़ी-लकड़ी	• कुछ कविताओं के हर एक वाक्य को अलग – अलग कागज की पट्टियों पर लिखें एवं पहले पूरी कविता का पाठ बच्चों के साथ मिलकर करें, फिर बच्चों को कागज की पट्टियाँ देकर उन्हें कविता को सही क्रम में व्यवस्थित करने को कहें। इस प्रक्रिया मे उनकी मदद भी करें। • कविता चार्ट पर उगंली रखते हुए पढ़े। • बच्चों से लक्ष्यित शब्दों को चार्ट में पहचानने के लिए कहें। • कविता-कहानी में दिये चित्र से उचित शब्द मिलाकर पहचानने को कहें। • लक्ष्यित वर्ण से नये-नये शब्द बनाने के लिए बच्चों से कहें और उन शब्दों से शब्दजाल बनवायें। • पाठ्यपुस्तक में अक्षर, मात्रा की गतिविधियाँ उचित निर्देश के साथ दी गयी है, जिनके माध्यम से वर्ण, मात्रा की पहचान करवाते हुए पठन-लेखन को विकसित करवाये। • हर वर्ण की आवाज से बच्चे से उसकी भाषा के शब्दों को जरूर पूछें और उन्हें बोर्ड पर दर्ज करें।

• शब्द भंडार की दृष्टि से हिन्दी के 200 शब्दों से परिचय।		• पाठ्यपुस्तक में दी गयी कविता, कहानी के माध्यम से नये-नये शब्दों से परिचय करवाये और उन शब्दों के अर्थ क्षेत्रीय भाषा में बताने के लिए कहें। • इसके लिए शब्द चित्र कार्ड (पाठ आधारित शब्दों के कार्ड बना कर काम किया जाए। (फ़्लैश कार्ड के माध्यम से किया जा सकता है) • बच्चों के साथ शब्द अंताक्षरी जैसी गतिविधियां करवाएँ।
लिखकर अभिव्यक्त कर पाना		
• सुनी हुई कहानी/कविता के आधार पर चित्र बनाने का प्रयास करना/चित्र बनाना।	गतिविधि-1 नाम पाठ -5 गमला पाठ-6 अनार पाठ-7 राजा आ पाठ-8 इमली-ईख पेज-38-41 (खाली जगह पर न शब्द लिखकर शब्दों को पढ़ों) पेज – 45-47 चित्र देखकर पढने-लिखने, वर्ण जोड़कर शब्द बनाना एवं पढ़ना तथा शब्द से वर्ण को अलग करने की गतिविधि. पेज- 58-59 तुक मिलाओ पेज-91 आओ, शब्द बनाएँ पाठ- 12 बंदर आया पाठ-15 खिलौने वाला पेज-154-159 चित्र के नाम का शुरू अक्षर लिखे, शब्द बनाकर लिखो व पढ़ो, खाली जगह पर सही वर्ण लिखो	• कहानी/कविता के आधार पर बच्चों को चित्र बनाने को कहें। • बच्चों की चित्रात्मक अभिव्यक्ति की सराहना करें और उस पर बातचीत करें। • कक्षा में बच्चों को आड़ी तिरछी, खड़ी और पड़ी रेखाएं, आधा और पूरा गोल भी बनाने का अभ्यास करवाएं। • कहानी/कविता के पात्रों के नाम, जगहों के नाम वगैरह लिखने को कहें एवं उनकी लिखने में मदद करें। • पाठ के अनुसार बच्चों को दिये गए वर्णों के आधार पर एक मिलते जुलते अर्थात समान ध्वनि वाले शब्द चित्रों के साथ बोर्ड पर लिखें। जैसे न – नल, नाक, नाला, आदि बच्चों को पढ़वाएँ एवं फिर देखकर लिखने को कहें। • शब्द से वर्ण को अलग करने की गतिविधि में बच्चों से शब्दों में वर्ण पहचान कर गोला लगवाएँ। ताली वाले खेल के माध्यम शब्दों को वर्णों में तोड़ना, जोड़ना से पहले मौखिक कार्य करें फिर लिखित कार्य करें। • इसी प्रकार अं वाले शब्दों का अभ्यास करवाएं।

• लिखना सीखने की प्रक्रिया के दौरान अपने विकासात्मक स्तर के अनुसार चित्रों, आड़ी-तिरछी रेखाओं, अक्षर-आकृतियों, स्व-वर्तनी (इनवेंटिड स्पैलिंग) और स्व-नियंत्रित लेखन (कन्वेंशनल राइटिंग) के माध्यम से सुनी हुई और अपने मन की बातों को अपने तरीके से लिखने का प्रयास कर पाएं।	पेज-169 कैसे -कैसे रंग पेज- 171 चित्र पहचानकर नाम लिखो पेज-195 सब्जिओं के चित्र पहचानकर नाम लिखने की गतिविधि तथा वर्ण से शब्द बनाने की गतिविधि।	• शब्द बनाने वाले खेल में शब्दों की रेलगाड़ी, अलग अलग वर्णों को जोड़कर शब्द बनाना, तुकबंदी वाले शब्द बना जैसे नाना, खाना, गाना आदि गतिविधियां नियमित रूप से पाठ के अनुसार करें। • पाठ में वस्तु चित्रों के नाम खोजकर उन पर गोला लगने का काम भी करवा सकते हैं। • कक्षा कक्ष व विद्यालय परिसर में मौजूद में मौजूद वस्तुओं की लेबलिंग करवाने का काम किया जा सकता है। इसके लिए हर बच्चे को 5-7 कागज की पर्चियों पर इन वस्तुओं के नाम लिखने का काम दें। • कक्षा में बच्चों के नामों का लेबल बनवाकर बच्चों से दिवार पर लगवाएं।
• सुनी हुई और अपने मन की बातों को अपने तरीके से और तरह- तरह से- चित्रों /शब्दों द्वारा/ लेबलिंग/ लिखित रूप से अभिव्यक्त कर पाएं।	पाठ्यपुस्तक के चित्र, कक्षा-कक्ष व बच्चों के परिवेश में मौजूद वस्तुएं	1- पाठ्यपुस्तक में दिये गये तमाम चित्रों को बच्चों से बनवाये व उनके नाम हिन्दी के साथ क्षेत्रीय भाषा में भी लिखने के लिए प्रेरित करें। 2- कक्षा-कक्ष व उनसे बाहर मौजूद वस्तुओं तथा अलग-अलग जगहों के नाम व उनके उपयोग के निर्देश लिखने को प्रेरित करें। 3- बच्चों को थीम जैसे खेल, जंगल, घर, जानवर आदि दें एवं इंससे संबन्धित कोई भी चित्र वो बना सकते हैं। चित्र बनाने के बाद उस चित्र मे लेबलिंग करने को कहें।

अभिव्यक्ति (स्वतंत्र एवं सृजनात्मक अभिव्यक्ति)		
• देखी गई वस्तुओं का चित्र बना पाएं और उसमें रंग भर पाएं। • कविता / कहानी / परिचित परिस्थितियों का अभिनय कर पाएं।	गतिविधि-2 कक्षा/ आसपास के चित्र बनाना। पेज- 58-59 बिन्दू जोड़कर चित्र पूरा करों और रंग भरो। पाठ 11 – लालू और पीलू पेज 101-102	• चित्र बनाने के अतिरिक्त मिट्टी से खिलौने बनाने तथा मिट्टी अथवा बालू में विभिन्न आकृतियाँ बनाने के अवसर दिये जायें। • कविता-कहानी के दिये पात्रों पर मुखौटा, कठपुतली बनाने तथा उनके साथ अभिनय करने के अवसर दिये जाएँ। पाठ्यपुस्तक की अन्य कहानियों एवं कविताओं के साथ भी यह कार्य करें।

कक्षा 2

सीखने के प्रतिफल	पाठ/पेज नंबर	सुझावात्मक कक्षा प्रक्रियाएँ
सुनकर समझना सोचकर बोल पाना		
• चित्रों पर बात कर पाएं उसके विवरण के बारे में मौखिक रूप से बता पाएं।	पाठ- 1, तितली और कली, पेज 10-17	• शिक्षक बच्चों को सबसे पहले 'तितली और कली' कविता के चित्रों को दिखाएं और चित्र से संबंधित बच्चों के अनुभवों को जोड़ते हुए बातचीत करें । चित्र कविता में जुड़ाव बनाते हुए बच्चों का ध्यान आकर्षित करें। कविता की मुख्य घटनाओं एवं चित्रों पर प्रश्न करें और बच्चों के अनुभवों को अधिक से अधिक बोलने के लिए प्रेरित करें और उसे ध्यान से सुनें।
• अपनी भाषा अथवा / और स्कूल की भाषा का इस्तेमाल करते हुए बातचीत कर पाएं। जैसे- कविता, कहानी सुनना, निजी अनुभवों को साझा करना।	पाठ 4 - भालू ने खेली फुटबॉल पेज- 32-43 पाठ 5- चालाक चीकू, पेज- 44-49	• शिक्षक बच्चों के साथ 'भालू ने खेली फुटबॉल, चालाक चीकू आदि कहानी के चित्रों पर बात करें। चित्र कहानी में जुड़ाव बनाते हुए बच्चों का ध्यान आकर्षित करें। कहानी की मुख्य घटनाओं एवं चित्रों पर प्रश्न करें। • बच्चों को उनकी अपनी भाषा में कहानी बताने के लिए प्रेरित करें। • बच्चों के विचारों को जानें। • बच्चों से क्यों? कैसे? क्या होता? जैसे प्रश्न पूछें। • जैसे शेर का बच्चा पेड़ पर अटक जाता तो क्या होता? तुम अगर भालू या शेर होते तो तुम क्या करते? आदि। ऐसे "चालाक चीकू" पाठ से प्रश्न बना कर बच्चों से पूछे। • बच्चों को संबंधित चयनित कविता/कहानी पर समूह में अभिव्यक्ति करने और नेतृत्व करने के अवसर उपलब्ध कराना।
• कविता / अनुभव / विवरण हाव भाव से सुना पाए • सुनकर मौखिक प्रश्नों के उत्तर दे पाए	पाठ- 12, ऊँट चला, पेज 98-105	• शिक्षक ऊंट चला कविता को बच्चों के साथ हाव भाव के साथ गायें। बच्चों से कविता गवाएँ। बच्चों से कविता पर प्रश्न करें – जैसे आपने कभी ऊंट देखा है क्या? क्या खाते है? क्या-क्या करते हैं? ऊंट कैसे चल रहा है? कविता के अनुसार अभिनय करने को कहें। • चित्रों पर विवरण सुना पाए एवं कक्षा दो के अंतिम चरण तक आते आते सुनी हुई बात पर अपना मत व्यक्त कर पाए

• सरल मौखिक निर्देशों का पालन कर पाए एवं इनके अनुसार कार्य कर पाएं • दैनिक जीवन में घटित घटनाओं का 2-4 वाक्यों में लिखित विवरण दे पाएं	पाठ- 12, ऊँट चला, पेज 98-105	• कविता को कहानी की तरह बच्चों के सामने पेश करें और उसपर चर्चा करें। बच्चों के अनुभवों को सुनें। • इसके अतिरिक्त कक्षा में बच्चों के साथ निर्देशों को लेकर कुछ खेल-खेलें जैसे - दाहिने हाथ से बायाँ कान पकड़ो, गोल घूम जाओ, अपने जीभ से अपने नाक को छूने की कोशिश करें... आदि। • शिक्षक बच्चों से जानने का प्रयत्न करें कि वे सुबह में क्या खाते हैं और उस खाद्य पदार्थ का चित्र बनाने के लिए प्रेरित करें। (जो बच्चे लिखने में समस्या महसूस करते हैं वे मौखिक तौर पर बताएं)। साथ ही साथ उन्हीं चीजों का नाम लिखने के लिए बोलें।आवश्यकता अनुसार शिक्षक बच्चों की सहायता करें।
• कहानी / अनुभव / विवरण हाव भाव से सुना पाएं • सुनकर मौखिक प्रश्नों के उत्तर दे पाएं • चित्रों पर विवरण सुना पाएं एवं कक्षा दो के अंतिम चरण तक आते आते सुनी हुई बात पर अपना मत व्यक्त कर पाएं • सरल मौखिक निर्देशों का पालन कर पाए एवं इनके अनुसार कार्य कर पाएं • दैनिक जीवन में घटित घटनाओं का 2-4 वाक्यों में लिखित विवरण दे पाएं	पाठ- 3, कौन बोला म्याऊँ, पेज- 24-31	• "कौन बोला म्याऊँ," – के चित्रों को दिखाएँ और शिक्षक बच्चों से चर्चा करें। उनके अनुभवों से जोड़ने का प्रयास करें। जैसे- चित्र दिखाकर पूछें कि आप लोगों को क्या दिख रहा है? क्या अपने कभी पिल्ला देखा है? क्या आप लोगों के घर में खटिया है? इसमें क्या होता है? आप लोग कितने जानवरों को पहचानते हैं? आदि। • बच्चों को उनके विचार रखने के पर्याप्त मौके दें। • कहानी सुनाने के बाद बच्चों को अपने अनुसार कहानी/चित्रों का विवरण बताने को कहें। • पिल्ला, चूहा, मेंढक और उनके संदर्भ के बाकी जानवरों के बारे में बच्चों के अनुभवों को सुनें। • बच्चों से तरह - तरह के जानवरों की आवाज निकालने के लिए बोलें। जैसे- पिल्ला कैसे आवाज करता है? बिल्ली कैसे आवाज निकलती है, चूहा, आदि। • बच्चों से चर्चा करें वे कोई काम कैसे करते हैं? उस पर उन्हें कुछ वाक्य लिखने को कहें। (जो बच्चे लिखने में समस्या महसूस करते हैं वे मौखिक तौर पर बताएं, जो वाक्य न लिख पाएँ उन्हें कहानी में आए शब्दो/चीजों के नाम लिखने को कहें

पढ़कर समझना और समझ कर व्यक्त करना		
• परिचित शब्दों को कविता / कहानी को शब्द-कार्ड/ श्यामपट्ट/ पोस्टर आदि में पहचान पाएं। शब्दों, वाक्यों को कहानी के सही क्रम में सजा पाएं। • कक्षा एक के अंत तक आते-आते अधिकाँश अक्षर एवं मात्राएं पहचान पाएं। • शब्द भंडार की दृष्टि से हिन्दी के 200 शब्दों से परिचय। (फ़्लैश कार्ड के माध्यम से किया जा सकता है) • परिचित शब्दों को कविता / कहानी को शब्द कार्ड / श्यामपट्ट पर लिखा पहचान पाएं एवं इन्हें प्रवाह से पढ़ पाएं।	पाठ 13, आई एक खबर, पेज-106-113 पाठ 14 चूहे को मिली पेंसिल पाठ- 11 मड़ई मेला, पेज-90-97	• शिक्षक बच्चों को कविता/ कहानी हावभाव से सुनाने के बाद संबंधित कविता का पोस्टर बच्चों के साथ मिलकर बनाएँ और उसे बच्चों के पहुँच के अंदर कक्षा में चिपकाएँ। ध्यान रखें आवश्यकता अनुसार यह पोस्टर को वहाँ से हटाया भी जा सके ऐसे ही लगाएँ। • कविताओं/कहानियों को हाव भाव के साथ सुनाएँ। पढ़ने की प्रक्रिया में पोस्टर/बोर्ड पर बड़े अक्षरों में कविता कहानी लिखते हुए उंगली रखते हुए पढ़ने का अभ्यास करवाएँ। इसमें पहले शिक्षक पढ़ें फिर बच्चों को बारी बारी से पढ़वाएँ। • शिक्षक कविता/ कहानी की प्रत्येक लाइन को पट्टी में उतारें और बच्चों को सही क्रम में सजाने के लिए कहें। आवश्यकतानुसार शिक्षक बच्चों की सहायता भी करें। • शिक्षक कविता/कहानी में आए शब्दों के शब्द चित्र कार्ड बनाएँ। कार्डों के माध्यम से शब्द पहचान, एवं शब्दों को जोड़कर क्रम में वाक्य बनाने की गतिविधि कराएं।

• कक्षा दो के समाप्त होते-होते सभी अक्षरों और मात्राओं से शब्द बना पाए और पढ़ पाएं • कक्षा दो के समाप्त होते-होते पुस्तकालय की सरल किताबों में से छोटी कहानी / कविता की किताब पढ़ पाएं (उदाहरण- बरखा शृंखला की तीसरे व चौथे स्तर तक की किताबें) • नई सरल पुस्तकों को पढ़कर उन पर बात कर पाएं • कक्षा एक-दो के स्तर के अनुसार लक्ष्य भाषा का पर्याप्त शब्द भंडार हो		• आई एक खबर कविता गाने के बाद बच्चों से पढ़वाएँ तथा एक जैसी आवाज़ों वाले शब्द छांटने को कहें। शिक्षक आवश्यकतानुसार बच्चों की मदद करें। • शिक्षक बच्चों के साथ नियमित तौर पर पाठ्य पुस्तक के अतिरिक्त किताबें पढ़ने के अवसर उपलब्ध कराएं। इसी उद्देश्य के लिए शिक्षक बच्चों को पुस्तकालय से उनकी पसंद की किताब चुनने को कहें। • बेहतर होगा पढ़ने के लिए एक घंटा प्रतिदिन सुनिश्चित करें। • शिक्षक स्वयं बच्चों को कहानियाँ पढ़कर सुनाएँ। उन्हें समूहों में बांटकर किताबें पढ़ने को दें एवं सहयोग करें। • बच्चों द्वारा पढ़ी गई किताबों पर चर्चा करें। बच्चों को किताब पर अपने विचार रखने को कहें। कक्षा की दीवार पर शब्द चार्ट बनाया जाये। बच्चों द्वारा बताए जाने वाले शब्दों को चार्ट पर लिखा जाये। उन्हें पढ़ने के लिए कहा जाये ।

लिखकर अभिव्यक्त कर पाना		
• लिखने सीखने की प्रक्रिया में चित्र बनाना, आदि तिरछी रेखाएँ /अक्षर आकृतियाँ बनाते हैं /अक्षर देख कर लिख पाते हैं। • स्वयं से स्पेलिंग बनाने का प्रयास करते हैं (इनवेंटिड स्पैलिंग) अपने मन की बातों को अपने तरीके से लिखने का प्रयास करते हैं। चित्रों /वस्तुओं के नामों को लिखित रूप से लेबल कर पाते हैं। • अक्षरों को जोड़कर/मन से सरल शब्द, शब्दों से छोटे एवं सरल वाक्य बना पाते हैं। • चित्र/टेक्स्ट पढ़कर उसके बारे में दो तीन वाक्यों में लिख पाएँ।/प्रश्नों के उत्तर लिख पाएँ। अपने परिवेश के अनुभवों को छोटे एवं सरल वाक्यों में लिख पाएं।	पाठ- 1, तितली और कली, पेज 10-17 पाठ- 6, चींटी और हाथी, पेज- 50-59 पाठ- 9, मिट्टी, पेज 76-81 पाठ 13, आई एक खबर, पेज- 106-113	• शिक्षक बच्चों को कहानी/कविता के आधार पर चित्र बनाने को कहें। जैसे- फूल का चित्र, तितली का चित्र, चींटी का चित्र आदि। • शिक्षक कविता/कहानी से ही अलग-अलग स्तर आधारित गतिविधियां करवाना जैसे कि बच्चों द्वारा कविता के अलग-अलग चरित्र का चित्र बनवाना। • बनाए गए चित्रों के नाम लिखने को कहें। • चित्रों के बारे में एक दो बातें लिखने को कहें। शिक्षक बच्चों को लिखने में मदद करें। • शिक्षक बच्चों के साथ लिखने को लेकर अभ्यास करने हेतु कविता/कहानी में आए शब्दों के साथ पढ़ने का अभ्यास कराते हुए उन्हें वर्णों में तोड़ने, जोड़ने का अभ्यास कराएं। तत्पश्चात शिक्षक ध्वनि जागरूकता पर भी काम करें। • कुछ चयनित शब्दों की मदद से छोटे वाक्य बनाने का अभ्यास कराएं। जैसे: तितली पेड़ पर बैठी है । एक जंगल में एक हाथी रहता था । वह दिनभर घूमता रहता था, आदि। • शिक्षक यह अभ्यास ब्लेक बोर्ड पर शब्द लिखते हुए, या शब्द कार्डों के माध्यम से भी कर सकते हैं। बोर्ड पर कार्य करने के बाद बच्चों को कॉपी में लिखने को कहें। • कहानी एवं चित्रों के बारे में बच्चों से बात करें फिर उन्हें अपनी बातों को दो से तीन वाक्यों में लिखने को कहें। जो बच्चे वाक्य नहीं लिख पा रहे हों उन्हें शब्दों में अपनी बात लिखने को कहें। शिक्षक बच्चों को वाक्यों में उनकी बात लिखने हेतु मदद करें। • कहानी/कविता के आधार पर प्रश्न पूछे एवं एक-एक लाइन में लिखने को कहें। शिक्षक प्रतिदिन बच्चों से लेखन गतिविधि करें जिसमें बच्चों से उनके रोज़मर्रा के अनुभवों को तीन चार सरल वाक्यों में लिखने को कहें।

अभिव्यक्ति (स्वतंत्र एवं सृजनात्मक अभिव्यक्ति)		
• देखी गई वस्तुओं का चित्र बना पाएं और उसमें रंग भर पाएं। • कविता / कहानी / परिचित परिस्थितियों का अभिनय कर पाएं। • कविता / कहानी सुनकर उसके अनुसार चित्र बना पाएं, चित्रों को नाम दे पाएं। • अपनी कल्पना से कविता-कहानी को आगे बढ़ा पाएं।	पाठ- 3, कौन बोला म्याऊँ, पेज- 24-31 पाठ- 10, बहुत हुआ, पेज 82-89 पाठ- 11, मड़ई मेला, पेज- 90-97 पाठ 16, छोटे-छोटे कदम, पेज 128-133	• शिक्षक कविता पठन से पहले बच्चे किन-किन जानवरों के बारे में जानते हैं?, वे क्या खाते है?, कैसे चलते है?, क्या-क्या करते है? उस पर बातचीत किया जा सकता है। • कविता से ही अलग-अलग स्तर आधारित गतिविधियां करवाना जैसे कि छोटे बच्चों द्वारा कविता के अलग-अलग चरित्रों का चित्र बनवाना और उसपर रंग भरने के लिए कहना। • बच्चों को सुनाई गयी कहानियों पर समूह में मिलकर अभिनय कराएं। विभिन्न परिस्थितियाँ दे एवं बच्चों को उसके अनुरूप नाटक तैयार करने को कहें जैसे – मेला देखने जाना, आदि। • शिक्षक बच्चों को प्रतिदिन एक कहानी सुनाएँ। कहानी में आ रही घटनाओं पर चर्चा करें। बच्चों से क्यों? कैसे? ऐसा होता तो क्या होता? तुम होते तो क्या करते? आदि प्रकार के प्रश्न पूछें। • बच्चों को कल्पना करने, अभिव्यक्ति के मौके दें। • बच्चों को प्रतिदिन एक कहानी पढ़ने के मौके दें। • शिक्षक बच्चों से वर्षा और बादल की चित्र बनाने के लिए कहें। चित्र को अपने हिसाब से नाम देने के लिए प्रेरित करें। • पढ़ी एवं सुनी गयी कहानी पर चर्चा के बाद बच्चों को अपनी कल्पना से कहानी के आधार पर चित्र बनाने के मौके दें। • बच्चों से उनके बनाए चित्रों के नाम लिखने को कहें। बच्चों को अपने मन से पात्रों के नाम रखने की स्वतंत्रता हो। • पाठ्यपुस्तक/अन्य किताबों से सुनाई गयी कहानियों के साथ अधूरी कहानी पूरी करो, कहानी को आगे बढ़ाओ जैसी गतिविधियां कराएं। यह गतिविधियां मौखिक एवं लिखित दोनों तौर पर की जा सकती हैं। • बच्चों को अपने हिसाब से सोचकर कहानी को आगे बढ़ाने के लिए कहें। जैसे- उनसे अलग-अलग जीव-जन्तुओं की आवाज निकालने के लिए कहें, आदि।

		• बच्चों के लेखन के स्तर को ध्यान में रखते हुए उन्हें अपने विचार लिखने को कहें। • शिक्षक बच्चों से कहानी/कविता को आगे बढ़ाने के लिए कहें, उसे बोर्ड पर लिखें, उसे पढे, अलग-अलग वाक्य, शब्द और अक्षरों का अनुमान लगाने को कहें, पहचान करें और लिखें। • आगे कविता में क्या होगी अनुमान लगाने के लिए कहना। जैसे- इन गड्ढों में अच्छे, सुंदर, पौधे खूब लगाएंगे.....।

कक्षा 3

सीखने के प्रतिफल	पाठ/पेज नंबर	सुझावात्मक कक्षा प्रक्रियाएँ
सुनकर समझना सोचकर बोल पाना		
• चित्रों पर बात कर पाएं उसके विवरण के बारे में मौखिक रूप से बता पाएं। • साधारण और समेकित चित्रों के बारे में बारीकी से बात कर पाएं। • कक्षा स्तर के निर्देशों को समझकर उसके अनुसार कार्य कर पायें • अपने अनुभवों को कुछ पंक्तियों में लिखित व मौखिक रूप से व्यक्त कर पाएं। • स्वतंत्र रूप से सवाल पूछ पाएं	पाठ-3 मुसवा रइथे जी (पेज-22 एवं 23) पाठ-4 बंदरबाँट (पेज-24 एवं 25)	• पाठों के चित्रों जैसे-मुसवा, मछली, मेचका, सफ़ेद बिल्ली, काली बिल्ली और बंदर आदि के बारे मे चर्चा करना, चित्र में कौन-कौन दिखाई दे रहा है? क्या हो रहा है? कौन क्या कर रहा है? आदि प्रश्न बच्चों के सामने रखना और उनके द्वारा चित्र पर बातचीत (यह बातचीत कक्षा 1, 2 व 3 तीनों स्तरों पर स्थित बच्चों के लिए होगी) • बच्चों को विविध निर्देशों से परिचित करवाया जाए जैसे- बंदरबाँट कहानी से पात्रों को किस प्रकार अभिनय करना है, कैसे रोटी को लपकना है, बिल्ली की आवाज म्याऊँ-म्याऊँ कैसे बोलना है आदि। • विविध विषयों पर अपने अनुभव साझा करने के अवसर प्रदान किए जाएँ जैसे- यदि तुम बंदर की जगह होते तो क्या करते? आप लोग कभी बिल्ली देखे हैं? कहाँ? और कौन से रंग के बिल्ली देखे हैं? मुसवा के भी कोई संगी-साथी होही काय? ओखर मन के काय-काय नाम होही? साथ ही बच्चों को भी सवाल पूछने के अवसर दिए जाएँ।
• कविता / कहानी / अनुभव / विवरण हाव भाव से सुना पाए • कविता कहानी या अन्य पाठ के मूल भाव को समझ पाए और उसके आधार पर प्रश्नों के उत्तर दे पाएं।	• कविताएं पाठ-1 सीखो पाठ-7 चाँद का कुर्ता पाठ-16 अगर पेड़ भी चलते होते पाठ-18 जंगल में स्कूल पाठ-22 क्या तुम मेरी अम्मा हो?	• इन सभी कविताओं के पोस्टर बनाएं और कक्षा में लगायें, कविताओं को अभिनय सहित गाया जाए, बच्चों को कविता गाने-दोहराने के अवसर दिए जाएँ, कविता के शीर्षक और उसके मूल भाव से जुड़े प्रश्न मौखिक रूप से किए जाएँ, कविताओं को पोस्टर से पढ़ा जाए, कविताओं में आए शब्दों के शब्द कार्ड्स बनाए जाएँ और बच्चों को उन्हें पढ़ने और पहचानने के अवसर दिए जाए। • दी गई कहानियों/कविताओं को पहले शिक्षक अभिनय तथा उचित उतार-चढ़ाव के साथ सुनाए, बच्चों के साथ कहानी के शीर्षक, पात्रों तथा कथानक पर चर्चा की जाए, बच्चों से कहानी के आधार पर प्रश्न करें जैसे जंगल में स्कूल होगा तो कौन क्या बनेगा? कहानी के पोस्टर बनाए जाएँ, शब्द कार्ड्स बनाए जाएँ।

पढ़कर समझना और समझ कर व्यक्त करना		
• अपने संदर्भ की वस्तुओं जैसे रैपर्स, छोटे मोटे साइन बोर्डस, स्कूल में लिखे सरल निर्देश पढ़कर समझ पाए और उसके अनुसार कार्य कर पाएं।	पाठ-21 मैत्रीबाग पाठ-4 बंदरबाँट पाठ-2 सच्चा बालक पाठ-5 मीठे बोल पाठ-11 दादा जी पाठ-14 कौन जीता पाठ-23, कविता का कमाल पाठ-15, मै हूँ महानदी	• मैत्रीबाग पाठ पढ़ाते समय डाक घर, पोस्टकार्ड, लिफ़ाफ़ा, तथा संभव हो तो पुराने समय के चिट्ठी को दिखाएँ साथ ही कक्षा में कुछ अन्य वस्तुओं के रैपर्स लाए जाए और बच्चों द्वारा उन्हें पढ़वाया जाए। स्कूल के भ्रमण पर ले जाया जाए और वहाँ स्थान-स्थान पर लिखे हुए निर्देश समझने के अवसर दिए जाए। यदि स्कूल में निर्देश नहीं लगे हो तो बनाए भी जा सकते हैं जैसे- शौचालय जाने का रास्ता, बाहर जाने का रास्ता, पुस्तकालय की ओर जाने का संकेत आदि। • इसी तरह बंदर बाँट कहानी के आधार पर बनाए गए शब्द कार्डों, एवं छोटे वाक्यों जैसे दो बंदर थे, एक बिल्ली थी आदि को पढ़ने का प्रयास कराएं।
• परिचित शब्दों को कविता / कहानी को शब्द कार्ड / श्यामपट्ट आदि में पहचान पाएं एवं इन्हें प्रवाह से पढ़ पाएं • सभी अक्षरों और मात्राओं से शब्द बना पाएं और पढ़ पाएं		**दी गई कहानी-कविताओं के लिए शब्द कार्ड्स बनाए जाएँ** • शब्द कार्ड्स में समान ध्वनि वाले शब्द पहचानने और उन्हें अनुमान से पढ़ने, पोस्टर से कविता-कहानियाँ अंदाज़ से पढ़ने का अभ्यास करवाना , पंक्तियों/घटनाओं के क्रम को पहचानने के अभ्यास करवाना चित्र कार्ड से शब्द कार्ड्स को मिलाते हुए शब्दों को पढ़ने के अभ्यास करवाना • शब्द कार्ड्स में एक सी मात्राओं के शब्द अलग करना, नए शब्द बनाने के अभ्यास करवाना ।
• अपने स्तर के पाठ कविता /कहानी को पढ़ कर उसके मूल भाव को समझ पाएं और सरल शब्दों में मुख्य बिंदुओं को बता पाएं।		• कविताओं/कहानियों को पोस्टर से पढ़ा जाए, उनमें आए शब्दों और वाक्यों की तरफ ध्यान दिलाया जाए, समान ध्वनि वाले, तुक वाले शब्दों की ओर ध्यान दिलाएँ, कविता और कहानी किस बारे में है इस पर चर्चा करें तथा बच्चों को अपनी बात रखने के मौके दिए जाएँ। • मैं हूँ महानदी पाठ के आधार पर महानदी पाठ पढ़ने का प्रयास करें एवं पाठ में आने वाले शहरों, गाँवों, नदियों के नाम ढूंढकर सूची बनाने को कहें।

• तरह तरह के पाठ पढ़कर उसके आधार पर प्रश्न पूछ पाएं और अपनी राय व उत्तर गढ़ पाएं। सहपाठियों से चर्चा कर पाएं। • कहानियों, कविताओं / रचनाओं की भाषा की बारीकियों (जैसे- शब्दों की पुनरावृत्ति, संज्ञा,सर्वनाम, विभिन्न विराम-चिन्हों का प्रयोग आदि) की पहचान और प्रयोग कर पाएं।		• बच्चे समूह में बैठकर इन पाठों को स्वयं पढ़ें, उन पर बात करें ऐसे अवसर देना, पाठ के पीछे दिए गए प्रश्न बच्चे एक-दूसरे से पूछे या शिक्षक हर समूह में बैठकर पढ़े गए हिस्से के बारे में बात करें। • कहानी और कविता को पढ़ते हुए बार-बार आने वाले शब्द, संज्ञा-सर्वनाम शब्द, विराम चिह्न आदि की ओर ध्यान दिलाएं।
लिखकर अभिव्यक्त कर पाना		
• सुनी हुई और अपने मन की बातों को अपने तरीके से और तरह- तरह से- चित्रों /शब्दों द्वारा/ लेबलिंग/ लिखित रूप से अभिव्यक्त कर पाएं।	पाठ-1 सीखो पाठ-23 कविता का कमाल	• सीखो कविता को बच्चों के साथ गाएँ उस पर चर्चा करें। बच्चों से कविता के आधार पर लिखने की गतिविधि करवाएं जैसे हँसते हुए फूलों का चित्र बनवाएं, कविता में आई वस्तुओं का चित्र बनाना एवं उनके आगे वस्तुओं का नाम लिखना। बच्चे वस्तुओं के बारे में एक-एक बात भी लिख सकते हैं।
• विभिन्न लेखन संबंधी गतिविधियों के अंतर्गत वर्तनी के प्रति सचेत होते हुए स्व-नियंत्रित (कन्वेंशनल राईटिंग कर पाएं।	पाठ-4 बंदरबाँट	• पाठ में दिए गए अभ्यास जैसे-किसने क्या कहा, सोचो और लिखो, भाषा की बात, खाली जगह पर क्या आएगा, अपने शब्दों में लिखो आदि को बच्चों द्वारा करवाना। क्या करना है इसे समझाया जाए और बच्चे स्वयं अभ्यास हल करें।

• तरह-तरह की रचनाओं/सामग्री कहानी, कविता, आदि को समझकर पढ़ने के बाद उस पर आधारित पूछे गए प्रश्न के उत्तर लिखित रूप से दे पाएं। • अलग-अलग तरह की रचनाओं/सामग्री (अखबार,बाल पत्रिका, आदि) को समझकर पढने के बाद उस पर अपनी प्रतिक्रिया लिखते है, पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिख पाएं।	पाठ-5 मीठे बोल पाठ-7 चाँद का कुर्ता	• दिए गए पाठों के अर्थ, शीर्षक, कथानक आदि वाले अभ्यास, सोचो आगे क्या हुआ होगा, तुम होते तो क्या करते? आदि अभ्यास बच्चों द्वारा करवाए जाएँ। क्या करना है इसे समझाते हुए बच्चे स्वयं अभ्यास हल करें। चाँद का कुर्ता कविता पर सवाल करें जैसे तुम किन किन बातों पर ज़िद करते हो? चाँद अपनी माँ से क्या बोल रहा है? आदि। • बरखा की पुस्तकें (स्तर 2-3) और अन्य बाल पत्रिकाएँ, कहानियाँ-कविताएँ एवं पाठ्यपुस्तक में केवल पढ़ने के लिए दी गई रचनाओं को भी बच्चों को एकल या समूह में खुद पढ़ने को दिया जाए और उनके बारे में अपने विचार लिखने को कहा जाए।
• किसी चित्र को देखकर चार पाँच वाक्यों में विवरण लिख सकें।	पाठ-18 जंगल में स्कूल पाठ-4 बंदरबाँट	• कहानियों के चित्र देखकर उन्हें कहानी के रूप में लिखने को कहा जाए, इनके अलावा भी कोई अन्य परिचित चित्र (जैसे-हाथी, कुत्ता, बिल्ली, गाय, बकरी आदि) देकर उसके बारे में कुछ वाक्य लिखने को कहा जाए।
अभिव्यक्ति (स्वतंत्र एवं सृजनात्मक अभिव्यक्ति)		
• कविता / कहानी सुनकर देखकर उसके अनुसार चित्र बना पाएं , चित्रों को नाम दे पाएं।	पाठ-18 जंगल में स्कूल	• दिए गए पाठ से चित्र बनाने व रंग भरवाने के अभ्यास करवाना जैसे-जंगल में स्कूल पाठ के आधार पर बच्चों से चित्र बनवाएँ, उन चित्रों के नाम लिखने को कहें। • इसी तरह पाठ के बाहर से भी कहानी सुना सकते हैं तथा कहानी से संबन्धित चित्र बनवाकर उनका नाम लिखने को कह सकते हैं।

• स्वतंत्र चित्र बना पाएं और उनके बारे में शब्द/वाक्य लिख पाएं।	पाठ-14 कौन जीता (कहानी के पात्रों के चित्र)	• बच्चों को उनके रुचि अनुसार स्वतंत्र चित्र बनाने तथा उसके बारे मे कुछ शब्द या वाक्य लिखने को कहें। कौन जीता पाठ कहानी के पात्र कौआ हंस या अन्य पक्षियों के चित्र भी बनवा सकते है तथा उनके बारे में कुछ शब्द या वाक्य लिखने कह सकते हैं।
• अपनी कल्पना से कविता-कहानी को आगे बढ़ाना। • मनपसंद विषय पर छोटी कविता / कहानी बना पाना और सुना पाना।	पाठ-7 चाँद का कुर्ता	• दी गई कविता को आधार लेते हुए बच्चों को गर्मी आई या बारिश आई शीर्षक पर कविता के रूप में लिखने को कहा जाए तथा कविता को आगे बढ़ाने को कहा जाए। • बच्चों को कल्पनाओं के आधार पर कहानी बनवाने के लिए उन्हे एक U आकार के घेरे मे बैठाएँ और शुरू मे एक वाक्य बोलें जैसे- रविवार को मै बाजार गया था। अब बच्चे आपके द्वारा बोले गए वाक्य मे अपने कल्पनाओं के आधार पर नए वाक्य जोड़ते जाएँ। यह क्रम इसी तरह से आगे बढ़ता जाएगा। धीरे-धीरे यह एक कहानी बन जायेगी। • बच्चों को कुछ विषय दिए जाएँ और उन्हें उनमें से अपनी पसंद का विषय चुनकर उस पर कहानी/कविता लिखने के लिए कहा जाए ।

कक्षा 4

सीखने के प्रतिफल	पाठ/पेज नंबर	सुझावात्मक कक्षा प्रक्रियाएँ
सुनकर समझना और सोचकर बोल पाना (आधारभूत भाषायी कौशल)		
• अपनी भाषा अथवा/ स्कूल की भाषा का इस्तेमाल करते हुए बातचीत कर पाना। जैसे- कविता, कहानी सुनाना, निजी अनुभव को साझा करना। • कविता कहानी सुनकर सरल प्रश्नों के उत्तर मौखिक रूप से दे पाएं • कविता / कहानी / अनुभव / विवरण हाव भाव से सुना पाए • कक्षा स्तर के निर्देशों को समझकर उसके अनुसार कार्य कर पायें • अपने अनुभवों को कुछ पंक्तियों में मौखिक रूप से व्यक्त कर पाए। • स्वतंत्र रूप से सवाल पूछ पाएं	• पाठ-2, मैनपाट की सैर • पाठ-13, अनदान के परब-छेरछेरा (छत्तीसगढ़ी) • पाठ-16 राजिम मेला (सहेली को पत्र) • पाठ-3, सावन आगे (छत्तीसगढ़ी)	• घूमने वाले स्थान (मैनपाट, राजिम मेला) के बारे में बातचीत करने के साथ ही साथ उनके कुछ रोचक या चुनौतीपूर्ण अनुभव को कुछ पंक्तियों में सुनना। • मैनपाट में कौनसी कौनसी जगह है जिसे लोग देखने जाते हैं। • छेरछेरा, सावन आगे छत्तीसगढ़ के मुख्य त्यौहारों में से हैं इन्हें मनाने के लिए क्या तैयारी करनी पड़ती है या कैसे मनाया जाता है? पर बात करना तथा उसमे कौन -कौन से गीत गाया जाता है उसे कक्षा में हावभाव के साथ बच्चों को गाने का अवसर देना। • शिक्षक राजिम मेला जैसा दृश्य का आयोजन स्कूल स्तर पर कर सकते हैं तथा जिससे बच्चों की कलाकृतियाँ तथा रुचियों को पहचानने में मदद मिलेगी। • सावन आगे कविता को हाव भाव के साथ गाएँ। बच्चों से कविता पर चर्चा करें। जैसे बारिश में क्या क्या होता है? किसान के लिए बारिश क्यों ज़रूरी है? ज्यादा बारिश होने पर क्या होगा? चर्चा के दौरान शिक्षक छत्तीसगढ़ी शब्दों के हिन्दी अर्थ/नाम पर भी चर्चा करें। बच्चों को दोनों भाषाओं के अनुभव दें।

सुनकर समझना और सोचकर बोल पाना (कक्षानुरूप आवश्यक कौशल)		
• कविता / कहानी, विवरण हाव भाव के साथ सुना पाए एवं उस पर आधारित सरल प्रश्नों के उत्तर दे पाना • किसी कहानी / नाटक / वृत्तांत को सुनकर उसका क्रम बता पाना। • परिचित परिस्थियों/ अपने अनुभवों के बारे में व्यवस्थित बात कह पाना। • सुनाई गई या अवलोकित विषयवस्तु पर क्या, कब जैसे प्रश्नों को पूछ पाएं और उनके उत्तर दे पाएं। बोलते समय लिंग, वचन का सामंजस्य रख पाएं।	• पाठ-2, मैनपाट की सैर • पाठ-13, अनदान के परब-छेरछेरा(छत्तीसगढ़ी) • पाठ-16 राजिम मेला (सहेली को पत्र) पाठ-3, सावन आगे (छत्तीसगढ़ी)	• घूमने वाले स्थान (मैनपाट, राजिम मेला) के बारे में बातचीत करने के साथ ही साथ उनके कुछ रोचक या चुनौतीपूर्ण अनुभव को कुछ पंक्तियों में सुनना और कुछ विशेष बिंदु केन्द्रित करना। जैसे राजिम मेला में कौनसी-कौनसी चीजों की दुकाने लगती हैं । • शिक्षक राजिम मेला जैसे दृश्य का आयोजन स्कूल स्तर पर कर सकते हैं तथा जिससे बच्चों की कलाकृतियाँ तथा रुचियों को पहचानने में मदद मिलेगी । बच्चों से मेले में स्टाल लगाने के अभिनय करवाएँ। • अनदान के परब छेरछेरा- में कितने लोग समूह बनाकर गीत गाते है? इस सवाल के आधार पर अन्य सवाल विकसित कर, बच्चों से गतिविधि करवाना। साथ ही पाठ आधारित प्रश्नों पर चर्चा करें। • सावन आगे पाठ तथा सावन के महीने के अन्य त्योहारों पर चर्चा करना ।
पढ़कर समझना और समझ कर व्यक्त करना (आधारभूत भाषायी कौशल)		
• सभी अक्षरों और मात्राओं से शब्द बना पाए और पढ़ पाना • परिचित शब्दों को कविता / कहानी को शब्द कार्ड / श्यामपट्ट आदि में पहचान पाए एवं इन्हें प्रवाह से पढ़ पाना।	• पाठ-5, मेरा एक सवाल • पाठ-17, चल रे तुमा बाटे बाट (छत्तीसगढ़ी) • पाठ-12, कूकु और भूरी	• कविताओं/कहानियों को पोस्टर से पढ़ा जाए, उनमें आए शब्दों और वाक्यों की तरफ ध्यान दिलाया जाए, समान ध्वनि वाले, तुक वाले शब्दों की ओर ध्यान दिलाएँ, कविता और कहानी किस बारे में है इस पर चर्चा करें तथा बच्चों को अपनी बात रखने के मौके दिए जाएँ।

• पुस्तकालय की सरल किताबों में से छोटी कहानी / कविता की किताब पढ़ पाएं (उदाहरण- बरखा श्रृंखला की चौथे स्तर तक की किताबें व एकलव्य या इकतारा की किताबें, साइकिल पत्रिका पढ़ पाएं।) • अपने स्तर के पाठ कविता /कहानी को पढ़ कर उसके मूल भाव को समझ पाए। और सरल शब्दों में मुख्य बिंदुओं को बता पाएं। • तरह तरह के पाठ पढ़कर उसके आधार पर प्रश्न पूछ पाना और अपनी राय व उत्तर गढ़ पाए। सहपाठियों से चर्चा कर पाएं। • कहानियों, कविताओं / रचनाओं की भाषा की बारीकियों (जैसे- शब्दों की पुनरावृत्ति, संज्ञा,सर्वनाम, विभिन्न विराम-चिन्हों का प्रयोग आदि) की पहचान और प्रयोग कर पाना।		• मेरा एक सवाल कविता पर शिक्षक बच्चों से अभिनय करवाएं, जैसे शिक्षक, सैनिक, किसान, मजदुर, आदि। के काम के बारे में (विशेष पात्र से जुड़े कार्य व्यक्त करने का अवसर) यह कार्य समूह में करवाया जाये । • कविता/कहानी में तुकांत शब्दों का प्रयोग तथा बच्चों के साथ उनका अभ्यास एक नई कविता/गीत का निर्माण करने के लिए प्रेरित करें । जैसे पाठ-5,मेरा एक सवाल • कूकु और भूरी की कहानी बच्चों के माध्यम से (बच्चों से उनके अनुभव सुने, क्या वह भी घर अपने भाई बहन से ऐसे ही लड़ते हैं) एक दुसरे से अपने घर अनुभव को कहानी के रूप में निर्मित करना तथा समूह बच्चों के साथ चर्चा करना • कक्षा के अन्दर पढने का कोना विकसित करें और जिसमे सरल और छोटी कहानी/कविताओं को शामिल करें । (उदाहरण- बरखा श्रृंखला की चौथे स्तर तक की किताबें व एकलव्य या इकतारा की किताबें, साइकिल पत्रिका) • कूकु और भूरी कहानी में बहुत सी जगह पर विराम चिन्हों, अर्धविराम, उद्धरण चिन्हों का प्रयोग किया गया (इन चिन्हों प्रयोग समझाने के लिए) यह कहानी के अलग-अलग अनुच्छेद को प्रत्येक बच्चों से पढवाएं । तत्पश्चात विराम चिन्ह हटाते हुए अनुच्छेद बच्चों को पढ़ने को दें एवं सही जगह पर विराम चिन्ह का इस्तेमाल करने को कहें।

पढ़कर समझना और समझ कर व्यक्त करना (कक्षानुरूप आवश्यक कौशल)		
• अपने स्तर के पाठ कविता /कहानी को पढ़ कर उसके मूल भाव को समझ पाएं और सरल शब्दों में मौखिक रूप से समझा पाएं। • अपने संदर्भ से अतिरिक्त भी वस्तुओं जैसे रैपर्स, बाजार के साइन बोर्डस, पढ़कर समझ पाएं और उसके अनुसार कार्य कर पाएं। • तरह-तरह के "पाठ' पढ़कर उसके आधार पर प्रश्न पूछ पाएं और अपनी राय व तर्क गढ़ पाएं। सहपाठियों से चर्चा कर पाएं। सहपाठियों के सवालों के जवाब दे पाएं।	• पाठ-5, मेरा एक सवाल • पाठ-17, चल रे तुमा बाटे बाट (छत्तीसगढ़ी) • पाठ-12, कूकु और भूरी • पाठ-9, दीप जले	• 3-4 बच्चों का समूह बनाना तथा समूह में किसी कविता/कहानी पर बातचीत करना जैसे कूकु और भूरी (इनमें झगड़ा क्यों हुआ, क्या आप भी अपने घर पर इसी तरह झगड़ते हो?) • कहानी/कविता से वह शब्द चुने जिनके चित्र बनाये जा सकते (जैसे, दड़बा के बारे में लिखना, दड़बा क्या होता है? कैसे बनता है? इत्यादि।) • बच्चों द्वारा कहानियों से जुड़े चित्रों को क्रम में लगाने/जोड़ने और फिर उनके अनुसार सुनाई गई कहानी को शिक्षक द्वारा लिखा जाए और बच्चों को पढ़ने के लिए दिया जाए। फिर इन कहानियों से जुड़े प्रश्न पूछे जाएँ और बच्चों को भी प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित किया जाए। • मेरा एक सवाल पाठ समूह में पढ़ाया जाए तथा बच्चों से अभिनय भी करवाया जाये(अलग-अलग पात्रों को ध्यान में रखते हुए) बच्चों से उनके माता-पिता/अभिभावकों के बचपन से जुड़े अनुभव जानने और उन्हें सुनाने के मौके दिए जाएँ। शिक्षक इस चर्चा की शुरुआत अपने बचपन के अनुभवों और अपेक्षाओं को सुनाने से करें। • मेरा एक सवाल कविता की पंक्तियों में दोहराव है बच्चों को ऐसी कविताएं पढ़ने के लिए दीजिये। जिससे वे वाक्यों शब्दों का अंदाज़ा लगते हुए पढ़ने का प्रयास करें। • दीप जले कविता में बच्चों से दीप (दीपक) से जुड़े त्यौहारों पर चर्चा तथा 'दिये' कैसे बनाते हैं इसकी सम्पूर्ण प्रक्रिया पर बच्चों के साथ संवाद करना। अगर संभव हैं तो किसी कुम्हार के घर जाकर दिये बनाने की प्रक्रिया का अवलोकन करवाना तथा उनके विचारों को सुनना।

लिखकर अभिव्यक्त कर पाना (आधारभूत भाषायी कौशल)		
• अपने मन की बातों को अपने तरीके से लिखने का प्रयास करते हैं। • सभी वर्णों और मात्राओं के परिचय के साथ लेखन का अभ्यास। • चित्र/टेक्स्ट पढ़कर उसके बारे में दो तीन वाक्यों में लिख पाएँ।/प्रश्नों के उत्तर लिख पाएँ। • विभिन्न लेखन संबंधी गतिविधियों के अंतर्गत वर्तनी के प्रति सचेत होते हुए स्व-नियंत्रित (कन्वेंशनल राइटिंग कर पाएं। • किसी चित्र को देखकर चार पाँच वाक्यों में विवरण लिख सकें। • अपनी बातों को छोटे पैरा के रूप में लिख पाएँ।	• पाठ-4 साहसी रूपा • पाठ-11, जीत खेल भावना की • पाठ-10, संत रविदास • पाठ-19, हाय रे मेरी चारपाई	• बच्चों के दैनिक जीवन की गतिविधि को शामिल करते हुए जैसे वह सुबह से शाम तक क्या-क्या करते हैं? ऐसा क्या किया जिससे वह खुश हुए हो? ऐसा क्या हुआ जिससे उनको बुरा लगा आदि बातों पर अपने विचार लिखने को कहें। शिक्षक आवश्यकतानुसार मदद करें। • दैनिक रूप में बच्चे कई प्रकार के खेल खेलते हैं उन खेलों का अनुभव को सीखने की प्रक्रिया में जोड़ना उन खेलों की सम्पूर्ण प्रक्रिया को विस्तार से चर्चा करना जैसे कबड्डी खेल क्या होता हैं तथा इसे खेलने की क्या प्रक्रिया हैं । • बच्चों को विविध प्रकार के खेलों की सूची बनाने को कहें। उन खेलों में किस किस तरह की सामग्री इस्तेमाल की जाती है लिखने को कहें। • साहसी रूपा कहानी जैसे अनुभवों को बच्चों के साथ बातचीत करें जैसे क्या आप लोगों ने भी किसी की मदद की हैं? बच्चों के अनुभव सुने, यह लिखित तथा मौखिकरूप में भी हो सकते हैं । • साहसी रूपा पाठ में चेहरे देखकर भाव पहचानना गतिविधि को करवाना और अन्य पाठों में दिए गए अभ्यास जैसे-किसने क्या कहा, सोचो और लिखो, भाषा की बात, खाली जगह पर क्या आएगा, अपने शब्दों में लिखो आदि को बच्चों द्वारा करवाना। क्या करना है इसे समझाया जाए और बच्चे स्वयं अभ्यास हल करें। • दिए गए पाठों के अर्थ, शीर्षक, कथानक आदि वाले अभ्यास, सोचो आगे क्या हुआ होगा, तुम होते तो क्या करते? आदि अभ्यास बच्चों द्वारा करवाए जाए। क्या करना है इसे समझाया जाए और बच्चे स्वयं सवाल हल करें। • बच्चों के गाँव में अलग अलग कहानियाँ कथाएँ सुनाई जाती हैं, उन कथाओं में क्या बातचीत की जाती हैं, आदि बच्चों को सुनाने को कहें । साथ ही लिखने के लिए भी प्रेरित करें।

लिखकर अभिव्यक्त कर पाना (कक्षानुरूप आवश्यक कौशल)		
• श्रुत लेख लिख पाएं। • पढ़कर क्यों, कब कैसे वाले सवालों के जवाब लिख पाएं। • परिचित विषयवस्तु पर छोटा अनुच्छेद लिख पाएं।	• पाठ-4 साहसी रूपा • पाठ-11, जीत खेल भावना की • पाठ-14, उर्जा की बचत • पाठ-15, चूड़ीवाला • पाठ-18, पिंजरे का जीवन	**कक्षास्तर से जुड़े कार्य** • बच्चों को बिना टेक्स्ट वाली चित्र-कथाएं दी जाएँ और उन्हें उन चित्रों के नीचे उसमें हो रही घटनाओं को लिखने को कहा जाए। जैसे उर्जा (बिजली) की बचत कैसे करें? गाँव में चूल्हे पर खाना कैसे बनाया जाता हैं उसकी क्या प्रकिया होती हैं । • कहानियों पर चर्चा करने के बाद बच्चों को कहानी को संक्षिप्त में लिखने हेतु कहें। • जीत खेल भावना की पाठ के आधार पर बच्चों से अलग अलग खेलों पर चर्चा करते हुए खेल के नियमों को लिखने के लिए कहें। पाठ संबन्धित अन्य अभ्यास कराएं। • चूड़ी वाला पाठ पर कार्य करते हुए बच्चों से कहानी की विभिन्न घटनाओं पर चर्चा करें। पाठ के प्रश्नों से जुड़ाव बनाते हुए अर्थ समझने में मदद करें । साथ ही लिखने की गतिविधि कराएं जैसे गाँव में चूड़ी वाला आता हैं तो वह चूड़ी के आलावा क्या-क्या चीजे लाता हैं, उन सामग्रियों की सूची बनाओ । तुम्हारे गाँव के लोग क्या क्या बेचने जाते हैं? आदि। • पिंजरे का जीवन एक संवेदनशील कहानी/कविता हैं इसे उसी संवेदनाओं के साथ सुनाया जाए । बच्चों से प्रश्न पूछना तथा लिखवाना (जब किसी को बंधन में देखते हैं तो आप क्या महसूस करते हैं ?)

अभिव्यक्ति (स्वतंत्र एवं सृजनात्मक अभिव्यक्ति) (आधारभूत भाषायी कौशल एवं कक्षानुरूप आवश्यक कौशल वाले बच्चों हेतु)		
• चित्र देखकर, कविता / कहानी सुनकर उसके अनुसार चित्र बना पाए , चित्रों को नाम दे पाए। • स्वतंत्र चित्र बना पाए और उनके बारे में शब्द/वाक्य लिख पाएं। • मनपसंद विषय पर छोटी कविता / कहानी बना पाएं और सुना पाएं। • चित्र देखकर उसमें घट रही किसी घटना, वस्तु, परिस्थिति का वर्णन अपने शब्दों में लिखित रूप में कर पाएं। • अपनी बात को कविता, कहानी आदि के रूप में लिख पाएं।	• पाठ-20, अमीर खुसरो की पहेलियाँ	• बच्चों के परिचित संदर्भ और अनुभवों से जुड़े चित्रों को कक्षा में प्रस्तुत किया जाए। बच्चों को अपनी रुचि के अनुसार चित्रों को चुनने के लिए कहें। बच्चे अपने चुने हुए चित्रों से जुड़े अपने अनुभवों/विचारों/भावों पर कक्षा में बात करें और फिर उसे लिखने का प्रयास करें। जो बच्चे अभी लिखना-पढ़ना सीख रहे हैं, उनकी मदद शिक्षक और अन्य बच्चे करें। • बच्चों को कुछ विषय दें और उन्हें उनमें से अपनी पसंद का विषय चुनकर उस पर कहानी/कविता लिखने के लिए कहा जाए। जैसे जंगल, नदी, गमला, पेड़-पौधे आदि। • पाठ-अमीर खुसरो की पहेलियाँ, बच्चों से भी इस तरह की पहेलियों का निर्माण करवाना । स्थानीय भाषा (खासकर छत्तीसगढ़ी में पहेलियां) को खोजना । • अपनी बात को किसी पहेली के माध्यम से कहना और दूसरे बच्चों को उस बात का अर्थ समझने या जबाव देना । • बच्चों को कुछ वस्तुओं के नाम दें जैसे चारपाई, पंखा, नारियल, आदि इन वस्तुओं के आधार पर पहेली बनाने को कहें। तत्पश्चात बच्चों से पहेली बूझो खेल कराएं। (यह कार्य कक्षा में सभी बच्चों के साथ किया जा सकता है)

कक्षा 5

सीखने के प्रतिफल	पाठ/पेज	सुझावात्मक कक्षा प्रक्रियाएँ
सुनकर समझना और सोचकर बोल पाना (आधारभूत भाषायी कौशल)		
• अपनी भाषा अथवा/स्कूल की भाषा का इस्तेमाल करते हुए बातचीत कर पाए। जैसे- कविता-कहानी सुनाना, निजी अनुभव को साझा करना। • कविता कहानी सुनकर सरल प्रश्नों के उत्तर मौखिक रूप से दे पाएं। • कविता / कहानी / अनुभव / विवरण हाव भाव से सुना पाए • कक्षा स्तर के निर्देशों को समझकर उसके अनुसार कार्य कर पायें • अपने अनुभवों को कुछ पंक्तियों में मौखिक रूप से व्यक्त कर पाए। • स्वतंत्र रूप से सवाल पूछ पाएं	पाठ13 जंगल के राम कहानी पाठ 3 सोन के फर पाठ 9 श्रम के आरती पाठ 15एक और गुरु दक्षिणा पाठ 21 सुनता के डोर पाठ 4 मैं सड़क हूँ पाठ 5 रोबोट	• कहानी एवं कविता एवं उनके चित्रों पर बात करना, चित्र में कौन-कौन दिखाई दे रहा है, क्या हो रहा है, कौन क्या कर रहा है आदि प्रश्नों पर बातचीत करना। • दिये गए पाठों को पढ़ते हुए शिक्षक बच्चों से पाठ में आए विभिन्न बिन्दुओं पर बातचीत करें। जैसे मैं सड़क हूँ पाठ के अंतर्गत सड़क बनने की प्रक्रिया, सामग्री, सड़क बनाने की आवश्यकता पर चर्चा करें। • सोन के फर पाठ छत्तीसगढ़ी में पढ़कर सुनाएँ। उस पर बच्चों की भाषा में ही बातचीत करें। पाठ में आए शब्दों पर चर्चा करें एवं बच्चों से उनके हिन्दी अर्थों को पता लगाने को कहें। • बच्चों के साथ दी गयी कहानियों पर चर्चा करने के बाद उन्हें स्वयं से कहानी को संक्षिप्त रूप से सुनाने को कहें। बच्चे पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त कहानियाँ भी कक्षा में सुनाएँ। • बच्चों को विविध निर्देशों से परिचित करवाया जाए, जैसे– कक्षा के बाहर जाकर कितनी वस्तुएँ देखी उनके बारे में बताओ, स्कूल के मैदान में क्या-क्या देखा इसे बताओ, कुछ कंकड़ इकट्ठे करके लाओ, पुस्तकालय से कहानियों की पुस्तकें खोजकर लाओ, निर्देशानुसार चित्र बनाओ आदि। • विविध विषयों पर अपने अनुभव साझा करने के अवसर प्रदान किए जाएँ तथा सवाल पूछने के अवसर दिए जाएँ।

सुनकर समझना और सोचकर बोल पाना (कक्षानुरूप आवश्यक कौशल)		
• कविता / कहानी, विवरण हाव भाव के साथ सुना पाएं एवं उस पर आधारित क्या, कब, कहाँ, किससे, कैसे और क्यों वाले प्रश्नों के उत्तर पूरे वाक्यों में दे पाएं • किसी कहानी / नाटक / वृत्तांत को सुनकर उसका मूल तत्व समझ पाएं • परिचित परिस्थितियों के बारे में व्यवस्थित बात कह पाएं • सुनाई गई या अवलोकित विषयवस्तु पर 'क्यों' और 'कैसे' जैसे प्रश्नों को पूछ पाएं और उनके उत्तर दे पाएं • बोलते समय भाषा की बारीकियों का ध्यान रख पाएं। विराम, अर्ध विराम और कविता सुनते समय उतार-चढ़ाव का ध्यान रख पाएं।	1 मैं अमर शहीदों का चारण पाठ 4 मैं सड़क हूँ पाठ13 जंगल के राम कहानी पाठ 3 सोन के फर 6.चित्रकार मोर 7 क्यूँ क्यूँ छोरी	• प्रश्न करने से संबंधित कौशल के विकास के लिए शिक्षक बच्चों से प्रश्न करने को कहें और स्वयं उसके उत्तर दें। उदाहरण के लिए "चित्रकार मोर" पाठ के अनुसार पहले सारे पक्षी किस रंग के हुआ करते थे सभी किसके पास रंग मांगने गए जैसे सवालों से शुरुआत की जा सकती है। एक-दो बार के बाद बच्चों को इस खेल में मजा आने लगेगा और वे अपनी बारी आने पर प्रश्न पूछने के लिए तैयार मिलेंगे। • बच्चों के समक्ष कहानियों और कविताओं को पूरे हाव-भाव और उतार-चढ़ाव के साथ पढ़ा जाए। इस हेतु पुस्तकालय से बाल-साहित्य की पुस्तकों का भी उपयोग किया जाए। इन पाठों/पुस्तकों में अलग-अलग परिस्थितियों में आए अलग-अलग वाक्यों और अभिव्यक्तियों पर बच्चों का ध्यान दिलाया जाए और उस वाक्य में किसी शब्द विशेष पर बल देना किस प्रकार से अर्थ को प्रभावित करता है इसे बताया जाए। ठीक इसी तरह से बच्चों को अलग-अलग लय वाली कविताओं को सुनने के मौके दिए जाएँ और फिर उनसे सुना भी जाए। • बच्चों के साथ किसी कहानी पर नाटक तैयार किया जाये। जहां बच्चे डाइलॉग को हाव भाव के साथ बोलें। नाटक को कक्षा में प्रदर्शित किया जाये।

पढ़कर समझना और समझ कर व्यक्त करना (आधारभूत भाषायी कौशल)		
• अपने स्तर के पाठ कविता /कहानी को पढ़ कर उसके मूल भाव को समझ पाए और उसके आधार पर प्रश्न गढ़ कर पूछ पाएं। चर्चा कर पाएं। • विभिन्न रैपर्स, होर्डिंग्स, बाजार के साइन बोर्डस, विज्ञापन, अखबारों की सुर्खियां, आदि में लिखी सरल सूचनाओं को पढ़कर समझ पाए और उस पर प्रतिक्रिया दे पाएं। • कहानियों, कविताओं / रचनाओं की भाषा की बारीकियों (जैसे- शब्दों की पुनरावृत्ति, संज्ञा,सर्वनाम, विभिन्न विराम-चिन्हों का प्रयोग आदि) की पहचान और प्रयोग कर पाएं।	पाठ 25 चमत्कार पाठ 16 पत्र पाठ13 जंगल के राम कहानी पाठ 4 मैं सड़क हूँ पाठ 10 समय सबसे अमूल्यधन	• उपरोक्त प्रक्रियाओं में प्रश्न पूछने से संबंधित गतिविधि के साथ ही साथ बच्चों को समूह में विभाजित कर उन्हें कहानियों-कविताओं को पढ़ने दिया जाए। इसके बाद प्रत्येक समूह में से बारी बारी से बच्चों को क्या, क्यों, कैसे, कब, कौन आदि से संबंधित प्रश्न बनाने और उनके उत्तर बताने को कहा जाए। • इस कार्य की शुरुआत में पाठ/किताब में मौजूद चित्रों/आवरणपृष्ठ के जरिए विषय/कथानक का अनुमान लगाने को कहा जाए। • कक्षा-स्तर के बच्चों के साथ इन प्रश्नों के लेखन पर भी कार्य किया जाए। • समूहों को बनाते समय उसमें सभी स्तर के बच्चों को रखा जाए, जिससे कि अभी लिखना सीख रहे बच्चों द्वारा बनाए गए प्रश्नों को उसी समूह में मौजूद कोई दूसरा विद्यार्थी लिखे। • पाठों को पढ़ने के दौरान बच्चों का ध्यान संज्ञा सर्वनाम वाले शब्दों के इस्तेमाल पर दिलवाया जाये। साथ ही ऐसे शब्दों का चुनाव करते हुए वाक्य बनाने की गतिविधि करवाएं ।

पढ़कर समझना और समझ कर व्यक्त करना (कक्षानुरूप आवश्यक कौशल)		
• पाठ्य पुस्तकों और पुस्तकालय में उपलब्ध बाल साहित्य में संदर्भ में आए शब्द, शब्द - अवधारणाओं को पढ़कर उसके अर्थ समझ पाएं एवं उसका उपयोग कर पाएं • अपने स्तर के पाठ कविता /कहानी को पढ़ कर उसके मूल भाव को समझ पाएंऔर सरल शब्दों में मौखिक रूप से समझा पाएं। • अपने संदर्भ से अतिरिक्त भी वस्तुओं जैसे रैपर्स, बाजार के साइन बोर्डस, पढ़कर समझ पाए और उसके अनुसार कार्य कर पाए।	पाठ 12 गुण्डाधुर पाठ 16 पत्र पाठ 10 समय सबसे अमूल्यधन पाठ 4 मैं सड़क हूँ पाठ13 जंगल के राम कहानी	• प्रातःकालीन सभा/कक्षा में अखबारों में से खेल समाचारों को पढ़ा जाए। उनके साथ दिए चित्रों पर चर्चा की जाए और बच्चों से उन खेलों के बारे में प्रश्न पूछे जाएँ और उनके उत्तर भी दिए जाएँ। • अखबारों में उपस्थित विज्ञापनों पर चर्चा की जाए। बाजारों में देखे गए साइनबोर्ड और होर्डिंग्स पर भी बात की जाए। संभव हो तो उनके चित्र बच्चों को दिखाए जाएँ और उन्हें पढ़ा जाए। बच्चों से उनकी पसंद-नापसंद के विज्ञापनों और उसके वजहों पर बात की जाए। • बच्चों को दो दो के समूह में बांटकर पढ़ने के अभ्यास करवाएं। • पढ़े हुए पाठ के आधार पर पाठ का सार बताने को कहें जैसे 'मैं सड़क हूँ' पाठ को पढ़कर अपनी भाषा में व्यक्त करना। • बच्चों को पुस्तकालय से अपनी पसंद की पुस्तकों को पढ़ने के लिए प्रेरित किया जाए। इसके लिए बच्चों के साथ रीडिंग-आवर में हर दिन किसी एक पुस्तक पर चर्चा की जाए। पढ़ी गई पुस्तकों पर बात की जाए। इन कहानियों को अपने ढंग से/अपनी भाषा में सुनाने के लिए बच्चों को प्रोत्साहित किया जाए। इन कहानियों के पात्रों/उनकी परिस्थितियों/ रोचक घटनाओं पर बात की जाए। इनमें परिवर्तन की गुंजाइश और उसके प्रभावों को भी चर्चा में शामिल किया जाए। • बच्चों को अपनी पसंद और स्तर के अनुसार किताबों को चुनने दिया जाए और इसमें उनकी मदद की जाए। • पाठ आधारित कहानियों, कविताओं में आए ऐसे शब्दों की सूची बनाने को कहा जाए जो उन्होंने पहली बार सुने हैं और फिर उनके अर्थ पर चर्चा की जाए। इसके बाद उस सूची में उस शब्द विशेष के लिए उनके अपनी भाषा के शब्द को भी लिखा जाए।

• तरह-तरह के "पाठ' पढ़कर उसके आधार पर प्रश्न पूछ पाएं और अपनी राय व तर्क गढ़ पाएं। सहपाठियों से चर्चा कर पाएं। सहपाठियों के सवालों के जवाब दे पाएं।		• बच्चों को शब्द अंताक्षरी खेलने का अवसर दिया जाए, जिसमें एक टीम कोई शब्द बोले और दूसरी टीम उस शब्द के लिए उनकी भाषा में मौजूद शब्द को बोले। दो बच्चे इन सभी शब्दों को बोर्ड पर लिखते चलें। (जैसे- बिल्ली-मिन्नी, मोर-मोरियो, चूहा-मूस आदि) • बच्चों को वर्ग-पहेली/चित्र पहेली/शब्द-पहेली खेलने और इन्हें बनाने के अवसर दिए जाएँ। पढ़ना-लिखना सीख रहे बच्चों के साथ चित्र-पहेली से शुरुआत की जाए।
लिखकर अभिव्यक्त कर पाना (आधारभूत भाषायी कौशल)		
• अपने मन की बातों को अपने तरीके से लिखने का प्रयास करते हैं। • सभी वर्णों और मात्राओं के परिचय के साथ लेखन का अभ्यास। • चित्र/टेक्स्ट पढ़कर उसके बारे में दो तीन वाक्यों में लिख पाएँ।/प्रश्नों के उत्तर लिख पाएँ। • विभिन्न लेखन संबंधी गतिविधियों के अंतर्गत वर्तनी के प्रति सचेत होते हुए स्व-नियंत्रित (कन्वेंशनल राइटिंग कर पाएं। • किसी चित्र को देखकर चार पाँच वाक्यों में विवरण लिख सकें। • अपनी बातों को छोटे पैरा के रूप में लिख पाएँ।	16 पत्र पाठ 3 सोन के फर 4 मैं सड़क हूँ 21 सुनता के डोर 6 चित्रकार मोर 14 रेशम चन्दन और सोने की धरती -कर्नाटक	• दिए गए पाठों में जोड़े बनाओ, खाली स्थान भरो, सोचो और बताओ तथा तुम्हारी बात शीर्षक के अंतर्गत आ रहे अभ्यास बच्चों से करवाना, क्या करना है इसे समझाया जाए और बच्चे स्वयं अभ्यास हल करें। • बच्चों से पत्र पाठ पर कार्य करने के दौरान पत्र लिखने के लिए प्रेरित करना। इसके अंतर्गत बच्चों को गाँव की किसी समस्या के लिए सरपंच को पत्र, या अपने शिक्षक को पत्र, दोस्त को पत्र लिखने जैसे कार्य करवाए जा सकते हैं। • दिए गए पाठों के अर्थ, शीर्षक, कथानक आदि वाले अभ्यास, सोचो आगे क्या हुआ होगा, तुम होते तो क्या करते आदि अभ्यास बच्चों द्वारा करवाए जाएँ। क्या करना है इसे समझाया जाए और बच्चे स्वयं अभ्यास हल करें। • पाठ 14 से छत्तीसगढ़ के दर्शनीय स्थलों के बारे में बच्चों से पैराग्राफ लिखवायें। • पाठों के आधार पर बच्चों के परिवेश से मिलते जुलते अनुभाव लिखने के मौके दें जैसे 'तुम्हारे गाँव में सड़क की स्थिति', सड़क बनने में इस्तेमाल होने वाली सामग्री की सूची बनाना आदि।

लिखकर अभिव्यक्त कर पाना (कक्षानुरूप आवश्यक कौशल)		
• अपने शब्दों में छोटी कहानी कविता आदि लिख पाएं। • नाटक को कहानी, कहानी को नाटक के रूप में लिख पाएं। • विभिन्न उद्देश्यों के लिए लिखते समय विराम चिन्हों का उपयोग करते हैं।	पाठ 7 क्यों क्यों छोरी पाठ 15 एक और गुरु दक्षिणा पाठ16 पत्र	• बच्चों को कहानियाँ उपलब्ध कारवाई जाएँ और फिर उनके साथ मिलकर उसे आगे बढ़ाने का काम किया जाए। यह कार्य समूह बना कर भी किया जा सकता है। • बच्चों को अपनी पढ़ी हुई कहानियों में आगे क्या हुआ इसकी कल्पना के मौके दिए जाएँ। उनपर बात की जाए। • बच्चों को अलग-अलग रोचक परिस्थितियाँ दी जाएँ और उसपर सोचने/बात करने को कहा जाए (जैसे- जब शेर आइसक्रीम की दुकान पर गया, जब हाथी स्कूल में आया, जब मैं जहाज में बैठा, आदि)। • बच्चों को रोचक शीर्षक और घटनाक्रम देकर या फिर 5-10 शब्द देकर उनके अनुसार कहानी/कविता का निर्माण करने को कहा जाए। जैसे क्यूँ-क्यूँ छोरी छोरी पाठ में आए सवालों पर बच्चों से उनके बारे में अपने विचार लिखने को कहना। कहानी बनवाना। • यह कार्य समूहों में विभिन्न स्तर के बच्चों को एक साथ रखकर किया जाए। उसके बाद अलग-अलग भी किया जा सकता है। एक ही कहानी के निर्माण में विभिन्न-स्तर के बच्चे अलग-अलग योगदान दे सकते हैं। कहानी/कविता निश्चित हो जाने के बाद उसे लिखना और उससे जुड़े चित्रों का निर्माण अलग-अलग बच्चे कर सकते हैं। • बच्चों को उनके द्वारा पढ़ी गई कहानियों के पात्रों के आपसी संवाद लिखने को कहा जाए। उन्हें अलग-अलग पात्रों के बीच की मजेदार बातचीत की कल्पना करने और उसे लिखने को कहा जाए (चूहे-बिल्ली की बातचीत आदि। • बच्चों को बातचीत/संवाद लिखने के आरंभिक अनुभवों के बाद उन्हें उनके पसंद की कहानियों को इस शैली में लिखने के लिए कहा जा सकता है। इसके लिए इन कहानियों का आरंभिक मंचन एक कारगर तरीका हो सकता है। इसमें बच्चों को उन कहानियों के पात्रों के अभिनय और संवाद अदायगी के लिए कहा जाए।

		• बच्चों को अपने दोस्तों को पत्र लिखने को कहा जाये। या अलग अलग परिस्थिति देते हुए पत्र लेखन पर बात करते हुए पत्र लिखने को कहें। जैसे सरपंच को गाँव के गड्ढे ठीक करने के लिए पत्र लिखना। • बच्चों को कुछ बाल नाटकों/एकांकियों को पढ़ने के लिए दिया जाए और उसके लिखने के तरीकों पर उनका ध्यान आकृष्ट किया जाए। फिर उन्हें सुनाने को कहा जाए। फिर बच्चों से इसे वैसे ही लिखने को कहा जाए जैसे कि उन्होंने सुनाया।
अभिव्यक्ति (स्वतंत्र एवं सर्जनात्मक अभिव्यक्ति) (आधारभूत भाषायी कौशल एवं कक्षानुरूप आवश्यक कौशल वाले बच्चों हेतु)		
• सुनी या पढ़ी हुई घटना, वस्तु का विवरण, कहानी आदि को अपने शब्दों में लिख पाएं • दिए गए विषय पर कविता, कहानी, पत्र, अनुभव आदि लिख पाएं।	पाठ 6 चित्रकार मोर, पाठ 13 जंगल के राम कहानी पाठ 4 मैं सड़क हूँ पाठ 7 क्यूँ क्यूँ छोरी पाठ 5 रोबोट पाठ 16 पत्र	• बच्चों से उनके अपने जीवन, परिवार, घटनाओं, पसंद-नापसंद पर बात की जाए। इसके शुरुआत शिक्षक इन विषयों से जुड़ी अपनी बातों और अनुभवों से कर सकते हैं। इससे बच्चों की झिझक भी समाप्त होगी और उन्हें यह भी समझ आएगा कि उनके शिक्षण उनसे बहुत अलग नहीं हैं और उनसे इस तरह की बात की जा सकती है। • चित्रकार मोर जियसे कहानियों को पढ़ते हुए कोई अन्य विषय या पशु पक्षी पर कहानी लिखने को कहा जाये। जिन बच्चों को लिखने में चुनौतियाँ हैं वे छोटे वाक्यों में अपने विचार लिख सकते हैं। • बच्चों से ऐसी कहानियों पर बात की जाए जिसमें कोई पात्र उन जैसा हो, परिस्थितियाँ उनकी अपनी परिस्थितियों से मिलती-जुलती हों, कुछ ऐसा हो रहा हो जो वो भी करना चाहते हैं, आदि। फिर इन्हें लिखने की ओर बढ़ा जाए। जो अभी लिखना पढ़ना सीख रहे हैं उनकी मदद अन्य कक्षा-स्तर के बच्चे करें। • बच्चों को लोकगीत और लोककथाएं सुनने और सुनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाए। उन्हें घर के सदस्यों से, आस-पड़ोस से कहानियाँ सुन कर आने और कक्षा में सुनाने के अवसर दिए जाएँ।

		• क्यूँ क्यूँ छोरी पाठ के आधार पर बच्चों से उनके अपने सवाल लिखने को कहें कि वे क्या-क्या जानना चाहते हैं? • फिर इन कहानियों को लिखने को कहा जाए। यह कार्य भी पहले मिश्रित स्तर के बच्चों के समूह में और फिर अलग-अलग करने को कहा जा सकता है। कहानियों का संकलन एक प्रोजेक्ट कार्य के रूप में भी दिया जा सकता है। • इसी कार्य को आगे बढ़ाते हुए बच्चों को अलग-अलग विषय पर सोचने और कहानी गढ़ने के लिए कहा जाए। किन्हीं दो पात्रों एक साथ रखकर संभावित अलग-अलग परास्थितियों की कल्पना करने को कहा जाए। फिर इन्हें लिखा जाए और इनका मंचन किया जाए। आगे चलकर पात्रों और घटनाओं को बढ़ाया जाए और फिर इन्हें कहानी, कविता लिखने तक लाया जाए। • बच्चों को अपने अनुभवों को लिखने और दूसरों को सुनाने के लिए कहा जाए। अब इन्हीं बातों को एक पत्र के रूप में किसी दूसरे स्थान पर रह रहे व्यक्ति तक पहुंचाने के लिए पत्र के रूप में लिखने को कहा जाए।

कक्षा 6

सीखने के प्रतिफल	पाठ/पेज नंबर	सुझावात्मक कक्षा प्रक्रियाएँ
सुनकर समझना और सोचकर बोल पाना (आधारभूत भाषायी कौशल)		
• स्कूल की भाषा का इस्तेमाल करते हुए बातचीत कर पाए। जैसे- कविता, कहानी सुनाना, निजी अनुभव को साझा करना। • कविता कहानी सुनकर सरल प्रश्नों के उत्तर मौखिक रूप से दे पाएं • कविता / कहानी / अनुभव / विवरण हाव भाव से सुना पाएं • कक्षा स्तर के निर्देशों को समझकर उसके अनुसार कार्य कर पायें। • अपने अनुभवों को कुछ पंक्तियों में मौखिक रूप से व्यक्त कर पाए • स्वतंत्र रूप से ऐसे सवाल पूछ पाए जिनका संबंध पाठ्यपुस्तकों की सामग्री से न हो • दैनिक जीवन में घटित घटनाओं का 5-7 वाक्यों में विवरण दे पाएं	• पाठ- 4 दूँगी फूल कनेर के पाठ -5 बरखा आथे, • पाठ -6 सफ़ेद गुड़ , पुस्तकालय की किताबें	• शिक्षक बच्चों के साथ दूँगी फूल कनेर के कविता गाएँ, कविता पर ठहर कर बातचीत करें। बच्चों से उनके गाँव के बारे में बात करें जैसे तुम्हारे गाँव की सड़के घर कैसे हैं? कौन कौन से पेड़ हैं। पेड़ कटे जाएंगे तो क्या होगा। आदि प्रश्नों के माध्यम से कविता के भाव को समझने में मदद करें। • बरखा आथे कविता के साथ भी इसी प्रकार की प्रक्रिया अपनाएं। • लोककथा/गीत को सुनना और सुनाना साथ ही चर्चा करना • सफ़ेद गुड़ कहानी सुनाते हुए कहानी की घटनाओं पर बच्चों का ध्यान आकर्षित करना उनके अनुभवों से जोड़ते हुए प्रश्न करना, आगे क्या हुआ होगा जैसे सवाल करना। • जीवन और परिवेश से जुड़ी घटनाओं और अनुभवों को चर्चा में शामिल करें। जैसे- बाजार जाने का वर्णन, गाँव में घटी घटनायें, मनपसन्द कार्टून, विविध पुस्तकों के चित्र, परिवेश के फूल, पेड़-पौधे, जीव-जन्तु, यात्रा का विवरण आदि • पुस्तकालय से उन्हें अपनी पसंद की पुस्तकें चयन करके और घर ले जाने का नियमित दिनचर्या बनाएं • उनके द्वारा पढ़ी हुई सामग्री पर सवाल बनाने के लिए प्रेरित करें। यह सवाल क्या, कौन से शुरू होते हुए क्यों, कैसे, आप होते तो क्या करते, कहानी की घटना बदलना आदि की ओर बढ़ते हुए हो सकता है। सवाल-जवाब में बच्चों के अनुभवों को शामिल करें। • चर्चाओं को अलग-अलग तरीके से करने का प्रयास करें। जैसे- छोटे-छोटे ग्रुप बनाकर, जोड़े में, गेम के रूप में, रोल प्ले द्वारा आदि । • निर्देशों वाले खेल करवाएं – धीरे-धीरे उसे जटिल बनाते जाएँ स्तर के अनुसार

सुनकर समझना और सोचकर बोल पाना (कक्षानुरूप आवश्यक कौशल)		
• रेडियो, टीवी, अखबार, इंटरनेट में देखी/सुनी गई खबरों को अपने शब्दों में कहते हैं। • विभिन्न अवसरों/संदर्भ में कही जा रही दूसरों की बातों को अपने ढंग से बताते हैं, जैसे- आंखों से न देख पाने वाले साथी का यात्रा-अनुभव।	• पाठ – 11 शहीद की माँ , अखबार और ऑडियो-वीडियो को पढ़ने,सुनने का अवसर दे • पाठ- 3 हेलन केलर	• अखबार और ऑडियो-वीडियो का उपयोग करते हुए बच्चों को ध्यान से कहने-सुनने को कहें • ध्यान से सुनते हुए प्रमुख बिन्दुओं को कॉपी या बोर्ड में नोट करने को कहें। • हेलन केलर पाठ पर बच्चों से चर्चा करते हुए बच्चों से उनके विचारों को सुनें। कहानी में आए मुख्य घटनाओं पर चर्चा करें। पाह पर चर्चा के दौरान पाठ केन्द्रित प्रश्न किया जा सकते हैं। • गाँव /समुदाय /मौहले की खबर, बताने और लिखने का अवसर देना ,बाल अखबार बनाना • नोट करने के बाद उसे बिना देखे या देखकर बच्चों की सहजता के अनुसार बोलने को कहें • बच्चों को बाल साहित्य - संस्मरण सुनाते हुए अपने जीवन से जुड़े संस्मरण और अनुभव को सुनायें • सभी बच्चों को जीवन से जुड़े विभिन्न अनुभवों (जैसे मेले, यात्रा, त्योहार) को कहने-सुनने के लिए प्रेरित करें
पढ़कर समझना और समझ कर व्यक्त करना (आधारभूत भाषायी कौशल)		
• सभी अक्षरों और मात्राओं से शब्द बना पाए और सरलता से पढ़ पाएं • परिचित कविता / कहानी कार्ड / श्यामपट्ट आदि में पहचान पाए एवं इन्हें प्रवाह से पढ़ पाएं	पाठ- 1 अभियान गीत ,पाठ - 2 एक टोकरी भर मिट्टी,पाठ - 4 दूँगी फूल कनेर के पाठ -8 मेरा नया बचपन , ,पाठ -10 हम पंछी उन्मुक्त गगन के पाठ -13 आलसी राम, पाठ -7 समय नियोजन, पाठ -14 नाचा के पुरखा -दाऊ मंदरा जी पुस्तकालय की किताबों का प्रतिदिन पढ़ने का अभ्यास	• विभिन्न अक्षरों और मात्राओं के शब्द बनावाये और पढ़वाएं। • कविताओं एवं कहानियों में आने वाले मुख्य शब्दों को बोर्ड पर लिखते हुए पढ़वाने का अभ्यास करवाएं। • एक टोकरी भर मिट्टी एवं अन्य कहानियों पर चर्चा करने के बाद, बच्चों से पूछते हुए कहानी की मुख्य घटनाओं को क्रम से बोर्ड पर लिखें । फिर बच्चों को पढ़ने के अभ्यास करवाएं। तत्पश्चात देख कर कॉपी में लिखने को कहें। • छोटी कविता, कहानी को बोर्ड और चार्ट में बड़े-बड़े फॉण्ट में लिखकर बच्चों के साथ ऊँगली रखते हुए पढ़ें। तत्पश्चात दिये गए पाठ बच्चों से जोड़े में पढ़वाएँ।

• पुस्तकालय की सरल किताबों में से छोटी कहानी / कविता की किताब पढ़ पाएं (उदाहरण- बरखा शृंखला की चौथे स्तर तक की किताबें व एकलव्य या इकतारा की किताबें, साइकिल पत्रिका पढ़ व समझ पाएं) • अपने स्तर के पाठ कविता /कहानी को पढ़ कर उसके मूल भाव को समझ पाए और सरल शब्दों में मुख्य बिंदुओं को बता पाएं • तरह तरह के पाठ पढ़कर उसके आधार पर प्रश्न पूछ पाए और अपनी राय व उत्तर गढ़ पाए। सहपाठियों से चर्चा कर पाएं • कहानियों, कविताओं / रचनाओं की भाषा की बारीकियों (जैसे- शब्दों की पुनरावृत्ति, संज्ञा,सर्वनाम, विभिन्न विराम-चिन्हों का प्रयोग आदि) की पहचान और प्रयोग कर पाएं		• सुनते-सुनाते और उस पर चर्चा करते हुए उसमें आये विविध शब्दों को बोर्ड पर बड़े फॉण्ट में लिखें। लिखे शब्दों पर ऊँगली रखते हुए बच्चों को पढ़ने का अवसर दें • कविता-कहानी में आये शब्दों को फ्लैक्स कार्ड के द्वारा जोड़कर, अखबार में ढूढ़कर गोला लगाकर पढ़ने का अवसर दें। • दी गयी कविताओं को एक पंक्ति रिक्त छोड़ते हुए बोर्ड पर लिखे। फिर बच्चों से अंदाज़ा लगाकर पढ़ने/या किताब से पढ़कर कविता की अगली पंक्ति बताने एवं कविता पूरा करने के अभ्यास कराएं। ध्यान रखें कि बच्चें पंक्तियों को पढ़ते हुए ही पूरा करें। शिक्षक आवश्यकतानुसार मदद करें। • बरखा, इकतारा और एकलव्य प्रकाशन की किताबों को पढ़ने के लिए दें। बोलकर पढ़ने और उस पर चर्चा करने का काम जोड़ें में, एकल और समूह में करें • नाम लिखने को संज्ञा कहते हैं, काम करने को क्रिया कहते हैं, जहाँ वाक्य समाप्त होता है वहाँ पूर्ण विराम लगाते हैं। बोलकर कहानी-कविता या बातचीत के जरिये बच्चों को सहजता के साथ इनका परिचय करवाएं। इनसे जुड़ी गतिविधियों में बच्चों के नामों की सूची, परिवेश की वस्तुएं, स्कूल की चीजें, पढ़ी किताबों और पढ़े पाठों में ढूँढना-सूची बनाना आदि

पढ़कर समझना और समझ कर व्यक्त करना (Grade level)		
• सरसरी तौर पर किसी पाठ्यवस्तु को पढ़कर उसकी विषय वस्तु का अनुमान लगाते हैं • विभिन्न विधाओं में लिखी गई साहित्यिक सामग्री को उपयुक्त उतार-चढ़ाव और सही गति के साथ पढ़ते हैं • भाषा की बारीकियों/ व्यवस्था/ ढंग पर ध्यान देते हुए उसकी सराहना करते हैं, जैसे- कविता में लय-तुक, वर्ण-आवृत्ति (छंद) तथा कहानी, निबंध में मुहावरे, लोकोक्ति आदि • नए शब्दों के प्रति जिज्ञासा व्यक्त करते हैं और उनके अर्थ समझने के लिए शब्दकोश का प्रयोग करते हैं	पाठ- 1 अभियान गीत ,पाठ - 2 एक टोकरी भर मिट्टी,पाठ - 4 दूँगी फूल कनेर के पाठ -8 मेरा नया बचपन , ,पाठ -10 हम पंछी उन्मुक्त गगन के पाठ -13 आलसी राम, पाठ -7 समय नियोजन, पाठ -14 नाचा के पुरखा -दाऊ मंदरा जी	• कहानी /कविता को पढ़ने के लिए कहें। सरसरी तौर पर पढ़ने के लिए कुछ समय भी निर्धारित कर सकते हैं। पुस्तकालय की पुस्तके पढ़ने का अवसर देना । • चुने गए पाठ पर चर्चा के बाद बच्चों से बारी-बारी से पढ़वाएँ। • कहानी को पढ़ने के बाद उसके शीर्षक, कहानी के घटनाक्रम, कहानी के पात्रों आदि सामान्य बातों पर विचार रखने के लिए प्रोत्साहित करें जैसे शहीद की माँ कहानी के बारे में बताना, एक टोकरी भर मिट्टी कहानी में क्या क्या होता है बताने को कहना एवं संबन्धित प्रश्न करना। • बच्चों से दी गयी कहानी में से ऐसे शब्द खोजकर लिखने को कहें जिसका अर्थ वे नहीं जानते हैं। फिर उस पर चर्चा करें। • दी गयी कहानी में आये मुहावरों और शब्दों के मायनों को अनुमान द्वारा समझने का अवसर दें। अवसर देने के बाद किताब के अंत में दिए शब्दकोश से ढूढ़ने को कहें। इन मुहावरों और शब्दों का उपयोग बच्चों के साथ चर्चा में करें । जैसे जलेबी देखते ही मेरे मुँह में पानी आ गया'। सफ़ेद गुड कहानी में "मुँह में पानी आ जाना" का क्या अर्थ है? समझना। • पुस्तकालय से विभिन्न विधाओं पर आधारित पुस्तकों को पढ़ने के लिए कहें। विभिन्न विधाओं (नाटक, कहानी, कविता) को पढ़ने की शैली या हाव-भाव पर चर्चा करें और बच्चों को ऐसा करने का अवसर दें। चर्चा में विराम चिह्न, वाक्य संरचना की पहचान को साथ-साथ शामिल करें। • कविता को पढ़ने को कहें। बच्चों से पढ़ते हुए समूह में और व्यक्तिगत रूप से लय-तुक बनाने को कहें • बच्चों को पढ़ने के लिए कहना और उस पर चर्चा करना। चर्चा में अक्षरों/शब्दों को लिखने की जरूरत, मौखिक भाषा अचानक गायब हो जाए तो क्या होगा जैसे बिंदु शामिल कर सकते हैं।

लिखकर अभिव्यक्त कर पाना (आधारभूत भाषायी कौशल)		
• अपने मन की बातों को अपने तरीके से लिखने का प्रयास करते हैं • सभी वर्णों और मात्राओं के परिचय के साथ लेखन का अभ्यास। श्रुतलेख लिख पाएं • चित्र/टेक्स्ट पढ़कर उसके बारे में कुछ वाक्यों में लिख पाएँ।/प्रश्नों के उत्तर लिख पाएं • विभिन्न लेखन संबंधी गतिविधियों के अंतर्गत वर्तनी के प्रति सचेत होते हुए स्व-नियंत्रित (कन्वेंशनल राइटिंग कर पाएं • अपनी बातों को छोटे पैरा के रूप में लिख पाएँ। अपने परिवेश में घटी किसी घटना के बारे में लिख कर बता पाएं	• पाठ -2 एक टोकरी भर मिट्टी • पाठ -4 दूँगी फूल कनेर के • पाठ-13 आलसीराम • पाठ 16 चचा छक्कन ने केले खरीदे पाठ -7 समय नियोजन , पाठ -8 मेरा नया बचपन पाठ – 15 सरलता और सहृदयता • बाल साहित्य • पढ़े गए पाठों तथा गैर पढ़े गए बल साहित्य का लेखन अभ्यास	• बच्चों को कहानी-कविता पढ़ने के साथ मन में उभरे विचारों को और उससे जुड़ते अनुभव को स्वतंत्र लेखन करने के लिए प्रेरित करें। कुछ बिन्दु ऐसे दिये जा सकते हैं – जैसे तुम्हें खाने में क्या पसंद है? लिखो। • मेरा नया बचपन पाठ के अंतर्गत बच्चों से अपने बचपन के बारे में लिखने को कहें, या किसी छोटे बच्चे को देखा हो तो वो क्या-क्या करते हैं लिखो। मिट्टी से क्या-क्या बना सकते हो सूची बनाओ। • कहानी-कविता पढ़ने और उस पर चर्चा करते हुए उसमें आये विविध शब्दों को बोर्ड पर बड़े फॉण्ट में लिखने के लिए कहें। शब्दों और उसमें शामिल सरल अक्षरों-मात्राओं को लिखने के लिए कहें। • जब स्कूल लंबे समय से बंद थे तब के अनुभवों और घटनाओं से जुड़ी बातों को कुछ वाक्यों व धीरे-धीरे अनुच्छेद के रूप में लिखने के लिए प्रेरित करें। • बाल साहित्य को पढ़कर, उसमें शामिल चित्रों का अवलोकन करते हुए उससे जुड़ी बातों को लिखने के लिए कहें। जैसे- चित्र में क्या-क्या दिखाई दे रहा है, चित्र में कौन-कौन है, कौन सा पात्र अच्छा लगा और क्यों, कोई पात्र अच्छा नहीं लगा और क्यों, आप उस पात्र की जगह होते तो क्या करते आदि। • बच्चों के परिवेश से जुड़े विषयों (बाजार, त्यौहार, कार्टून, दोस्त, नानी का घर आदि) पर समूह कार्य और व्यक्तिगत कार्य करने के अवसर दें । • बच्चों को नियमित डायरी लेखन अभ्यास के लिए प्रोत्साहित करें।

लिखकर अभिव्यक्त कर पाना (कक्षानुरूप आवश्यक कौशल)		
• स्वेच्छा से या शिक्षक द्वारा तय गतिविधि के अंतर्गत लेखन की प्रक्रिया की बेहतर समझ के साथ अपने लेखन को जांचते हैं और लेखन के उद्देश्य और पाठक के अनुसार लेखन में बदलाव करते हैं। जैसे- किसी घटना की जानकारी के बारे में बताने के लिए स्कूल की भित्ति पत्रिका के लिए लिखना और किसी दोस्त को पत्र लिखना • विभिन्न विषयों, उद्देश्यों के लिए उपयुक्त विराम-चिन्हों का उपयोग करते हुए लिखते हैं • विभिन्न अवसरों/संदर्भों में कही जा रही दूसरों की बातों को अपने ढंग से लिखते हैं • भाषा की व्याकरणिक इकाइयों, जैसे- कारक-चिन्ह, क्रिया, काल, विलोम आदि की पहचान करते हैं और उनके प्रति सचेत रहते हुए लिखते हैं विभिन्न संदर्भ में विभिन्न उद्देश्यों के लिए लिखते समय शब्दों, वाक्य संरचनाओं, मुहावरे आदि का	• पाठ -2 एक टोकरी भर मिट्टी • पाठ -4 दूँगी फूल कनेर के • पाठ-13 आलसीराम पाठ -7 समय नियोजन , पाठ -8 मेरा नया बचपन पाठ – 15 सरलता और सहृदयता • बाल साहित्य • पढ़े गए पाठों तथा गैर पढ़े गए बाल साहित्य का लेखन अभ्यास	• कविता कहानी पर कार्य करते हुए बच्चों को मौलिक लेखन का कार्य करने के अवसर देना -किसी भी विषय वस्तु पर लिखने के स्वतंत्र अवसर उपलब्ध करना । • दी गयी कहानियों को संक्षिप्त में लिखने को कहें। साथ ही कहानी को आगे बढ़ाने/मन से लिखने के अवसर दें। जैसे एक टोकरी भर मिट्टी कहानी में अगर जमींदार की जगह तुम होते तो क्या करते। • समय नियोजन निबन्ध को बच्चों के साथ पढ़कर उस पर चर्चा करें। चर्चा उन विषयों पर करें, जो बच्चों के सहज लेखन के विषय हो सकते हों। जैसे तुम दिनभर क्या क्या काम करते हो कब-कब करते हो? • पाठ में आये क्रिया, कारक को ढूढ़कर बोर्ड या कॉपी में लिखना। पाठ और बच्चों के अनुभव पर आधारित लेखन में क्रिया और कारक के उदाहरणों को लेखन में उपयोग करने के लिए कहें। • बच्चे अपनी पसंद के विषयों, घटनाओं और अनुभवों पर लिख सकते हैं। लिखने के बाद एक-दूसरे से अदला-बदली करके सुझाव दे सकते हैं। बच्चों को सकारात्मक फीडबैक दें और पुन: सुधारात्मक लेखन (उपयुक्त विराम चिन्ह, उद्देश्य, वाक्य संरचना, मुहावरे आदि को समझ के साथ शामिल करते हुए) करने के लिए प्रेरित करें। • बच्चों को कहानी से ऐसे अनुच्छेद दें, जिसमें विराम चिह्न न लगे हों। उन्हें पढ़कर सही जगह विराम चिह्न लगाने का अभ्यास करने को दें। • बच्चों के लिखे हुए को कोलॉज बनाकर दीवार पत्रिका का स्वरुप देना और कक्षा में लगवाएं।

अभिव्यक्ति (स्वतंत्र एवं सृजनात्मक अभिव्यक्ति)(आधारभूत भाषायी कौशल)		
• चित्र देखकर, कविता / कहानी सुनकर उसके अनुसार चित्र बना पाएं, चित्रों को नाम दे पाएं • स्वतंत्र चित्र बना पाए और उनके बारे में शब्द/वाक्य लिख पाएं • मनपसंद विषय पर छोटी कविता / कहानी बना पाए और सुना पाएं • अपनी कल्पना से कविता-कहानी को आगे बढ़ा पाएं	• पाठ्यपुस्तक और बाल साहित्य पाठ- 6 सफ़ेद गुड मौलिक लेखन का कार्य	• पाठ्यपुस्तकों और विविध तरह के बाल साहित्य और अनुभव में शामिल कहानी, कविता, संस्मरण, यात्रा, घटनाओं को सुनने-सुनाने, चर्चा करने के बाद मन में उभरे चित्र को कागज पर बनाने के लिए प्रेरित करें। • बच्चों को स्वतंत्र रूप से चित्र बनाने के लिए कहें और उस पर कुछ पंक्तिया लिखने के लिए कहें। • सफ़ेद गुड कहानी के आधार पर दुकान, बच्चे आदि का चित्र बनाने को कहें। उसके बारे में लिखने के लिए प्रोत्साहित करें। • पाठ से जुड़े अभ्यासों कि मदद से एवं अन्य विषयों पर मौलिक लेखन का कार्य करने के अवसर देना। • लेखन से जुड़ी गतिविधियों में कहानी, कविता को आगे बढ़ाने के लिए कुछ पंक्तियाँ जोड़ने के लिए प्रेरित करें। कविता में तुकांत शब्दों की अधिकता हो सकती है। अधूरी कहानी को ऐसे मोड़ पर छोड़ा जा सकता है, जिसमें बच्चों को सोचने और लिखने के भरपूर व विविध अवसर हों।
अभिव्यक्ति (स्वतंत्र एवं सर्जनात्मक अभिव्यक्ति) (कक्षानुरूप आवश्यक कौशल)		
• विविध प्रकार की सामग्री में आए संवेदनशील बिंदुओं पर (मौखिक/ लिखित) अभिव्यक्ति करते हैं, जैसे- 'ईदगाह' कहानी पढ़ने के बाद बच्चा कहता है- मैं भी अपनी दादी की खाना बनाने में मदद करता हूं • देखी, सुनी रचनाओं/घटनाओं /मुद्दों पर प्रश्न करते हैं / बातचीत को अपने ढंग से आगे बढ़ाते हैं, जैसे- किसी कहानी को आगे बढ़ाना	पाठ- 6 सफ़ेद गुड़ पाठ -11 शहीद की माँ पाठ – 14 नाचा के पुरखा- दाऊ मंदरा जी पाठ- 13 आलसीराम	• बच्चों को पाठ पढ़ने के लिए देना। पढ़ने के बाद बच्चों ने जो महसूस किया, उन्हें अपने शब्दों में लिखने के लिए कहें। पाठ में उभरे सम्वेदनशील मुद्दों पर चर्चा करें • बच्चों के छोटे समूह अनुभवों, घटनाओं, पुस्तकालय की पुस्तकों से जुड़े मुद्दों (सामाजिक, सांस्कृतिक, जानकीपरक आदि) पर क्या, क्यों, कैसे जैसे प्रश्नों पर बातचीत करें

कक्षा 7

सीखने के प्रतिफल	पाठ्यपुस्तक के पाठ	सुझावात्मक कक्षा प्रक्रियाएँ
सुनकर समझना और सोचकर बोल पाना (आधारभूत भाषायी कौशल)		
• स्कूल की भाषा का इस्तेमाल करते हुए बातचीत कर पाए। जैसे- कविता, कहानी सुनाना, निजी अनुभव को साझा करना। • कविता कहानी सुनकर सरल प्रश्नों के उत्तर मौखिक रूप से दे पाएं • कविता / कहानी / अनुभव / विवरण हाव भाव से सुना पाएं • अपने अनुभवों को कुछ पंक्तियों में मौखिक रूप से व्यक्त कर पाएं। • स्वतंत्र रूप से ऐसे सवाल पूछे जाएँ जिनका संबंध पाठ्यपुस्तकों की सामग्री से न हो। • दैनिक जीवन में घटित घटनाओं का 5-7 वाक्यों में विवरण दे पाएं	कविताएँ :- • पाठ 1 – कुछ और भी दूँ • पाठ 5 सरद ऋतु आ गे • पाठ 14 भारत बन जाही नंदनवन • पाठ 16 काव्य माधुरी कहानियाँ :- • पाठ 4 मौसी • पाठ 8 भिखारिन • पाठ 18 मितानी • पाठ 19 शहीद बकरी	• कुछ और भी दूँ और सरद ऋतु आ गे कविताओं को हाव-भाव तथा उतार-चढ़ाव के साथ गाया जाए, बच्चों को कविता स्वयं गाकर सुनाने को कहा जाए। कविता किस बारे में है, कविता में किसके बारे में क्या कहा जा रहा है, देश प्रेम के लिए हम क्या-क्या अर्पित कर सकते है। कौन-सी ऋतु आ रही है आदि प्रश्न बच्चों से किए जाएँ। (पाठ के पीछे दिए हुए मौखिक प्रश्न भी पूछे जा सकते हैं) • बच्चे इन कविताओं को अपने शब्दों में सुनाएँगे • भारत बन जाही नंदनवन व काव्य माधुरी पाठ पढ़वाया जाए, बच्चों से कुछ पंक्तियों को अपने शब्दों में मौखिक रूप से व्यक्त करने को कहा जाए व उस पर उनके निजी अनुभव साझा करने को कहें। • काव्य माधुरी के पदों पर शिक्षक द्वारा सस्वर वचन किया जाए व बच्चों को अपने शब्दों में काव्य माधुरी के पदों अभिव्यक्त करने का अवसर उपलब्ध कराना। काव्य माधुरी के पदों को बच्चों को अपने दैनिक जीवन के संदर्भों से जोड़ने हेतु अवसर दिए जाए। • मौसी और भिखारिन को पढ़कर सुनाया जाए, उसमें शामिल पात्रों और कहानी में कही जा रही बात पर बच्चों से बातचीत की जाए। • मितानी (मित्रता) कैसे व्यक्तियों से किया जाए इन पर बच्चों के निजी अनुभव पर बात की जाए। • जो बच्चे थोड़ा पढ़ना जानते हैं वे इन कहानियों को स्वयं भी पढ़ें। • बच्चे समूह में बैठकर इन पर बातचीत करें, इनसे जुड़े अपने दैनिक जीवन अनुभव साझा करें, और एक-दूसरे के अनुभवों से जुड़े सवाल भी पूछें।

सुनकर समझना और सोचकर बोल पाना (कक्षानुरूप आवश्यक कौशल)		
• किसी सामग्री को पढ़ते हुए लेखक द्वारा रचना के परिप्रेक्ष्य में कहे गए विचार को समझकर और अपने अनुभवों के साथ उसकी संगति, सहमति या असहमति के संदर्भ में अपने विचार अभिव्यक्त करते हैं। • पढ़ी गई सामग्री पर चिंतन करते हुए बेहतर समझ के लिए प्रश्न पूछते हैं/परिचर्चा करते हैं • विभिन्न स्थानीय, सामाजिक, संवेदनशील एवं प्राकृतिक मुद्दों/घटनाओं के प्रति अपनी तार्किक प्रतिक्रिया देते हैं। • विविध कलाओं, जैसे- हस्तकला, वास्तुकला, खेती-बाड़ी, नृत्यकला और इनमें प्रयोग होने वाली भाषा के बारे में जिज्ञासा व्यक्त करते हैं, उन्हें समझने का प्रयास करते हैं	कहानी एवं अन्य विधा :- • पाठ 7 रात का मेहमान • पाठ 8 भिखारिन • पाठ 10 सितारों के आगे • पाठ 19 शहीद बकरी • पाठ 21 सुवागीत	• रात का मेहमान, सितारों के आगे व भिखारिन पाठ के बारे में बात की जाए, उन्हें समूह में पढ़ा जाए और पाठ के कथानक पर बात की जाए। • आजाद भारत के सपने के लिए किन -किन युवाओं ने अपना योगदान दिया। कुछ स्थानीय युवा क्रांतिकारी व्यक्तित्व के विषय में परिचर्चा किया जाए। • लोग भीख क्यों मांगते है, लड़कियां कौन-सा काम नहीं कर सकती है। इस पर एक परिचर्चा या वाद-विवाद आयोजित कराया जाए। • शहीद बकरी कहानी के घटनाक्रम पर परिचर्चा किया जाए। बच्चों के व्यक्तिगत अनुभवों में घटित घटनाओं पर परिचर्चा किया जाए। "संगठन में शक्ति है" प्रस्तुत पाठ के आधार पर संभाषण प्रतियोगिता का आयोजन कराया जाए। • विविध कलाओं से संबंधित सामग्री, ऑडियो, वीडियो, आलेख आदि दिखाए/ सुनाए जाएँ, अभिनय कराना और उनके बारे में बातचीत की जाए।

पढ़कर समझना और समझ कर व्यक्त करना (आधारभूत भाषायी कौशल)		
• सभी अक्षरों और मात्राओं से शब्द बनाना, सरलता से पढ़ पाना हो। • परिचित कविता / कहानी कार्ड / श्यामपट्ट आदि में पहचान पाएं एवं इन्हें प्रवाह से पढ़ पाएं। • सरल किताबों में से छोटी कहानी / कविता पढ़ पाएं (उदाहरण- बरखा शृंखला की चौथे स्तर तक की किताबें व एकलव्य या इकतारा की किताबें, साइकिल पत्रिका पढ़ व समझ पाएं।) • अपने स्तर के पाठ कविता /कहानी को पढ़ कर उसके मूल भाव को समझकर सरल बिंदुओं को बता पाएं। • तरह-तरह के पाठों से प्रश्न पूछ पाएं, अपनी राय दे पाएं। सहपाठियों से चर्चा कर पाए। • कहानियों, कविताओं में भाषा की बारीकियों (जैसे- शब्दों की पुनरावृत्ति, संज्ञा,सर्वनाम, विभिन्न विराम-चिन्हों का प्रयोग आदि) की पहचान और प्रयोग कर पाए। • समाचार की सुर्खियां पढ़ कर समझ सकें।	कविताएँ :- • पाठ 1 – कुछ और भी दूँ • पाठ 5 सरद ऋतु आ गे • पाठ 14 भारत बन जाही नंदनवन • पाठ 16 काव्य माधुरी कहानियाँ :- • पाठ 4 मौसी • पाठ 8 भिखारिन • पाठ 18 मितानी • पाठ 19 शहीद बकरी	• दी गई कविताओं को पोस्टर पर लिखा जाए। उनमें आए शब्दों के शब्द कार्ड और वाक्य पट्टियाँ भी बनाई जाए जो बच्चे पढ़ना सीखने के पहले स्तर पर हैं, उनके साथ इन पर काम किया जाएगा। • बच्चों से विभिन्न ऋतुओं पर आधारित परिवेशीय परिवर्तन पर परिचर्चा की जाए। • सरल शब्दों व वाक्यों पर आधारित कविताओं / कहानियों की पुस्तकों को समूह में बच्चों को प्रदान कर पठन कार्य किया जाए। • कहानियों के शीर्षक पर बात हो, बच्चों को मिश्रित समूह में बिठाया जाए और कहानियों को समूह में पढ़ा जाए । जिन बच्चों को पढ़ना आता है वे कहानी को पढ़कर सुना सकते हैं और बाकी बच्चे अनुमान से पढ़ने की प्रक्रिया में शामिल हो सकते हैं। • जो बच्चे पढ़ना जानते हैं, वे मौन वाचन के द्वारा कहानियों को स्वयं पढ़कर कथानक के बारे में बात करेंगे। बाकी बच्चों के साथ शिक्षक स्वयं समूह में बैठकर वाक्य जोड़कर पढ़ना, अर्थ निकालना, नए शब्दों के अर्थ आगे-पीछे के सन्दर्भ को समझते हुए बूझना अदि गतिविधियाँ करवाते हुए उन्हें पढ़ने की ओर ले जाएँगे। • कहानियों, कविताओं के विभिन्न पात्रों/ घटनाओं के आधार पर शब्दों की पुनरावृत्ति, संज्ञा,सर्वनाम, विभिन्न विराम-चिन्हों का प्रयोग पर कार्य किया जाए । • बच्चों को अखबार की कुछ सुर्खियां दी जाये। उन सुर्खियों को पढ़ते हुए अपने विचार लिखने को कहें । जैसे सुर्खी के अनुसार किस तरह की बात समाचार में आएगी? यह सोचकर लिखना।

पढ़कर समझना और समझ कर व्यक्त करना (कक्षानुरूप आवश्यक कौशल)		
• सरसरी तौर पर किसी पाठ्यवस्तु को पढ़कर उसके बारे में बात कर पाते हैं। • किसी पाठ्यवस्तु की बारीकी से जांच करते हुए उसमें किसी विशेष बिंदु को खोजते हैं, अनुमान लगाते हैं, निष्कर्ष निकालते हैं । • हिंदी भाषा में विभिन्न प्रकार की सामग्री (समाचार, पत्र-पत्रिका, कहानी, जानकारीपरक सामग्री, इंटरनेट पर प्रकाशित होने वाली सामग्री आदि) को समझकर पढ़ते हैं और उसमें अपनी पसंद-नापसंद, राय, टिप्पणी देते हैं। • विभिन्न पठन सामग्रियों में प्रयुक्त शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों को समझते हुए उनके सराहना करते हैं ।	कविताएँ :- • पाठ 1 – कुछ और भी दूँ • पाठ 5 सरद ऋतु आ गे • पाठ 14 भारत बन जाही नंदनवन • पाठ 16 काव्य माधुरी कहानियाँ :- • पाठ 4 मौसी • पाठ 8 भिखारिन • पाठ 18 मितानी • पाठ 19 शहीद बकरी एकांकी :- पाठ 15 शतरंज में मात	• कुछ और भी दूँ , सरद ऋतु आ गे आदि कविताओं में बार-बार आने वाले शब्दों, समान ध्वनि वाले शब्दों की ओर ध्यान दिलाया जाए। • कहानियों में संज्ञा, सर्वनाम, विराम चिह्न, मुहावरों, लोकोक्तियों की ओर ध्यान दिलाया जाए । पाठों में 'भाषा से' गतिविधि के अंतर्गत दिए हुए अभ्यासों पर बात की जाए और बच्चों को उन्हें स्वयं हल करने को कहा जाए। बच्चों को पाठ से वाक्यों को चुनकर संज्ञा सर्वनाम मुहावरें खोजने को कहें। जैसे मौसी पाठ के अंतर्गत 'आंखे भर आई' आदि मुहावरे पर बात करना, किताब में संबन्धित वाक्य खोजने को कहना। इसी तरह के अभ्यास अन्य पाठों में भी करना। • कक्षा में अलग-अलग तरह की पठन सामग्री (अखबार, रेडियो, पत्र-पत्रिकाएँ आदि) लाई जाए, उन्हें पढ़ने-सुनने और उन पर बात करने के मौके दिए जाए । • इस पाठ में ये वाली घटना किस हिस्से में कही जा रही है, ये वाला मुहावरा कहाँ आया है जैसे प्रश्न बच्चों से किए जाएंगे । • पाठ 15 के आधार पर बच्चों को एकांकी के पात्रों में बांटकर कार्य किया पठन कार्य कराया जाए, उसके लिए सही प्रश्न बनाने, उन प्रश्नों को क्रम से लगाने और ठीक से पूछने का अभ्यास कराया जाए ।

लिखकर अभिव्यक्त कर पाना (आधारभूत भाषायी कौशल)		
सभी वर्णों और मात्राओं के परिचय के साथ लेखन का अभ्यास। • चित्र/टेक्स्ट पढ़कर उसके बारे में दो तीन वाक्यों में लिख पाएँ।/प्रश्नों के उत्तर लिख पाएँ। • विभिन्न लेखन संबंधी गतिविधियों के अंतर्गत वर्तनी के प्रति सचेत होते हुए स्व-नियंत्रित (कन्वेंशनल राइटिंग कर पाएं। • किसी चित्र को देखकर चार पाँच वाक्यों में विवरण लिख सकें। • अपनी बातों को छोटे पैरा के रूप में लिख पाएँ।	कविताएँ :- • पाठ 1 – कुछ और भी दूँ • पाठ 5 सरद ऋतु आगे कहानियाँ :- • पाठ 4 मौसी • पाठ 8 भिखारिन • पाठ 18 मितानी • अन्य विधा :- • पाठ 13 सुभाषचन्द्र बोस का पत्र • पाठ 23 राजीव गांधी	• दिए गए पाठों के नवीन शब्दों की एक सूची बनाई जाए और उनका श्रुतलेख दिया जाए। सभी बच्चे श्रुतलेख लिखें और एक-दूसरे के शब्द जाँचे । (जो बच्चे ठीक से पढ़ना-लिखना जानते हैं, वे इसमें अधिक मदद कर सकेंगे । साथ ही शिक्षक भी बच्चों को बीच बीच में सहयोग प्रदान करें। • पाठों से संबंधित या अन्य चित्र बच्चों को दिखाए जाए, उन चित्रों पर बात की जाए और सभी बच्चे उन चित्रों के बारे में कुछ वाक्य या अनुच्छेद लिखें । इसे पहले समूह गतिविधि और बाद में एकल गतिविधि के रूप में भी कराया जा सकता है । पढ़ी हुई कहानी-कविता के मूल भाव या सारांश को अपने शब्दों में लिखवाया जाए ।
लिखकर अभिव्यक्त कर पाना (कक्षानुरूप आवश्यक कौशल)		
• दूसरों के द्वारा अभिव्यक्त अनुभवों को जरूरत के अनुसार लिखना, जैसे- सार्वजनिक स्थानों (जैसे- चौराहों, नलो, बस अड्डे आदि) पर सुनी गई बातों को लिखना ।	कविताएँ :- • पाठ 1 – कुछ और भी दूँ • पाठ 5 सरद ऋतु आ गे कहानियाँ :- • पाठ 4 मौसी • पाठ 8 भिखारिन • पाठ 18 मितानी • अन्य विधा :- • पाठ 13 सुभाषचन्द्र बोस का पत्र • पाठ 23 राजीव गांधी	• शिक्षक बच्चों से कहें कि वे अपने घर, आस-पड़ोस और मोहल्ले में लोगों के काम करने के क्षेत्र, तरीकों और इससे जुड़े उन व्यक्तियों के अनुभवों पर जानकारी एकत्र करें। यह कार्य समूह में किया जा सकता है । इसके बाद बच्चे इस जानकारी को लिखकर पूरी कक्षा और संभव हो तो प्रार्थना सभा में प्रस्तुत करें । इस कार्य से जुड़े अपने अनुभवों को भी प्रस्तुत करें।

अभिव्यक्ति((स्वतंत्र एवं सृजनात्मक (आधारभूत भाषायी कौशल)		
• चित्र देखकर, कविता / कहानी सुनकर उसके अनुसार चित्र बना पाए , चित्रों को नाम दे पाएं। • स्वतंत्र चित्र बना पाए और उनके बारे में शब्द/वाक्य लिख पाएं। • मनपसंद विषय पर छोटी कविता / कहानी बना पाए और सुना पाएं। • अपनी कल्पना से कविता-कहानी को आगे बढ़ा पाएं।	कविताएँ :- • पाठ 1 – कुछ और भी दूँ • पाठ 5 सरद ऋतु आ गे • पाठ 14 भारत बन जाही नंदनवन कहानियाँ :- • पाठ 4 मौसी • पाठ 18 मितानी • पाठ 19 शहीद बकरी	• दी गई तीनों कविताओं से जुड़े चित्र बनाने का अभ्यास करवाना। • अपनी पसंद का कोई चित्र बनाकर उसके बारे में कुछ वाक्य लिखने का अभ्यास करवाना। • किसी पक्षी, फूल, मौसम आदि पर कविता लिखवाना। • कुछ और भी दूँ, सरद ऋतु आ गे और भारत बन जाही नंदनवन का चित्र बनाते हुए उनके बारे में कुछ वाक्य लिखने को कहा जा ए। • सरद ऋतु आ गे और मितानी दोनों पाठों के या बच्चों द्वारा बनाए गए चित्रों / शब्दों / थीम के आधार अपने शब्दों में कविता व कहानी का निर्माण किया जाए। • बच्चों को दो समूह में बांटकर एक समूह द्वारा लिखित अधूरी कविता, कहानी दूसरे समूह के बच्चों द्वारा पूरा कराया जाए।
अभिव्यक्ति((स्वतंत्र एवं सृजनात्मक (कक्षानुरूप आवश्यक कौशल)		
• अपने अनुभवों को अपनी भाषा शैली में लिखते हैं। • भित्ति पत्रिका/पत्रिका आदि के लिए तरह-तरह की सामग्री जुटाते हैं, लिखते हैं और उनका संपादन करते हैं।	कविताएँ :- • पाठ 1 – कुछ और भी दूँ • पाठ 5 सरद ऋतु आ गे • पाठ 14 भारत बन जाही नंदनवन कहानियाँ :- • पाठ 4 मौसी • पाठ 18 मितानी • पाठ 19 शहीद बकरी • अन्य विधा :- • पाठ 13 सुभाषचन्द्र बोस का पत्र • पाठ 23 राजीव गांधी	• अपनी भाषा में लिखने सम्बधी गतिविधियां जैसे शब्द खेल, अनौपचारिक पत्र, तुक बन्दियाँ, पहेलियाँ आदि। • बच्चों के दैनिक जीवन में घटित घटनाओं के संदर्भ में सरद ऋतु आ गे, भारत बन जाही नंदनवन, मौसी, राजीव गांधी, सुभाषचन्द्र बोस का पत्र के आधार पर कविता, कहानी, जीवनी, चरित्र, पत्र आदि स्वरूपों में लेखन के अवसर उपलब्ध करवाना। • कल्पनाशीलता और सृजनशीलता को विकसित करने वाली गतिविधियों जैसे :- अभिनय, कविता पाठ, सृजनात्मक लेखन,विभिन्न परिस्थितियों में संवाद आदि का आयोजन करना हो उनकी तैयारी से संबंधित स्क्रिप्ट लेखन और रिपोर्ट लेखन का अवसर हो। • पाठों के साथ किए गए सृजनात्मक लेखन के काम को अखबार पत्रिका के अनुरूप चार्ट आदि पर लिखने का अभ्यास करवाना, उनके लिए चित्र आदि बनाने का अभ्यास करवाना।

कक्षा 8

सीखने के प्रतिफल	पाठ्यपुस्तक के पाठ	सुझावात्मक कक्षा प्रक्रियाएँ
सुनकर समझना और सोचकर बोल पाना (आधारभूत भाषायी कौशल)		
• अपनी भाषा अथवा/ स्कूल की भाषा का इस्तेमाल करते हुए बातचीत कर पाए। जैसे- कविता, कहानी सुनाना, निजी अनुभव को साझा करना। • कविता कहानी सुनकर सरल प्रश्नों के उत्तर मौखिक रूप से दे पाएं • कविता / कहानी / अनुभव / विवरण हाव भाव से सुना पाए • कक्षा स्तर के निर्देशों को समझकर उसके अनुसार कार्य कर पायें • अपने अनुभवों को कुछ पंक्तियों में मौखिक रूप से व्यक्त कर पाएं। स्वतंत्र रूप से सवाल पूछ पाए	कविता पाठ-1 नई उषा हमारा छत्तीसगढ़ कहानी पाठ-2 एक नई शुरुआत पाठ - 3 पत्र, अब्राहम लिंकन का पत्र पाठ-7 डायरी, दीदी की डायरी पाठ – 10 निबंध, प्रवास	• "नई उषा" एवं "'हमारा छत्तीसगढ़" कविताओं को हाव-भाव तथा उतार-चढ़ाव के साथ गाया जाए। तत्पश्चात बच्चों को कविता स्वयं गाकर सुनाने को कहा जाए। कविता किस बारे में है, कविता में किसके बारे में क्या कहा जा रहा है, आदि प्रश्न बच्चों से किए जाए। (पाठ के पीछे दिए हुए मौखिक प्रश्न भी पूछे जा सकते हैं) • बच्चे इन कविताओं के बारे में अपने शब्दों में बताएँगे। • "एक नई शुरुआत" पाठ पढ़ाया जाये। पाठ पढ़ाने के दौरान शिक्षक पाठ के प्रश्नों को बीच-बीच में पाठ से जोड़ते हुए बच्चों से बातचीत करें। उत्तर पर चर्चा करें। बच्चों से प्रश्न करें कि क्या उन्होने अपने आसपास किसी बच्चे को देखा है जिस पर दंडात्मक कारवाई करने से उसके व्यवहार में सुधार होते देखा है? यदि किसी बच्चे को खूब सारा प्रोत्साहन और उत्तरदायित्व मिले तो उसके व्यवहार में किस प्रकार से बदलाव देखने को मिलेगा? दंडात्मक कारवाई और प्रोत्साहन जैसे दोनों स्थितियों में आपको कौन सी स्थिति सही लगती है? और क्यों? • प्रवास पाठ पाठ पढ़कर सुनाएँ इस पर बच्चों से बातचीत करें। बच्चों के साथ प्रवास पर जाने से जुड़े अन्य अपने अनुभवों पर लिखने को लेकर चर्चा करें। • बच्चों से बात करें तुम भी प्रवास करने कहीं जाते हो ? तुम प्रवास करने क्यों जाते हो आदि। • बच्चे समूह में बैठकर कविता/कहानी पर बातचीत करें, इनसे जुड़े अपने अनुभव साझा करें, और एक दूसरे के अनुभवों से जुड़े सवाल भी पूछे।

सुनकर समझना और सोचकर बोल पाना (कक्षानुरूप आवश्यक कौशल)		
अपने परिवेश में मौजूद लोक कथाओं और लोकगीतों के बारे में बताते हैं, सुनाते हैं, चर्चा करते हैं और उसकी उनकी सराहना करते हैं।	• पाठ-2 कहानी, एक नई शुरुआत • कहानी, अपन चीज के पीरा • पाठ – 3 पत्र, अब्राहम लिंकन का पत्र • पाठ – 10 निबंध, प्रवास	• शिक्षक दी गयी कहानियों पर बच्चों से चर्चा करें। चर्चा के दौरान प्रयास रहे कि कहानी के प्रत्येक पहलू, घटनाओं, पर बातचीत की जाए साथ ही बच्चों से उनके अनुभवों, विचारों को लिया जाये। • चर्चा के दौरान शिक्षक उन तमाम मुद्दों एवं परिस्थितियों की तरह भी बच्चों का ध्यान आकर्षित करें जो कहानी/टेक्स्ट में दर्शाई गयी है, उन पर बच्चों से प्रश्न करें। • प्रयास करें कि बच्चे वर्तमान की परिस्थितियों से जोड़ पाएं उनके अनुभवों को साझा कर पाएँ। • पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त शिक्षक बच्चों से उनके आस पास इस तरह की कहानियों को खोजने पर बात करें। जैसे उनके गाँव में किस तरह की कहानियाँ सुनाई जाती है? किस तरह के गीत गाये जाते हैं? बच्चों को ऐसे टास्क दें जिसमें वे अपने परिवेश में/आस पास लोगों से अलग अलग कहानियाँ गीत सुनकर उन्हें संकलित करें एवं कक्षा में सुनाएँ।
हिंदी भाषा में विभिन्न प्रकार की सामग्री (समाचार, पत्र-पत्रिका, इंटरनेट, ब्लॉग पर छपने वाली सामग्री आदि) को समझकर पढ़ते हैं और उसमें अपनी पसंद-नापसंद, टिप्पणी, राय, निष्कर्ष आदि को मौखिक/सांकेतिक भाषा में अभिव्यक्त करते हैं। इनपर चिंतन करते हुए समझ के लिए प्रश्न पूछते हैं।	• पाठ – 3 पत्र, अब्राहम लिंकन का पत्र • पाठ-7 डायरी, दीदी की डायरी	• बच्चों से पत्रों, समाचार-पत्र, पत्रिका आदि विषयों पर बातचीत करें। बच्चों से इनमें अंतर पता लगाने को कहें । • बच्चों को अपने मन से कुछ समाचार पत्र , पत्रिका, पत्र इकट्ठा करने को कहें।(शिक्षक इसमें बच्चों को मदद करें) • उन्हें समूह में सुनाने को कहें एवं पढे एवं सुने हुए के बारे में बताने के मौके दें। बच्चों से सवाल करें कि उन्हें किसी खास टेक्स्ट में क्या अच्छा लगा/क्या अच्छा नहीं लगा और क्यों? विविध विषयों पर अपने अनुभव साझा करने के अवसर प्रदान किए जाए तथा सवाल पूछने के अवसर दिए जाएँ।

पढ़कर समझना और समझ कर व्यक्त करना (आधारभूत भाषायी कौशल)		
• सभी अक्षरों और मात्राओं से शब्द बना और पढ़ पाएं • परिचित शब्दों को कविता / कहानी को शब्द कार्ड / श्यामपट्ट आदि में पहचानना एवं इन्हें प्रवाह से पढ़ पाना। • पुस्तकालय की सरल किताबों में से छोटी कहानी / कविता की किताब पढ़ पाएं (उदाहरण- बरखा श्रृंखला की चौथे स्तर तक की किताबें व एकलव्य या इकतारा की किताबें, साइकिल पत्रिका पढ़ पाएं।) • अपने स्तर के पाठ कविता /कहानी को पढ़ कर उसके मूल भाव को समझ पाए। और सरल शब्दों में मुख्य बिंदुओं को बता पाएं। • तरह तरह के पाठ पढ़कर उसके आधार पर प्रश्न पूछ पाएं और अपनी राय व उत्तर गढ़ पाएं। सहपाठियों से चर्चा कर पाए। कहानियों, कविताओं / रचनाओं की भाषा की बारीकियों (जैसे- शब्दों की पुनरावृत्ति, संज्ञा,सर्वनाम, विभिन्न विराम-चिन्हों का प्रयोग आदि) की पहचान और प्रयोग कर पाएं।	• पाठ-1 कविता, नई उषा • कविता, हमारा छत्तीसगढ़, • पाठ-2 कहानी, एक नई शुरुआत • व्यंग- जो मैं नहीं बन सका। • पाठ-12 कहानी, अपन चीज के पिरा • पाठ-14 आत्मकथा आतिथ्य • पाठ-15 कविता, मनुज को खोज निकालो	• दी गई कविताओं को पोस्टर पर लिखा जाए। उनमें आए शब्दों के शब्द कार्ड और वाक्य पट्टियाँ भी बनाई जाए। जो बच्चे पढ़ना सीखने के पहले स्तर पर हैं, उनके साथ इन पर काम किया जाएगा। • शब्द कार्डों पर लिखे शब्दों को सबके सामने ज़ोर से पढ़ने एवं पहचानने का प्रयास किया जाये। • कहानियों के शीर्षक पर बात हो, बच्चों को मिश्रित समूह में बिठाया जाए और कहानियों को समूह में पढ़ा जाए। जिन बच्चों को पढ़ना आता है वे कहानी को पढ़कर सुना सकते हैं और बाकी बच्चे अनुमान से पढ़ने की प्रक्रिया में शामिल हो सकते हैं। • जो बच्चे पढ़ना जानते हैं, वे मौन वाचन के द्वारा कहानियों को स्वयं पढ़कर कथानक के बारे में बात करेंगे। बाकी बच्चों के साथ शिक्षक स्वयं समूह में बैठकर वाक्य जोड़कर पढ़ना, अर्थ निकालना, नए शब्दों के अर्थ आगे-पीछे के सन्दर्भ को समझते हुए बूझना अदि गतिविधियाँ करवाते हुए उन्हें पढ़ने की ओर ले जाएँगे। • कविता/कहानी सुनाते हुए बच्चों का ध्यान संज्ञा, सर्वनाम विशेषण जैसे शब्दों की ओर आकर्षित करें। उन पर बात करें जैसे "हमारा छत्तीसगढ़" पाठ में छत्तीसगढ़ का जिक्र करते हुए कई ऐसे शब्दों का इस्तेमाल है जो छत्तीसगढ़ की विशेषता बताते हैं।

पढ़कर समझना और समझ कर व्यक्त करना (कक्षानुरूप आवश्यक कौशल)		
• किसी पाठ्यवस्तु को पढ़ने के दौरान समझने के लिए जरूरत पड़ने पर अपने किसी सहपाठी या शिक्षक की मदद लेकर उपयुक्त संदर्भ सामग्री, जैसे- शब्दकोश, मानचित्र,इंटरनेट या अन्य पुस्तकों की मदद लेते हैं। • कहानी, कविता आदि पढ़कर लेखन के विविध तरीकों और शैलियों को पहचानते हैं, जैसे- वर्णनात्मक, भावात्मक, प्रकृति चित्रण आदि । • किसी रचना को पढ़कर उसके सामाजिक मूल्यों पर चर्चा करते हैं। उसके कारण जानने की कोशिश करते हैं, जैसे- अपने आसपास रहने वाले परिवारों और उनके रहन-सहन पर सोचते हुए प्रश्न करते हैं।	• पाठ – 3 पत्र, अब्राहम लिंकन का पत्र • पाठ-1 कविता, नई उषा • कविता, हमारा छत्तीसगढ़, • पाठ-2 कहानी, एक नई शुरुआत • व्यंग- जो मैं नहीं बन सका। • पाठ-12 कहानी, अपन चीज के पिरा • पाठ-14 आत्मकथा आतिथ्य • पाठ-15 कविता, मनुज को खोज निकालो	• बच्चों को समाचारपत्र और रेडियो या टीवी पर प्रसारित होने वाले समाचारों को पढ़ते/देखते/सुनते हुए नोट्स लेने को कहा जाए। फिर बच्चों से इन नोट्स को एक-दूसरे से साझा करने और एक-दूसरे के नोट्स को पढ़ने को कहा जाए। इसके बाद इस पूरी प्रक्रिया का समेकन किया जाए। • "नई उषा" और "हमारा छत्तीसगढ़" कविताओं को पढ़ते हुए शिक्षक बच्चों से इन कविताओं की अलग-अलग लेखन शैलियों पर बात करते हैं। इस चर्चा में बच्चों के विचारों और ऐसी शैलियों में पढ़ी हुई उनकी अन्य कविताओं को भी शामिल किया जाता है। • यही कार्य विभिन्न विधाओं के गद्य पाठों (एक नई शुरुआत, अपन चीज के पीरा, आतिथ्य) को साथ में लेते हुए किया जा सकता है। • इस गतिविधि को आगे बढ़ाते हुए बच्चों को इन दोनों कविताओं की शैलियों के आधार पर कविता लेखन के कार्य दिए जा सकते हैं। • इन पाठों पर कार्य के दौरान इससे जुड़े सामाजिक / आर्थिक मुद्दों को उभारा जाए और उनसे जुड़े बच्चों के अपने अनुभवों को चर्चा की जाए। कक्षा में पाठ्यसामग्रियों को उपलब्ध करवाएं जो बच्चों के परिवेश और उनके सामाजिक/सांस्कृतिक/आर्थिक मुद्दों की दृष्टि से प्रासंगिक हों। • बच्चों के अपने परिवेश से जुड़े सामाजिक मुद्दों पर उन्हें प्रोजेक्ट कार्य दिए जाएँ। आकड़ों को इकट्ठा करने और कक्षा में इससे जुड़े अनुभवों और आकड़ों के विश्लेषण के साथ चर्चा आयोजित की जाए। • बच्चों को अलग-अलग भावों (समानुभूति/सहानुभूति, हास्य, व्यंग्य, आदि) से समृद्ध कविताओं को पढ़ने के अवसर प्रदान किए जाएँ। बच्चों को समूहों में बाँटकर उन्हें इन कविताओं से जुड़ी अपनी भावनाओं और प्रतिक्रियाओं को लिखने को कहा जाए।

		• बच्चों को विभिन्न विधाओं और विषयवस्तुओं से संबंधित टेक्स्ट को पढ़ने के अवसर दिए जाएँ। इसके लिए बच्चों को ऐसी पाठ्यसामग्री, जैसे- विज्ञान फंतासी कथाएं, कहानियाँ, नाटक, कविताएं, कार्टून्स, हाइकु, आदि उपलब्ध कराई जाए। • बच्चों को विभिन्न आयोजनों आदि से संबंधित रिपोर्ट्स प्रदान की जाए और फिर उन्हें इसे पढ़ने, इसके केन्द्रीय भाव को समझने, इसमें विचारों के प्रवाह को देखने, इसके विभिन्न अनुच्छेदों में लिखे उपविषयों को समझने आदि पर कार्य किया जाए।
लिखकर अभिव्यक्त कर पाना (आधारभूत भाषायी कौशल)		
• अपने मन की बातों को अपने तरीके से लिखने का प्रयास करते हैं। • सभी वर्णों और मात्राओं के परिचय के साथ लेखन का अभ्यास।	• पाठ – 3 पत्र, अब्राहम लिंकन का पत्र • पाठ-7 डायरी, दीदी की डायरी • पाठ-1 कविता, नई उषा • कविता, हमारा छत्तीसगढ़, • पाठ-2 कहानी, एक नई शुरुआत • पाठ-20 कहानी, मिनी महात्मा • पाठ- 21 कविता, सिखावन	• दिए गए पाठों के नवीन शब्दों की एक सूची बनाई जाए और उनका श्रुतलेख दिया जाए। सभी बच्चे श्रुतलेख लिखें और एक-दूसरे के शब्द जाँचे। (जो बच्चे ठीक से पढ़ना-लिखना जानते हैं, वे इसमें अधिक मदद कर सकेंगे। • पाठों से संबंधित या अन्य चित्र बच्चों को दिखाए जाए, उन चित्रों पर बात की जाए और सभी बच्चे उन चित्रों के बारे में कुछ वाक्य या अनुच्छेद लिखें। इसे पहले समूह गतिविधि और बाद में एकल गतिविधि के रूप में भी कराया जा सकता है।
लिखकर अभिव्यक्त कर पाना (कक्षानुरूप आवश्यक कौशल)		
• भाषा की बारीकियों/ व्यवस्था तथा नए शब्दों का प्रयोग करते हैं, जैसे- किसी कविता में प्रयुक्त शब्द विशेष, पदबंध का प्रयोग- आप बढ़ते हैं तो बढ़ते ही चले जाते हैं या जल-रेल जैसे प्रयोग।	• पाठ-1 कविता, नई उषा • कविता, हमारा छत्तीसगढ़, • पाठ-2 कहानी, एक नई शुरुआत • पाठ – 3 पत्र, अब्राहम लिंकन का पत्र • पाठ – 10 निबंध, प्रवास • पाठ-13, एकांकी, विजयबेला • पाठ- 17 निबंध, तृतीय लिंग का बोध	• शिक्षक बच्चों को संज्ञा, क्रिया, विशेषण से संबन्धित पदबंध के उदाहरण दें। कुछ शब्द देते हुए नए वाक्य बनाने को कहें। • 'हर दिन एक मुद्दा' शीर्षक के तहत स्कूल में कार्यक्रम आयोजित किया जाए। इन कार्यक्रमों में स्कूल से जुड़े किसी विषय पर चर्चा आयोजित की जाएगी। इस दौरान उस विषय पर सभी बच्चों को अपने विचार रखने को कहा जाए और बोर्ड पर उन्हें लिखने का अवसर दिया जाए।

• विभिन्न संवेदनशील मुद्दों/विषयों जैसे- जाति, धर्म, रंग, जेंडर, रीति-रिवाजों के बारे में लिखित रूप से तार्किक समझ अभिव्यक्त करते हैं। • अपने पाठक और लिखने के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए अपनी बात को प्रभावी तरीके से लिखते हैं।		• बच्चों से उनसे जुड़े मुद्दों पर चर्चा की जाए। उनको आने वाली समस्याओं पर बात-चीत की जाए और इनके उपायों पर भी सामूहिक चर्चा की जाए। इसके बाद इन चर्चाओं में उठाए गए मुद्दों (जेंडर, रीति-रिवाजों, धर्म, जाति, वर्ण, सामाजिक, आर्थिक, आदि) पर लेखन के अवसर दिए जाएँ। इन लेखों को कक्षा में प्रस्तुत किया जाए और इनपर तार्किक विमर्श आयोजित किए जाएँ। • बच्चों के अपने परिवेश से जुड़े सामाजिक मुद्दों पर उन्हें प्रोजेक्ट कार्य दिए जाएँ। उन्हें इन विषयों से संबंधित आकड़ों को इकट्ठा करने और तत्पश्चात कक्षा में इससे जुड़े अनुभवों और आकड़ों के विश्लेषण के साथ चर्चा आयोजित की जाए। • पाठ पर कार्य करने के दौरान बच्चों से पाठ के संबंध में अपने विचार लिखने को कहें। उन्हें कोई पाठ कैसा लगा? उस पाठ में क्या बताया गया है आदि।
• विभिन्न अवसरों/संदर्भों में कही जा रही दूसरों की बातों को अपने ढंग से लिखते हैं, जैसे- स्कूल के किसी कार्यक्रम की रिपोर्ट बनाना या फिर अपने गांव के मेले के दुकानदारों से बातचीत।		• बच्चों को समाचारपत्र और रेडियो या टीवी पर प्रसारित होने वाले समाचारों को पढ़ते/देखते/सुनते हुए नोट्स लेने को कहा जाए। फिर बच्चों से इन नोट्स को एक-दूसरे से साझा करने और एक-दूसरे के नोट्स को पढ़ने को कहा जाए। इसके बाद इस पूरी प्रक्रिया का समेकन किया जाए। • शिक्षक बच्चों से कहें कि वे अपने घर, आस-पड़ोस और मोहल्ले में लोगों के काम करने के क्षेत्र, तरीकों और इससे जुड़े उन व्यक्तियों के अनुभवों पर जानकारी एकत्र करें। यह कार्य समूह में किया जा सकता है। इसके बाद बच्चे इस जानकारी को लिखकर पूरी कक्षा और संभव हो तो प्रार्थना सभा में प्रस्तुत करें। इस कार्य से जुड़े अपने अनुभवों को भी प्रस्तुत कर पाएं।

अभिव्यक्ति (स्वतंत्र एवं सृजनात्मक अभिव्यक्ति) (आधारभूत भाषायी कौशल)		
• चित्र देखकर, कविता / कहानी सुनकर उसके अनुसार चित्र बना पाए , चित्रों को नाम दे पाए। • स्वतंत्र चित्र बना पाए और उनके बारे में शब्द/वाक्य लिख पाए। • मनपसंद विषय पर छोटी कविता / कहानी बना पाए और सुना पाए।	• चित्र देखकर, कविता / कहानी सुनकर उसके अनुसार चित्र बना पाए , चित्रों को नाम दे पाए। • स्वतंत्र चित्र बना पाए और उनके बारे में शब्द/वाक्य लिख पाए। • मनपसंद विषय पर छोटी कविता / कहानी बना पाए और सुना पाए।	• दी गई तीनों कविताओं से जुड़े चित्र बनाने का अभ्यास करवाना • अपनी पसंद का कोई चित्र बनाकर उसके बारे में कुछ वाक्य लिखने का अभ्यास करवाना • किसी पक्षी, फूल, मौसम आदि पर कविता लिखवाना • दादी माँ, बाजार, खेल के मैदान, कठपुतली और मिठाईवाले का चित्र बनाते हुए उनके बारे में कुछ वाक्य लिखने को कहा जाए। • पाठों के साथ किए गए सृजनात्मक लेखन के काम को अखबार पत्रिका के अनुरूप चार्ट आदि पर लिखने का अभ्यास करवाना, उनके लिए चित्र आदि बनाने का अभ्यास करवाना
अभिव्यक्ति (स्वतंत्र एवं सृजनात्मक अभिव्यक्ति) – (कक्षानुरूप आवश्यक कौशल)		
• पढ़कर अपरिचित परिस्थितियों और घटनाओं की कल्पना करते हैं और उन पर अपने मन में बनने वाली छवियों और विचारों के बारे में लिखित या ब्रेल भाषा में अभिव्यक्ति करते हैं। • भाषा की बारीकियों/व्यव स्था का लिखित प्रयोग करते हैं, जैसे- कविता के शब्दों को बदलकर अर्थ और लय को समझना। • अपने अनुभवों को अपनी भाषा शैली में लिखते हैं	• पाठ-1 कविता, नई उषा • कविता, हमारा छत्तीसगढ़ • पाठ – 3 पत्र, अब्राहम लिंकन का पत्र • पाठ-7 डायरी, दीदी की डायरी • पाठ – 10 निबंध, प्रवास • पाठ-15 कविता, मनुज को खोज निकालो	• बच्चों को पुस्तकालय की किताबों का इस्तेमाल करते हुए अलग अलग कविताओं को पढ़ने के अनुभव दें। बच्चों को उसे लय में सुनाने को कहें। • कविता के उतार चढ़ाव की ओर बच्चों का ध्यान आकर्षित करें। • कविताओं/टेक्स्ट में आ रहे विभिन्न शब्दों पर चर्चा करें। • जैसे उन शब्दों के स्थान पर क्या कोई और शब्द आ सकता है ? यदि हाँ तो कौन सा? क्या इससे अर्थ बदलेगा? या नहीं? • आदि प्रश्न करते हुए बच्चों को किसी टेक्स्ट पर स्वयं से इस तरह के प्रयोग करने को दें। • शिक्षक बच्चों के परिवार, अलग अलग घटनाओं, समाज के अनुभवों पर बात करें, और अपनी भाषा में लिखने को कहें। • बच्चों को अपने परिवेश की शब्दावली इस्तेमाल करने की छूट हो।

परिशिष्ट-2
अवधारणा, समझ और कौशल क्या हैं? ये कैसे विकसित होते हैं?

शिक्षा का अर्थ

शिक्षा मूलतः सीखने-सीखाने की प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया बचपन से ही शुरू हो जाती है। बच्चे माता-पिता के साथ परिवार में रहते हुए सुनकर, देखकर अनुकरण करते हुए सीखते रहते हैं।समय-समय पर बच्चों को निर्देश मिलते रहते हैं, जिनके अनुसार उनसे कार्य करने की अपेक्षा की जाती है। उदाहरणस्वरूप बच्चों से कहा जाता है कि -

- ज़मीन पर गिरी चीजों को नहीं खाना चाहिए।
- सीधे हाथ से खाना खाना चाहिए।
- चप्पल सही तरीके से पहननी चाहिए।
- नाक, कान में उँगली नहीं डालनी चाहिए।
- मिट्टी नहीं खानी चाहिए।
- ठंड से बचने के लिए कान को कपड़े से बाँधना चाहिए।
- घर की चीजों को व्यवस्थित रखना चाहिए।

एक अन्य प्रकार की शिक्षा बच्चों को दी जाती है कि -

- जब घर में कोई व्यक्ति आये तो उसे अभिवादन करना चाहिए।
- बड़ों के सामने ऊंची आवाज में बाते नहीं करनी चाहिए।
- बड़ों के सामने ज़िद नहीं करनी चाहिए।
- दूसरे के घर में किसी चीज को हाथ नहीं लगाना चाहिए।
- बड़ों से विनम्रता पूर्वक बातें करना चाहिए।

एक तीसरे तरह की शिक्षा बच्चों को खेल खेलने संबंधी, जिसमें दौड़ना, कूदना, तैरना, गिल्ली डंडा खेलना, गेंद से खेलना कबड्डी खेलना आदि की भी दी जाती है। इसी तरह के अनेक क्रियाकलाप हैं जिनको बच्चे परिवार में रहकर अथवा बच्चों के साथ रहकर सीखते रहते हैं।

अब मान लीजिए कि माता-पिता या शिक्षक बच्चों से कहते हैं कि बाहर जाकर खेलो, एक गिलास पानी ले आओ, कमरे में झाड़ू लगाओ आदि। इन क्रियाकलापों में बच्चे अपने पूर्व ज्ञान के आधार पर गतिविधियाँ करते हैं।

जब बच्चा शाला जाना शुरू करता है तब शिक्षक भी उसे गीत- कहानियां सुनाते हैं, सुनते हैं, खेल खिलाते हैं, गिनना, जोड़ना सिखाते हैं, व्यवहारिक ज्ञान देते हैं। नैतिक मूल्यों की बात करते हैं, अवलोकन करना, वस्तुओं को एकत्र करना, वर्गीकरण करना, किसी निष्कर्ष तक पहुँचना आदि के बारे में बतलाते हैं।

शाला में ये सब गतिविधियाँ विशिष्ट उद्देश्यों से की जाती हैं जिनमें संस्कार ज्ञान के साथ-साथ समझ की –

- व्यापकता होती है।
- व्यवहारिकता होती है।
- नैतिकता होती है।

- समाजोपयोगी शिक्षा होती है।
- बच्चों के मानसिक, बौद्धिक, शारीरिक विकास की बात होती है तथा
- किसी लक्ष्य तक पहुँचने की बात होती है।

ऐसी गतिविधियाँ जिनसे उद्देश्यपूर्ण सीखना-सिखाना हो सके उन्हें हम शिक्षा की गतिविधियाँ कहेंगे।

प्रारंभिक शिक्षा के उददेश्य–

प्रत्येक बच्चे में कुछ गुण व कौशल जन्म से होते हैं। कालान्तर में देखकर सुनकर,अनुकरण करके चिन्तन व मनन करके अन्य गुण, कौशल व दक्षतायें विकसित होती रहती है। शिक्षा द्वारा वांछित गुणों, कौशलों तथा दक्षताओं को सही दिशा में विकसित किया जा सकता है। प्रारंभिक शिक्षा के संदर्भ में बच्चे के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, नैतिक तथा सामाजिक पक्ष को अधिक विकसित करने की आवश्यकता होती है। शिक्षा को किसी न किसी रूप में उत्पादकता तथा हस्तकौशल से भी जुड़ा होना चाहिए। जिससे शिक्षा से बच्चे के सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास की बात सार्थक हो सके। प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं से चर्चा करके प्रारंभिक शिक्षा के उद्देश्य निर्धारित करें। प्रशिक्षक प्रश्न रख सकते हैं कि-

1. माता-पिता बच्चों को शाला क्यों भेजना चाहते हैं?
2. शारीरिक विकास के लिए शिक्षा किस प्रकार की होनी चाहिए ?
3. मानसिक, बौद्धिक व नैतिक विकास के संदर्भ में शिक्षा के क्या उद्देश्य हैं?
4. आप बच्चों को क्यों पढ़ाना चाहते हैं?
5. सामाजिक विकास के संदर्भ में शिक्षा किस प्रकार की हो?
6. उत्पादकता तथा कार्यान्मुखी कौशल से संबंधित शिक्षा किस प्रकार की हो ?
7. बच्चे स्वयं सीखने एवं सीखी हुई सामाग्री के उपयोग के लिए तत्पर हों?
8. बच्चे आने वाली परिस्थिति के लिए स्वयं को तैयार कर पा रहे हों?

चर्चा करने के उपरान्त निष्कर्ष निकाला कि प्रारंभिक स्तर पर शिक्षा के उद्देश्य निम्नलिखित हो सकते हैं-

- पढ़ने-लिखने की क्षमताओं का विकास। मूलभूत गणितीय संक्रियाओं को करने की क्षमताओं का विकास।
- अपने विचारों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने की क्षमता का विकास।
- अपने आप सतत रूप से सीखने की क्षमता विकसित करना।
- सीखने की कला का विकास।
- मानवीय मूल्यों का विकास।
- समूह में कार्य करने एवं एक दूसरे का सहयोग करने की क्षमता का विकास।
- मानवीय संवेदनाओं का विकास।
- मानवीय एवं भौतिक जगत की सुसंगत का विकास।
- स्व निर्णय लेने की क्षमता का विकास।
- स्वच्छ एवं स्वस्थ जीवन जीने की कला का विकास।
- दैनिक जीवन के कार्यों को कुशलता पूर्वक करने की क्षमताओं का विकास।
- परिवेश में उपलब्ध मानवीय व प्राकृतिक संसाधनों की उपयोगिता समझने की क्षमता का विकास।

ऊपर निकाले गए प्रारंभिक शिक्षा के उद्देश्यों से प्रारंभिक शिक्षा में "प्राथमिक" शब्द का मूल भाव कुछ प्रारम्भिक तैयारी मात्र नहीं रह जाता है अपितु यह भाव रेखांकित होता है कि वे आधारभूत काम करना बच्चों में विभिन्न क्षमताओं/दक्षताओं/ कौशलों के विकास से एक विस्तृत आधारभूमि तैयार हो जिसमें बालक बाद में जिस क्षेत्र में अपना विकास करना चाहें, उस क्षेत्र से संबंधित मूलभूत क्षमक्षाएँ, दक्षताएँ कौशल उसके पास हो। अर्थात प्राथमिक का अर्थ प्रारम्भिक न होकर आधारभूत हो जाता है।

समझ कैसे बनती है ?

हम जिस जगत में विचरण करते हैं उसका पता हमें इन्द्रियों की कार्य विधि से चलता है। बच्चा जैसे-जैसे बड़ा होता जाता है वह देखकर सुनकर सूंघकर, चखकर, स्पर्शकर, हाथों तथा पैरों को उपयोग में लाते हुए विभिन्न प्रकार की क्रिया एवं कार्य करना शुरू कर देता है। बच्चे द्वारा की गई किया या कार्य ठीक हो सकता है, उचित या अनुचित हो सकता है। कालान्तर में बच्चा उचित अनुचित उपयुक्त अनुपयुक्त सही या गलत में भेद करने लगता है।

जब बच्चे में भेद करना आ जाता है तो हम कहते हैं कि उसमें समझ विकसित होने लगी है।

उदा:- एक बच्चा ज़मीन पर गिरी हुई चीज को खा लेता है, लेकिन दूसरा बच्चा ज़मीन पर गिरी हुई चीज को फेंक देता है तथा मेज पर रखी हुई चीज को खा लेता है तो हम कह सकते हैं कि पहले बच्चे में खाने योग्य व न खाने योग्य वस्तुओं में भेद करने की समझ विकसित नहीं हुई है जबकि दूसरे बच्चे में यह समझ विकसित हो गई है।

समझ का विकास निरन्तर पढ़ने-लिखने, स्वयं के चिन्तन करने दूसरे के विचारों को सुनने समस्या का विश्लेषण करने, विचारों का संश्लेषण करने, तार्किक ढंग से अपने विचारों को प्रस्तुत करने. कार्य कारण संबंध ढूंढने, चिन्तन प्रक्रिया में पूरे शोधन करने, लीक से हटकर चिन्तन करने."परीक्षा पूर्वानुमान लगाने, आत्मावलोकन व आत्मपरीक्षण से होता है। समझ के विकास के लिए यह भी आवश्यक है कि विचारों में सुस्पष्टता हो, उनमें सुसंगतता हो अर्थात आपस में विरोधाभास न हो।

प्रशिक्षण में, समझ के स्वरूप व सत्यापन विधि हेतु यहां कुछ गतिविधियाँ सुझायी जा रही है। इनमें से किसी भी एक पर चर्चा करके समूह में समझ बनाने का प्रयास किया जा सकता है।

(1) वस्तु के बारे में प्रश्न उठाना

सभी सहभागियों को गोल घेरे में बिठा दें। फिर गोले के बीच में एक टेबल रख दें। तत्पश्चात सहभागियों को एक-एक पन्ना दे दें। सहभागियों को टेबल को देखने के लिए कहें। इसके लिए 1-2 मिनट का समय दिया जा सकता है। फिर सभी सहभागियों को उस टेबल पर अधिक से अधिक प्रश्न बनाने के लिए कह (प्रश्न बनाने का काम उप समूहों में भी किया जा सकता है) प्रशिक्षक पहले से ही टेबल पर कुछ इस प्रकार के प्रश्न बनाकर ले जायें।

1. इस टेबल का क्षेत्रफल कितना है?
2. यह किस पदार्थ की बनी है? तथा उस पदार्थ के क्या क्या गुणधर्म है?
3. इसको किसने बनाया है ?
4. टेबल के लिए लकड़ी कहाँ- कहाँ मिलती है ?
5. इस प्रकार की टेबल कब से बनने लगी हैं?
6. यह सुन्दर है या असुन्दर है ?
7. क्या इस प्रकार की टेबल पर बैठने का अधिकार केवल बड़े लोगों को ही है ?

प्रशिक्षुओं के प्रश्नों को श्याम पट्ट पर समेकित कर लें। फिर सभी लोगों को (या उप समूहों को) उन प्रश्नों के उत्तर अपने अवलोकन के आधार पर देने के लिए कहें। सहभागियों के उत्तर बिना टेबिल की नाप जोख किए ही देने है। प्रश्नों के उत्तरों को भी श्याम पट्ट पर या चार्ट शीट पर समेकित कर लें। समेकित करते समय प्रश्न का उत्तर सही या गलत इस पर भी चर्चा करते जाएं।

(2) प्रशिक्षक के द्वारा श्याम-पट्ट पर कुछ कथन लिख दिये जाएं जो इस प्रकार के हो सकते हैं:

1. 53736+1794 = 564549
2. हवा में भार होता है।
3. रेगिस्तान में रातें ठंडी होती हैं।
4. भारतीय समाज में दहेज लेना-देना अच्छी प्रथा है।
5. गुलाब का फूल कमल के फूल से ज्यादा सुन्दर है।
6. चोरी करना अच्छी बात नहीं है।

1 क्या ऊपर दिये गए कथन सही है ? उत्तर हाँ या नहीं में हों।

2 इन कथनों को समझने के लिए समझ का कौन सा स्वरूप काम में लिया गया है? उसका नाम लिखें।

3 इन कथनों के सत्य-असत्य की जाँच के लिए कौन-सी सत्यापन विधि अपनाना आवश्यक है? लिखें।

4 शिक्षक एक ईंट मेज पर रख दे तथा प्रशिक्षणार्थियों से पूछे कि ईंट को हम किस-किस प्रकार उपयोग में ला सकते हैं।

5 सभी प्रशिक्षणार्थी अपनी-अपनी ईंट के उपयोग को लिखें।

इस काम के लिए 10-15 मिनट का समय दिया जा सकता है। यह कार्य समूहों में किया जा सकता है। प्रत्येक समूह द्वारा लिखे गए उत्तरों को समूह में सुनकर उस पर चर्चा की जा सकती है।

सृजनात्मकता

कुछ बच्चे बहुत ही विलक्षण प्रतिभा के हुआ करते हैं। उनके सोचने का ढंग बातचीत करने का तरीका, विचारों की अभिव्यक्ति कार्य करने की शैली अन्य बच्चों से भिन्न होती है, अन्य बच्चों से परिष्कृत होती है। बौद्धिक प्रतिभा में से ये बच्चे अपनी सम आयु के बच्चों से एक या दो साल बड़े होते हैं। समुचित अवसर मिलने पर ये बच्चे आगे चलकर चिंतक, विचारक, साहित्यकार, वैज्ञानिक, गणितज्ञ, अर्थशास्त्री, शिक्षाविद, डॉक्टर, इंजिनियर, प्रशासनिक अधिकारी, न्यायविद आदि बना करते हैं।

प्रतिभा एक गुण है अथवा गुणों का समूह है। इन गुणों को धारण करने वाला व्यक्ति प्रतिभाशाली कहा जाता है। प्रतिभा से ही मिलता-जुलता एक गुण सृजनात्मकता है। सृजनात्मकता आविष्कारक, अन्वेषक, लेखक या वैज्ञानिक जैसे विशिष्ट व्यक्तियों तक ही सीमित नहीं है अपितु सामान्य व्यक्ति जैसे कुम्हार, बढ़ई, दर्जी, गायक, चित्रकार, किसान, कारखाने में कार्य करने वाला, शिक्षक या किसी अन्य व्यवसाय में लगे व्यक्ति में भी हो सकती है, बशर्ते उस व्यक्ति की -

1. सोचने, विचारने चिन्तन करने की प्रक्रिया में मौलिकता हो।
2. काम करने का तरीका औरों से भिन्न हो।
3. कार्य करने के लिए अपनाई जाने वाली प्रक्रिया में नवीनता हो।

4. उसके द्वारा निर्मित वस्तु सुन्दर हो, आकर्षक हो, मजबूत हो, उपयोगी हो, अलौकिक हो, दूसरी बनी हुई वस्तुओं से बिलकुल ही भिन्न हो, अद्वितीय हो या मौलिक हो।

सृजनात्मकता के स्तर

सृजनात्मकता के स्तर में अंतर हो सकता है। एक महान वैज्ञानिक जिस स्तर पर कार्य करता है वही स्तर एक फर्नीचर बनाने वाले व्यक्ति का नहीं हो सकता, जो आकर्षक, टिकाऊ व आरामदायक व अधिक उपयोगी फर्नीचर बनाता हो। एक चित्रकार द्वारा अपनी कल्पना के आधार पर एक अद्वितीय चित्र बनाने में सृजनात्मकता हो सकती है पर उस सृजनात्मकता का स्तर एक वैज्ञानिक द्वारा टी.वी.अथवा कम्प्यूटर बनाने के सृजनात्मक स्तर से भिन्न होगा।

प्रत्येक सृजनशील कार्य में

1. सीमाओं को आगे बढ़ाया जाता है।
2. सीमाओं को तोड़ा जाता है।
3. अविष्कार किया जाता है जिसमें विचारों या वस्तुओं को इस प्रकार मिलाया जाता है कि नई रचना अनूठी हो मौलिक हो तथा उपयोगी हो।
४. कलात्मकता का समन्वय होता है।
5. अनायास मौलिक अभिव्यक्ति होती है।
6. नवाचारी विविधता होती है (सीमाओं को आगे बढ़ाने के समान है)
7. उदगामी मौलिकता होती है। (सीमाओं को तोड़ने के समान है)

प्रारम्भिक स्तर पर सृजनात्मकता

प्राथमिक स्तर पर बच्चों में भाषा, गणित, पर्यावरण, कला व शारीरिक विकास के क्षेत्रों को चुनकर तथा अपनी शिक्षण प्रक्रियाओं में बदलाव लाकर सृजनात्मकता को विकसित किया जा सकता है। इसके लिए कुछ क्रिया कलाप नीचे दिये गए हैं-

चित्रकला

- कल्पना के आधार पर चित्र बनाना जिसमें भूत, भविष्य या वर्तमान की कल्पना की जा सके।
- किसी देखी या सुनी हुई घटना के आधार पर चित्रांकन करना।
- कार्टून बनाना।
- हाथी और मगर का मिला जुला चित्र बनाना या इसी तरह अन्य जानवरों के या वस्तुओं के मिले-जुले चित्र बनाना।
- चित्रों को विभिन्न रंगों से सुसज्जित करना।

मोम-मिट्टी के साथ कार्य

- मिट्टी, मोम से मौलिक आकृतियां बनाना। इन आकृतियों में कुछ न कुछ विविधता, विचित्रता अवश्य होनी चाहिए। उदाहरण स्वरूप पेट बहुत बड़ा हो सकता है, चोंच बहुत छोटी हो सकती है, गर्दन बहुत बड़ी हो सकती है।

चिन्तन प्रक्रिया

मौलिक चिन्तन में विचारों की विविधता, विचारों में प्रवाह, विचारों में जटिलता तथा विचारों में विरोधाभास है। (उदाहरण स्वरूप श्रम करने से गरीबी दूर होती है लेकिन श्रमिक गरीब होता है)।

डाइवरजेंट थिंकिंग

- विभिन्न दिशाओं में सोचना तथा विभिन्न संभावित हलों को खोजना, उदाहरण के लिए 4X3 = ? इस प्रश्न का केवल एक ही हल है लेकिन ऐसी दो संख्यायें बताओ जिनका गुणा 12 हो। इस प्रश्न के कई हल हो सकते हैं।
- एक ईंट के क्या-क्या उपयोग हो सकते हैं?
- एक छाता किस-किस काम आ सकता है ?
- यदि लोग चोरी करना बंद कर दें तो समाज पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

लेखन

किसी घटना का वर्णन करना तथा उससे भविष्य के लिए दिशा निर्देश निकालना, उदाहरण के लिए बस का चलते-चलते रूक जाना।

- ओला दृष्टि हो जाना।
- नाव का बह जाना।

कला-

संगीत में नई नई धुन बनाना नृत्य की विधाओं में मौलिकता लाना, नाटक को एक नये रूप में प्रस्तुत करना, वाद्य यंत्र से नवीन ध्वनि बनाना।

विज्ञान–

शैक्षणिक भ्रमण के समय वस्तुओं को एक विशेष संदर्भ में एकत्रित करना, समान गुणों के आधार पर वर्गीकरण करना, उनकी उपयोगिता खोजना।

- किसी घटना का बारीकी से अवलोकन करना उदाहरण के लिए तालाब में जहां पौधे उगे हुए हैं, वहाँ और क्या-क्या दिखलाई देता है।
- किसी प्रयोग को करना, उदाहरण के लिए एक बीज के उगने के लिए किन-किन परिस्थितियों की आवश्यकता होती है तथा बीज उगता कैसे है ?
- साइकिल में हवा भरने के लिए एक उपकरण का निर्माण करना।
- होली खेलने के लिए पिचकारी बनाना इत्यादि।

बच्चे कैसे सीखते हैं?

सीखना एक प्रक्रिया है। मानव मस्तिष्क में ज्ञानेन्द्रियों से प्राप्त सम्प्रेषणों को रिकार्ड करने की क्षमता जन्मजात रूप से विद्यमान होती है। इसका उपयोग वह निरन्तर करता रहता है। रिकार्ड किए गए अनुभवों के आधार पर वह नये अनुभवो को वर्गीकृत करता है एवं उनके सामान्यीकरण के आधार पर कुछ निष्कर्ष निकालता है। निष्कर्षों के आधार पर वह विभिन्न प्रकार के सम्बन्ध स्थापित करता है। इस तरह वह मानवीय एवं भौतिक जगत के प्रति अपनी समझ बनाता और उसे विकसित करता है।

मानवीय एवं भौतिक जगत के प्रति समझ के निर्माण एवं विकास की प्रक्रिया के दौरान बच्चे स्वयं भी उसी जगत का एक हिस्सा होते हैं। अतः सीखने की प्रक्रिया पर मुख्यतः दो बातें बहुत गहरा असर डालती है-

पहली बात, सीख रहे बच्चे की मानसिक एवं शारीरिक स्थिति का भी सीखने की प्रक्रिया पर असर पड़ता है। यदि सीखते समय वह किसी भय / दवाब में कार्य कर रहा है तो ठीक तरह से सीख पाना या सीखने की प्रक्रिया का हिस्सा हो पाना उसके लिए शायद संभव नहीं है। इसी तरह ऐसी बातें सीखना भी उनके लिए मुश्किल है जिनके लिए वह शारीरिक रूप से असमर्थ है ।

दूसरी बात, आसपास के परिवेश एवं परिस्थितियों का भी सीखने की प्रक्रिया पर असर पड़ता है। विभिन्न परिस्थितियों का सामना करने से सीखने की प्रक्रिया तीव्र होने की अधिक संभावना रहती है।

बच्चों के सीखने की प्रक्रिया के विषय पर बातचीत करने के लिए निम्न गतिविधि को आधार के रूप में काम में लिया जा सकता है-

6 साल का एवं 9 साल का बच्चा क्या जानता है ?

गतिविधि की शुरूआत, सभी प्रशिक्षुओं से सामान्य बातचीत से की जा सकती है। प्रशिक्षक सामान्य बातचीत में ही प्रशिक्षुओं से जानकारी लें कि वे जिस गाँव, मोहल्ले या कटुम्ब में रहते हैं। यहां पर विविध आयु समूह के बालक/बालिकाएं तो होंगे ही ? जब प्रशिक्षु इस प्रश्न का उत्तर दें तो बात आगे बढ़ाई जा सकती है। प्रशिक्षुओं से कहा जा सकता है कि आप गांव के इन बच्चों के बारे में सोचें, जो 6 साल और 9 साल के आयु समूह में आते हैं और वे क्या क्या काम करना जानते हैं या उन्हें क्या कुछ करना आता है ? ऐसा करने के बाद प्रशिक्षक एक दो उदाहरण देकर भी बात स्पष्ट कर सकता है। जैसे 6 साल के बच्चे को मोबाइल पता है, नहाना आता है या 9 साल के बच्चे को मोबाइल से download करना आता है, तैरना आता है आदि।

इसके पश्चात प्रशिक्षक प्रत्येक प्रशिक्षु को लिखने के लिए कागज़ उपलब्ध करवा दें। फिर स्पष्ट रूप से कहें कि एक कागज पर उन कामों की सूची बनानी है जो 6 साल का बच्चा करना जानता है। दूसरे कागज पर उन कामों की सूची बनानी है जो 9 साल का बच्चा करना जानता है। एक ओर खाली कागज पर उन कामों की सूची बनानी है जो प्रशिक्षु स्वयं करना जानता है।

इस काम को पूरा करने के लिए प्रशिक्षु को 10 मिनिट के बीच का समय दिया जा सकता है।जब ये काम पूरा हो जाएं तो सभी प्रशिक्षुओं से तीनों कागज एकत्र कर लें। इन कार्यो पर चर्चा करवाएं। जहां कहीं सूची में काम को दोहराना हो, उस बिंदु को न लिखें।

चर्चा में इन बातों पर प्रशिक्षुओं के विचार जाने जाएं कि सीखने के लिए किन-किन परिस्थितियों की आवश्यकता होती है? प्रशिक्षुओं द्वारा बताई गई परिस्थितियों को भी श्यामपट्ट पर लिखा जाए और पहले बनाई सूचियों में से कुछ उदाहरणों को लेकर उन परिस्थितियों पर बात की जाए।

इतना करने के पश्चात परिस्थितियों की बात को विद्यालय में सीखने के लिए आवश्यक परिस्थितियों से जोड़ा जाए और इस विषय पर प्रशिक्षुओं से चर्चा की जाए।

अवधारणा क्या है?

जब किसी विषय के पढ़ने-लिखने या समझने की बात होती है तो प्रायः कहा जाता है कि अमुख की अवधारणा स्पष्ट नहीं है या अवधारणा स्पष्ट नहीं हो पाई है या अमुख की अवधारणा स्पष्ट है। प्रश्न उठता है कि अवधारणा क्या है ? अवधारणा किसे कहते हैं ?

अवधारणा एवं समझ का घनिष्ठ संबंध है, समझ से अवधारणा स्पष्ट होती है और अवधारणा स्पष्ट होने से समझ विकसित होती है। अवधारणाओं का सीधा संबंध हमारी इन्द्रियों के उपयोग से है। अवधारणाओं का स्वरूप मूर्त-अमूर्त है अथवा क्रिया के रूप में हो सकता है।

नीचे लिखे उदाहरणों से स्पष्ट करने का प्रयास करते हैं।

अवधारणा – अमूर्त रूप में

एक बच्चा जब 23 साल का होता है तो वह अपने परिवार में बड़ों से किसी एक विशेष आकृति को गिलास की ध्वनि के रूप में सुनता है, गिलास को स्पर्श करता है व उसका उपयोग क्या है यानि कि गिलास का बच्चे को इन्द्रिय सम्प्रेषण मिलता है। एक ही प्रकार की आकृति अलग-अलग धातुओं की बनी होने के बावजूद

भी जब परिवार वाले उस विशेष आकृति को समानता-असमानता, उपयोग व बनावट के आधार पर अन्य आकृतियों (जैसे थाली, लोटा, कप, कटोरी इत्यादि) से अलग करते हैं और बच्चा गिलास के रूप में पहचानना शुरू कर देता है। यहां पर बच्चा आकृतियों में वर्गीकरण करके गिलास को अलग करता हुआ अमूर्तिकरण करता है और वह अन्य वस्तुओं से उसे अलग करके उसी विशेष आकृति को जो विभिन्न धातुओं की हो सकती है, गिलास के रूप में ही पहचानता है। वह समानता के आधार पर सामान्यीकृत करता है। इस पूरी प्रक्रिया में अब "गिलास" ध्वनि उसको बार-बार सुनाई देती है, उसका उपयोग करते हुए देखता है तब उसके दिमाग में उसी आकृति का प्रतिबिम्ब बनता है, "गिलास" की अवधारणा बनती है। गिलास ध्वनि सुनते ही उसकी आकृति का प्रतिबिम्ब बन जाना और उसके उपयोग, गुण आदि बातों से उसका संबंध जुड़ जाना। गिलास के बारे में जैसे-जैसे बच्चा अधिक जानता जाएगा वैसे-वैसे गिलास की अवधारणा स्पष्ट होती जाएगी।

अवधारणा अमूर्त रूप में

एक बच्चा नीबू चखता है। मां बतलाती है कि नीबू खट्टा होता है। बच्चे ने दूसरी बार नीबू चखा और कहा कि नीबू खट्टा है। कुछ समय बाद बच्चे ने कच्चा आम चखा स्वाद कुछ-कुछ नीबू जैसा था। बच्चे ने अबकी बार कच्ची इमली चखी इसका स्वाद भी नीबू व आम जैसा था। नीबू, आम, इमली, संतरा इनके स्वाद में एक समानता है! खट्टापन। जिह्वा इस स्वाद को पहचान गई है। नीबू कहने पर उसे खाना याद आ जाता है। खट्टे शब्द को वह नीबू, कच्चे आम, इमली व संतरे से जोड़ लेता है। जब यह स्थिति बनती है तब हम कहते हैं कि बच्चे को खट्टे की अवधारणा स्पष्ट हो गई है।

अवधारणा- क्रिया के रूप में

दो संख्याओं का जोड़ना यह एक अमूर्त क्रिया है। जोड़ने की क्रिया को पूर्ण करने के लिए ठोस वस्तुओं का सहारा लेते हैं। मान लीजिये 2 और 5 को जोड़ना है। जोड़ने के लिए पहले 2 वस्तुयें लेते हैं, फिर उसी तरह की 5 वस्तुयें लेते हैं, इन दोनों को मिला देते हैं। कुल वस्तुओं को पुनः गिनते हैं। प्राप्त संख्या दोनों संख्याओं का जोड़ होती है।

अब यदि बच्चा, 3 आम और 4 आम मिलाकर 7 आम होते हैं, 2 पेंसिल और 6 पेंसिल मिलाकर 8 पेंसिल होती हैं, 4 पुस्तकें और 5 पुस्तकें मिलाकर 9 पुस्तकें होती हैं और 5 तथा 7 का जोड़ 12 होता है तो हम कह सकते हैं कि बच्चे को जोड़ने की अवधारणा स्पष्ट हो गई है। यदि बच्चा 3 आम और 5 बकरी को 8 आम या 8 बकरी कहता है तो उसे अभी जोड़ की अवधारणा स्पष्ट नहीं है।

यह उल्लेख करना उचित होगा कि अवधारणा किसी वस्तु के बारे में हो सकती है जैसे पुस्तक, पेड़, आम, घर, कुर्सी किसी गुण के बारे में हो सकती है जैसे खट्टा-मीठा, हरा-पीला, छोटा-बड़ा, पास-दूर आदि। अवधारणा गीत, कविता, चुटकुले, मुहावरे,संज्ञा-सर्वनाम, विशेषण-क्रिया के बारे में हो सकती है। अवधारणा जोड़ने, घटाने, गुणा करने, भाग देने, वर्ग करने, वर्गमूल निकालने से संबंधित हो सकती है।

कौशल

कौशल शब्द का उपयोग यहां कर्म की सामर्थ्य के रूप में किया गया है। सामान्यतः कौशल से दक्षता एवं कर्म में चतुराई या पारंगतता का ज्ञान होता है। यहां कार्य की सामर्थ्य मात्र को कौशल कह रहे हैं। निःसंदेह पारंगतता का स्तर कौशलों के संदर्भ में महत्वपूर्ण है तथा यहां भी सामान्यतः कौशल प्राप्ति करने में संतोषजनक पारंगति को ही इंगित करेगी।

मानवीय कर्म के संपूर्ण क्षेत्र को दो भागों में बांटा जा सकता है। एक बौद्धिक दूसरा शारीरिक। बौद्धिक

में जगत के बारे में चिन्तन तथा उसकी अभिव्यक्ति, शारीरिक में वस्तु निर्माण या उसके रूप में परिवर्तन की।

जगत में परिवर्तनों को भी हम मुख्य दो श्रेणियों में बांट सकते हैं। एक वे कर्म जिनका उद्देश्य दूसरों के चिंतन एवं कर्म को प्रभावित करना होता है जैसे लेख लिखना, कागज पर चित्र / चिन्ह बनाना।

पहले वाले कर्म के कौशलों को हम समझ के क्षेत्र से देख सकते हैं तथा दूसरे वाले कर्म को रूप परिवर्तन के रूप में। कौशलों के विकास का सर्वाधिक महत्व है अर्थात हम कह सकते हैं कि कौशलों का अर्थ है कि विचार को वस्तु एवं कर्म में परिणत कर पाने की क्षमता ही मुख्य है, उनको हम निम्न वर्गों में बांट सकते हैं-

1. वांछित वस्तु की स्पष्ट कल्पना करना।
2. वस्तु के निर्माण के लिए उपयुक्त पदार्थ का चुनाव।
3. पदार्थ को मनचाहा रूप दे पाने की क्षमता।

पहली दो क्षमतायें आकार-प्रकार कल्पना एवं पदार्थों के गुण धर्मों की जानकारी से संबंधित है। तीसरी हाथों से काम कर पाने से संबंधित है। कौशलों के विकास के लिए मूलतः इन क्षमताओं के विकास पर बल देना होगा। यह तो स्पष्ट ही है कि समझ का विकास स्वतः ही कौशलों के विकास की बहुत सी शर्तें पूरी करता चलता है। यहां वस्तुओं पदार्थों के साथ सीधे अनुभव, हाथों से काम करना एवं श्रम के प्रति हमारी भावना विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो जाती है।

व्यक्तित्व विकास के लिए जो समस्त गुण आवश्यक हैं वे कौशलों के रूप में व्यवस्थित किए जा सकते हैं। कौशलों को वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में छोटे-छोटे अंशों में विभाजित किया गया है। जिनकी समग्रता उक्त कौशल को प्राप्त करने में सहायक है।

सीखने के प्रतिफल

बच्चे गतिविधि करते हुए जो सीखते हैं अपने सीखे हुए अवयव को किन्हीं अपरिचित अथवा आकस्मिक परिस्थिति में उपयोग कर पाते हैं। वे ही सीखने के प्रतिफल हैं। जब तक बच्चे सीखी हुई सामग्री का उपयोग नहीं करते उनके कौशल का विकास नहीं हो पाता ऐसे में बच्चों को अपनी सीखी हुई सामग्री के अधिकतम उपयोग हेतु परिस्थिति प्रदान करना शिक्षक का प्रमुख उद्देश्य हो।

यदि बच्चा किसी बात को सीख लेता है, उसकी अवधारणा व समझ स्पष्ट हो जाती है एवं वह बिना किसी सहायता के स्वयं ही उस बात को करने का कौशल प्राप्त कर लेता है, उदाहरण दे सकता है बारीकियों को समझ लेता है तो हम यह कह सकते हैं कि वह उस बात में दक्ष हो गया और उसने दक्षता प्राप्त कर ली।

किसी कौशल के अंतर्गत दक्षता प्राप्त करने के लिए बच्चे को बहुत सी गतिविधियाँ करनी होगी तथा यह सुनिश्चित करने के लिए कि बच्चे ने दक्षता प्राप्त कर ली है बच्चे का उस विषय वस्तु पर मूल्यांकन करना होगा। भाषा, गणित एवं पर्यावरण अध्ययन के लिए अधिगम क्षेत्र एवं दक्षतायें तथा मूल्यांकन का प्रारूप नीचे दिया गया है।

परिशिष्ट-3
ऊर्जा का संरक्षण

ऊर्जा प्रकृति द्वारा मनुष्य को दिया गया एक उपहार है किंतु यह भी सत्य है कि यह संसाधन सीमित है और इसके बिना मनुष्य के जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। वर्तमान समय में मनुष्य की निर्भरता इसके प्रति बढ़ती ही जा रही है। मानव जीवन को आरामदेह बनाने के लिए दिन प्रतिदिन नवीन उपकरणों की खोज और इनके प्रति मनुष्य की निर्भरता इसकी खपत को बहुत अधिक बढ़ाते जा रहे हैं। बढ़ते हुए वाहनों की संख्या ने पेट्रोल एवं डीजल की खपत को बहुत अधिक बढ़ा दिया है तथा बढ़ती हुई जनसंख्या के दबाव में भोजन पकाने के इन दिनों की खपत में भी बहुत ज्यादा वृद्धि की है। साथ ही साथ सुविधा प्रदान करने वाले विद्युत उपकरणों की होड़ में मनुष्य की विद्युत के प्रति निर्भरता और उसकी खपत को मात्र एक दशक में कई गुना ज्यादा बढ़ा दिया है। बढ़ती हुई खपत के साथ-साथ यह बात भी निश्चित है कि उर्जा का ये भंडार धीरे-धीरे कम होता जा रहा है। इन स्रोतों को बचाने के लिए हमें अपने व्यवहार को नियंत्रित करने की आवश्यकता है। ऊर्जा की बचत के लिए हमें संवेदनशील होना होगा क्योंकि उर्जा का संरक्षण हमारी अगली पीढ़ी के लिए हमारा उत्तरदायित्व है।

सौर ऊर्जा विद्युत संरक्षण का एक महत्वपूर्ण विकल्प-

सूर्य की ऊर्जा का उपयोग करना ऊर्जा के संरक्षण का एक बहुत बेहतर विकल्प है। इसके लिए हम सोलर प्लेट के माध्यम से बैटरी में सूर्य की ऊर्जा को परिवर्तित कर विद्युत ऊर्जा के रूप में एकत्रित कर सकते हैं एवं विद्युत के समस्त उपकरण जैसे पंखे ,लाइट ,पंप आदि पर उपयोग कर सकते हैं। यह ऊर्जा संरक्षण का सर्वोत्तम विकल्प है।

भोजन पकाने के लिए सोलर कुकर नामक यंत्र बनाए गए हैं, जिसके माध्यम से सूर्य की रोशनी की उपस्थिति में सौर ऊर्जा का उपयोग कर भोजन को आसानी से पकाया जा सकता है और एक बड़ी मात्रा में ऊर्जा का संरक्षण किया जा सकता है।

ठीक इसी तरह पवन चक्की के द्वारा वायु ऊर्जा को बैटरी के माध्यम से विद्युत ऊर्जा के रूप में एकत्रित कर उसका उपयोग भी किया जा सकता है। यह भी एक ऊर्जा संरक्षण का उत्तम विकल्प है।

ऊर्जा के संरक्षण के लिए क्या करें –

1. पंखे एवं लाइट को बंद करने की आदतों का विकास बच्चों में करना चाहिए।इस हेतु शिक्षकों को कक्षा के मॉनिटर को जागरूक करना चाहिए कि वह उपयोग के पश्चात पंखे एवं लाइट बंद करना सुनिश्चित करें। शिक्षकों को भी अपने व्यवहार से यह संदेश देना चाहिए कि वे ऊर्जा संरक्षण के प्रति संवेदनशील हैं। आवश्यकता के पश्चात कार्यालय में चलने वाले पंखे एवं लाइटों को उन्हें बंद करना चाहिए।
2. कंप्यूटर में कार्य पूरा होने के पश्चात उसे ऑफ कर दें। यदि फिर भी उसे चालू रखना आवश्यक है तो मॉनिटर को ऑफ करके सिर्फ कंप्यूटर को चालू रखें। इससे बिजली की बचत की जा सके।
3. साधारण बल्बों की जगह एल.ई.डी बल्ब का प्रयोग करें।
4. सूर्य के प्रकाश का हर संभव स्थान पर उपयोग करके, बिजली से जलने वाली लाइट का प्रयोग कम करें।

5. कूलर एवं पंखों में रेगुलेटर का प्रयोग करें।
6. धोने योग्य कपड़ों को एकत्र कर वाशिंग मशीन की पूरी क्षमता का उपयोग करते हुए कपड़े को धोना चाहिए।
7. वाशिंग मशीन में गर्मियों के दिन में ड्रायर का उपयोग नहीं करना चाहिए।
8. आयरन 1000 वाट विद्युतीय उपकरण है मात्र 1–2 कपड़े प्रेस करने के लिए इसका उपयोग नहीं करना चाहिए।
9. खाना पकाते समय चौड़ी सतह के बर्तनों का प्रयोग करना चाहिए।
10. खाना पकाने के पूर्व दाल एवं चावल को भिगो लेना चाहिए। इससे भी ईधन की बचत होती है।
11. खाना पकाते समय आवश्यकतानुसार पानी का प्रयोग करना चाहिए, अधिक पानी नहीं लेना चाहिए, छोटे चूल्हे का प्रयोग करना चाहिए। इससे कम ईंधन की खपत होती है।
12. फ्रिज को ठंडे स्थान पर रखना चाहिए एवं छोटे-छोटे कार्यो के लिए बार-बार नहीं खोलना चाहिए।

चलो अब हम बिजली बचाएं ,देश को आगे बढ़ाएं।।

परिशिष्ट-4
जल संरक्षण

भारत ही नहीं अपितु पूरी दुनिया में शुद्ध पेयजल की कमी एक बहुत बड़ी समस्या है। वर्तमान समय की सबसे बड़ी आवश्यकता जल का संरक्षण है। भू-जल जो कि मानव जीवन से जुड़ा हुआ एक विशेष पहलू एवं जल का सहज स्रोत है, उसमें भी लगातार गिरावट आती जा रही है। वर्षा जिसके माध्यम से भूमि के अंदर जल का संरक्षण होता है वह भी कंक्रीट के जंगलों और लगातार वर्षा की होने वाली कमी के कारण कम होता जा रहा है। आज आवश्यकता है कि हम वर्षा के जल को जितना अधिक से अधिक हो सके भूमिगत करके संरक्षित करें एवं छोटे छोटे नालों में बहने वाले जल को छोटी बांध परियोजना से रोके एवं घरों के निर्माण में वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम को बढ़ावा देकर जल स्रोत में वृद्धि करने के लिए आवश्यक कदम उठाएं।

हम विद्यालय स्तर पर छोटे-छोटे प्रयास कर सकते हैं जिससे हम अपने बच्चों को जल संरक्षण के प्रति सजग बना सकते हैं-

विद्यालय/ घर में किए जाने वाले प्रयास

- घर/विद्यालय की टंकी अगर ओवरफ्लो हो रही है तो हम इस बात का ध्यान रखें कि कितने समय में टंकी भर जाएंगी और समय से पहले ही पंप बंद कर दें।
- यदि किसी नल से पानी टपक रहा है तो उसे तुरंत ठीक करवाएँ।
- ग्लास में पीने के लिए उतना ही पानी ले जितनी हमें प्यास हो। व्यर्थ में पानी बर्बाद न करें।
- बर्तन धोने के बाद एवं सब्जियों को धोने के बाद उस पानी का प्रयोग हम पेड़ पौधों में कर सकते हैं।
- कार/बाइक आदि को कपड़े से साफ करें, पानी से साफ करके पानी की बर्बादी न करें।
- Rainwater Harvesting को हमें अनिवार्यता से अपनाना चाहिए एवं बच्चों को विज्ञान विषय के माध्यम से उसके महत्व को बताना चाहिए।
- कहीं भी पानी की बर्बादी न हो इसका विशेष ख्याल रखें।
- शौचालय में अनावश्यक पानी की बर्बादी ना करें।
- अधिक से अधिक वृक्षारोपण करें जिससे भू-जल का स्तर बढ़े।
- नदी, तालाब,कुँओं आदि के पानी को भी स्वच्छ रखें।
- कहीं भी यदि नल खुले हों तो उसे बंद करें।

भारत ही नहीं अपितु पूरी दुनिया में शुद्ध पेयजल की कमी एक बहुत बड़ी समस्या है। वर्तमान समय की सबसे बड़ी आवश्यकता जल का संरक्षण है भू-जल जो कि मानव जीवन से जुड़ा हुआ एक विशेष पहलू एवं जल का सहज स्रोत है, उसमें भी लगातार गिरावट आती जा रही है। वर्षा जिसके माध्यम से भूमि के अंदर जल का संरक्षण होता है वह भी कांक्रीट के जंगलों और लगातार वर्षा की होने वाली कमी के कारण कम होता जा रहा है। आज आवश्यकता है कि हम वर्षा के जल को जितना अधिक से अधिक हो सके भूमिगत करके संरक्षित करें एवं छोटे छोटे नालों में बहने वाले जल को छोटी बांध परियोजना से रोके एवं घरों के निर्माण में वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम को बढ़ावा देकर जल स्रोत में वृद्धि करने के लिए आवश्यक कदम उठाएं।

परिशिष्ट-5
पर्यावरण संरक्षण एवं सतत ग्रामीण विकास

सफाई सभी को पसंद है, यहां तक कि जानवर भी अपने स्थान को साफ करके बैठते हैं। लेकिन जब हम सार्वजनिक स्थानों पर जाते हैं तो हम यह भूल जाते हैं कि सार्वजनिक स्थानों को साफ रखना भी हमारी जिम्मेदारी है, हमें आदत बनानी होगी कि हमारा परिवेश साफ-सुथरा रहे। पर्यावरण में वायु, जल, भूमि, पेड़-पौधे, जीव-जंतु, मानव और उसकी गतिविधियों के परिणाम आदि सभी का समावेश होता है सभी के संरक्षण का दायित्व हमारा है और इस तरफ कदम उठाए जाना अत्यंत आवश्यक है, यदि हम विद्यालय स्तर पर प्रयास करें तो किचन गार्डन, हर्बल गार्डन आदि विद्यालय में बनाए जा सकते हैं।

- प्रत्येक बच्चे/ समूह/ कक्षा को एक-एक पेड़ की जिम्मेदारी दी जा सकती है।
- एस.एम.सी. एवं पंचायत सदस्यों द्वारा गांव/स्कूल में वृक्षारोपण करके उसकी सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु कदम उठाए जाने चाहिए।
- विद्यालय में जिनका भी जन्मदिवस हो (शिक्षक /विद्यार्थी) उनके द्वारा पौधारोपण होना चाहिए।
- बच्चों को पेड़ पौधों के संरक्षण व देखभाल के लिए लगातार प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
- शिक्षक को स्वयं बच्चों के लिए पर्यावरण संरक्षण के संदर्भ में प्रेरणा/ उदाहरण बनना चाहिए।
- हमारे प्रदेश में विद्यालय जून माह से शुरू होता है उस समय मानसून आ जाता है यदि हम चाहें तो प्रत्येक बच्चों से प्रवेश के समय ही पौधा लगवा सकते हैं, इससे बच्चों में विद्यालय एवं पौधों के प्रति लगाव बढ़ेगा कि हमें भी कुछ जिम्मेदारी दी गई है।
- पुरानी पुस्तकों का पुनः उपयोग भी पर्यावरण संरक्षण ही है।